‘गिलिगडु’ का अंग्रेजी अनुवाद और उसका भाषिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

‘Giligadu’ Ka Angrezi Anuvad Aur Uska Bhashik-Sanskritik Vishleshan

English Translation and Linguistic-Cultural Analysis of ‘Giligadu’

पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशक

प्रो. देवशंकर नवीन

शोधार्थी

दिव्या ज्योति

भारतीय भाषा केन्द्र

भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन केन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110067

2017

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
भारतीय भाषा केन्द्र
Centre of Indian Languages
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
School of Language, Literature & Culture Studies
नई दिल्ली–110067, भारत NEW DELHI-110067, INDIA

Dated: 18/07/2017

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this Ph.D. Thesis entitle **"'Giligadu' Ka Angrezi Anuvad aur Uska Bhashik-Sanskritik Vishleshan" "English Translation and Linguistic-Cultural Analysis of 'Giligadu"** by me is the original research work and has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/institution.

Divya Jyoti
(Research Scholar)

Prof. Deo Shankar Navin
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

Prof. Gobind Prasad
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

GRAM: JAYENU, Tel.: (91-011) 26741557, 26742676 Extn.: 4217, (D) 26704217; Telefax: (91-011) 26704217
Email: chair_cil@mail.jnu.ac.in, jnucil@gmail.com

आभार

व्यावहारिक तौर पर कोई भी शुभ कार्य बड़ों के आशीर्वाद एवं परिजनों के सहयोग से ही सम्पन्न होता है। प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने में यह आशीर्वाद और सहयोग मुझे पर्याप्त काम आया। इस क्रम में शोध निर्देशक प्रो. देवशंकर नवीन से मिले मार्गदर्शन के लिए मैं आभारी हूँ। उनके समर्थन, सहयोग और प्रेरणा के बिना यह शोधकार्य सम्पन्न नहीं होता।

इस शोध कार्य को पूरा करने में अपने माता-पिता एवं अन्य परिजनों, मित्रों, शुभचिन्तकों का भरपूर सहयोग मिला है। इनके अनासक्त सहयोग से जो प्रेरणा मिली, उसके लिए आभार शब्द छोटा प्रतीत होता है। इनके प्रति कृतज्ञ होना इनके अवदान का अपमान होगा। किन्तु मैं नतशिर हूँ। जीवन के हर काम में पग-पग के सहयोगी श्री अनुज के प्रति कृतज्ञ होना उनकी सदाशयता को तौलना होगा। उनके लिए मेरे पास धन्यवाद के शब्द नहीं हैं।

आकाशवाणी के पूर्व उपमहानिदेशक, श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने शोध का विषय एवं प्रारूप तय करने में मेरी सहायता की। इन्हीं के सौजन्य से प्रख्यात लेखिता श्रीमती चित्रा मुद्गल से साक्षात्कार सम्भव हो पाया। मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

चित्रा मुद्गल हिन्दी की प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। नवचेतना सम्पन्न समाज की उपलब्धियों एवं विसंगतियों को उन्होंने अपनी रचनाओं में विलक्षणता से

रेखांकित किया है। उनके चर्चित उपन्यास *'गिलिगडु'* के अनुवाद पर केन्द्रित इस शोध में निश्चय ही उनका प्रभूत सहयोग मिला। इस शोधकार्य में उन्होंने पर्याप्त रुचि ली और अपना स्नेहपूर्ण सहयोग दिया। उनसे बातचीत करते हुए उनके उपन्यास *'गिलिगडु'* के रचनात्मक सरोकार को जानने में सहायता मिली और मेरी शोध दृष्टि स्पष्ट हुई। इससे अनुवाद कार्य एवं कृति के विश्लेषण में भी सहायता मिली। मैं हृदय से उनकी आभारी हूँ।

इस प्रबन्ध को पूरा करने में जे. एन. यू. एवं साहित्य अकादेमी के पुस्तकालय का भरपूर उपयोग हुआ है। कृति के अनुवाद से विश्लेषण तक में, सन्दर्भ ग्रन्थों का उपयोग करने में दोनों पुस्तकालयों के अधिकारियों से अत्यधिक मदद मिली है। मैं इन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

एम. फिल. की पढ़ाई के समय से ही निरन्तर सहयोगशील गुरुवर डॉ. रणजीत साहा ने इस प्रबन्ध को सम्पन्न करने में अपना अक्षय स्नेह दिया है। उनके प्रति कृतज्ञ होना मैं अपना धर्म समझती हूँ।

भारतीय भाषा केन्द्र, जे. एन. यू. के सभी अध्यापकों ने बौद्धिक रूप से और सभी कार्यालयीय सदस्यों ने प्रशासनिक रूप से, शोध के दौरान जो सहयोग दिया, वह मेरे लिए सदैव स्मरणीय रहेगा। मैं इनके सद्भाव के लिए नतमस्तक हूँ। अन्त में मैं टंकक श्री सुधीर झा जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने समयानुसार इस शोध को आद्यन्त टंकित करने में मेरी सहायता की।

–दिव्या ज्योति

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
भूमिका	**001**
पहला अध्याय	**007**
हिन्दी उपन्यास 'गिलिगडु' का अंग्रेज़ी अनुवाद	**009**
दूसरा अध्याय	**151**
हिन्दी से अंग्रेज़ी अनुवाद के दौरान आनेवाली पाठाधारित समस्याएँ (उपन्यास के सन्दर्भ में)	**153**
तीसरा अध्याय	**179**
अनूदित उपन्यास का भाषिक विश्लेषण	**181**
चौथा अध्याय	**205**
अनूदित उपन्यास का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण	**207**
लेखिका का साक्षात्कार	**235**
पाँचवाँ अध्याय	**253**
उपसंहार	**255**
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	**275**

भूमिका

विश्व की प्रत्येक भाषा मानवीय चेतना और अभिव्यक्ति का अंश होते हुए भी एक स्वतंत्र भाषिक यथार्थ है। भाषा वस्तुतः एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ है, जिन्हें उस भाषा के प्रयोक्ताओं ने विकसित किया है। इस प्रकार भाषा संस्कृति की संवाहिका भी है और उसका उत्पादन भी। भाषा किसी समूह विशेष की विकास स्थिति का भी मापक होती है। अधिकांश आधुनिक भारतीय भाषाएँ विश्लेषणपरक हैं जबकि प्राचीन भाषाओं की प्रकृति संश्लिष्ट है। भाषा के विकास की शर्त यह भी है कि जो भाषा जितनी अधिक शक्तियों से सम्पन्न होगी, जितने उसके अर्थ स्तर, जितनी प्रयुक्तियाँ होगी, उसका प्रयोक्ता समान उतना ही उन्नत होगा।[1]

किसी भी भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार-विनियम के प्रयत्न से हुआ है तो अनुवाद का जन्म दो भाषा भाषी व्यक्तियों या समुदायों में

---

[1] कलवार, किशोरीलाल (डॉ.), हिन्दी अनुवाद परम्परा एक अनुशीलन पृ. 1

विचार-विनिमय संभव बनाने के लिए। इसका प्रारंभ कदाचित् ऐसे व्यक्तियों से हुआ होगा जो भाषा क्षेत्रों की सीमा पर रहने के कारण दो या अधिक भाषाओं के जानकार रहे होंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर उन विभिन्न भाषाओं के व्यक्तियों के बीच दुभाषिए का काम करते रहे होंगे। इस बात का भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि अनुवाद की प्राचीनतम परम्परा का प्रारम्भ भाषा के जन्म के कुछ समय बाद हो गया होगा।

अनुवादविदो ने अनुवाद शब्द के कई अर्थ प्रस्तुत किए गए हैं। 'बृहत् हिन्दी कोश'[1] में अनुवाद शब्द का अर्थ – फिर से कहना, व्याख्या या समर्थन रूप में पुनरुक्ति, समर्थन, जनश्रुति, विज्ञापन, भाषण का आरंभ, उलथा, भाषांतर आदि दिया गया है। अनुवाद को अर्थ एवं शैली का समन्वित तथा समतुल्य सम्प्रेषण ही गरिमा प्रदान करती है। जिस भी अनुवाद क्रिया में एक भी तत्त्व की कमी होती है, वहाँ अनुवाद अधूरा रह जाता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का केन्द्र चित्रा मुदगल रचित पुस्तक *'गिलिगडु'* है। इस औपन्यासिक कृति में वृद्ध लोगों की प्रमुख समस्याओं को उजागर किया गया है। जैसा कि चित्रा जी के लेखन के बारे में प्रचलित है Writer without a pause pen for a cause. चित्रा मुदगल एक जलसेना अधिकारी की बेटी थी। वह बचपन से ही सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करती रही है। उनके इस विद्रोही स्वभाव के कारण ही उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ठाकुर जाति में

---

[1] प्रसाद, कालिका, बृहत् हिन्दी कोश, पृ. 55

पैदा होने के कारण किस प्रकार महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता था तथा किस प्रकार नीची जाति वालों से भेदभाव किया जाता था। वह ऐसी विषम परिस्थितियों की गवाह रही हैं और यही कारण है कि स्त्री विमर्श तथा जाति प्रथा के ख़िलाफ़ उनका स्वर मुखर हो जाता है। वह कई NGO तथा सामाजिक कार्यों से जुड़ी रही हैं।

हिन्दी की वरिष्ठ कथा लेखिका चित्रा मुद्गल भारतीय भाषाओं की लेखिकाओं में एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। अब तक उनके तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास तीन बाल उपन्यास, चार बालकथा संग्रह, पाँच सम्पादित पुस्तके और दो वैचारिक संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अनुवाद के माध्यम से उनका रचना संसार अन्य भाषाभाषी पाठकों के समक्ष भी पहुँचा है। उपन्यास, कहानी के अलावा आलोचना एवं वैचारिक लेखन में भी उनकी सृजनात्मक प्रतिभा की झलक मिल जाती है।

उनका जन्म 10 दिसम्बर 1944 को चेन्नई में हुआ तथा स्नातक तक शिक्षा मुम्बई में हुई। उनकी प्रथम कहानी '*सफ़ेद अनार*' 25 अक्तूबर 1964 को पुरस्कृत होकर मुम्बई के *नवभारत टाइम्स* के रविवारीय अंक में प्रकाशित हुई। उपन्यास '*एक जमीन अपनी*' के लिए ग्रामीण संगठन, मुम्बई द्वारा सन् 1994 में फणीश्वरनाथ रेणु, साहित्य पुरस्कार मिला है। उनके '*आवा*' उपन्यास को '*इन्दु शर्मा कथा सम्मान*' तथा '*साहित्यिक कृति सम्मान*' '*वीर सिंह जूदेव*' '*शिखर सम्मान*' प्राप्त हो चुके हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इन समस्याओं से हटकर आधुनिक समाज का एक और घिनौना चेहरा दिखाता है। यह उपन्यास समकालीन यथार्थ को व्यंजित करता है। शोध अध्येता द्वारा इसका हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। इसके बाद अंग्रेज़ी अनुवाद में आने वाली समस्याओं का भी पाठाधारित विवेचन किया है। अन्त के दो अध्यायों में, उपन्यास का भाषिक तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष सामने रखा गया है।

उनके द्वारा उपन्यास में रचित पात्र समकालीन परिस्थितियों तथा जटिल यथार्थों से जूझते हैं और समय एवं समाज में अपनी खास पहचान बनाते हैं। यह उपन्यास मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में अनूदित हो चुका है। अंग्रेजी में इसका अनुवाद नहीं हुआ है। मराठी में इसका अनुवाद 'हुरहुर' के नाम से अनुवाद हो चुका है। उर्दू में भी इसका अनुवाद प्रकाशनाधीन है। इस उपन्यास को 'चक्रधर सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

'*गिलिगडु*' उपन्यास के पात्र अपनी संततियों के प्रति आलोचनात्मक व्यवहार रखते हैं। सन्तानों से उन्हें शिकायत अवश्य है, किन्तु इस कारण वे नफरत नहीं पालते। सन्तानों के सर्वतोभावेन विकास की कामना से भरे रहते हैं। इसके साथ ही '*गिलिगडु*' के अध्ययन में मुख्य रूप से सामने आनेवाला चुनौतीपूर्ण मुद्दा है। संततियों की ओर से सद्व्यवहार की आशा करते हैं। पूर्ति नहीं होने पर कुछ कसक भी पनपते हैं, किन्तु वृद्ध जनों की अवहेलना आधुनिकता की होड़ में बेतहासा भागता मनुष्य यंत्रवत होता गया है। उनके मन-मस्तिष्क से

आदर एवं स्नेह की उष्मा नष्ट होने लगी है, मनुष्य की सामूहिक चेतना भी नष्ट होती जा रही है। यह आज के समाज की एक ज्वलंत समस्या है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक के आरम्भ से जिस तरह से नृशंस प्रतिस्पर्धा तथा मशीनीकरण का माहौल विकसित देशों में बना है उससे भारत भी अछूता नहीं रहा है। इस कृति में इन परिस्थितियों की भीषणता का चित्रण किया गया है।

भारत देश में आधे से अधिक लोग मध्यवर्गीय तबके से ताल्लुक रखते हैं। इस देश की चुनिंदा भाषा-भाषी समुदाय की संवेदना को हिन्दी की इस चर्चित रचना को अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से झंकृत करने का मेरा प्रयास है। अनुवाद के अतिरिक्त अंग्रेज़ी भाषी समाज को हिन्दी भाषा की कृति से अवगत कराने का अन्य माध्यम नज़र नहीं आता। वास्तव में उक्त उपन्यास के मुख्य भाव को सुरक्षित रखने का पुरजोर प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। हिन्दी भाषी समुदाय तो इससे सहज ही जुड़ सकता है लेकिन अंग्रेजी भाषा में न होने के कारण अवश्य ही एक विशिष्ट समुदाय और विषम भाषा वर्ग इससे वंचित रह सकता है।

यह संपूर्ण शोध प्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभाजित है। **पहला अध्याय** में सम्पूर्ण कृति का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है। **दूसरा अध्याय** में पाठ के अनुवाद उपस्थित समस्याओं की प्रकृति पर विचार किया गया है। **तीसरा अध्याय** में आलोच्य कृति का भाषिक विश्लेषण करते हुए लेखिका

द्वारा किए गए नए-नए भाषिक प्रयोगों की चर्चा की गई है। शोध प्रबन्ध का **चौथा अध्याय** मूल कृति पर केन्द्रित है। कथा-रचना को रचनाकार के रचनात्मक सरोकार का मद्देनजर सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषणपरक दृष्टि अपनाई गई है। **पाँचवाँ अध्याय** में मूल पुस्तक की विशेषताओं पर समीक्षात्मक चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त कई साक्षात्कारों को देखने तथा उनसे इंटरनेट के माध्यम से पत्र व्यवहार करने पर प्राप्त की गई जानकारी को साझा किया गया है। इन साक्षात्कारों तथा संवादों ने कृति के अनुवाद में मेरी विशेष सहायता की।

पहला-अध्याय

उपन्यास *'गिलिगडु'* का हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद

GILIGADU

Dedicated to the dearest *Sagar Sarhadi* who believes in filling colours to the rainbows in everyone's sky

The First Absence

The Crisp Crease

After getting Tommy to relieve itself, Babu Jaswant Singh could not, as usual, drop Tommy back home in time.

He left the house very late. After all, he was a chronic patient of constipation. These days, he had been suffering severely of piles. Even after taking a full mug of water, his bowels got cleared in installments, with warts oozing off and on.

His abdomen started acting up exactly when he was about to leave the house. He had to stop. Though Mr. Jaswant Singh has kept trifla powder mixed with *Panchaskar*[1] mixture and *Kayamchurna*[2] to reduce the uneasiness, but the problem did not seem to be reduced. Though while taking it at night, this phantasm always gave him false assurance of a comfortable morning, but the next morning would always brutally pass on the responsibility to the next. Now he gets shaken when he sees the sight of the commode filled with blood. He has started taking overdose of *heam up* tablets without consulting any doctor – He wants to increase the level of heamoglobin in his blood, no matter how. Though he

---

1 Names of Indian herbal medicines
2 Names of Indian herbal medicines

knows he should not have done it without consulting his physician and family doctor – Doctor Saxena , in Kanpur.

He is also irked by his pet Tommy's reckless behavior. Damn dog cannot stand in one place. Ineptly trying to release itself from the chain and sniffing the ground here and there. It is clumsily scraping the ground with its paws. Awkwardly making different noises from his throat as it tries to bolt with its full might. It tries to proclaim that nobody can make it wait on the bridge. Babu Jaswant Singh does not want to leave the bridge for one instant. Leaving the bridge means being absent from the meeting point, which he absolutely could not let happen.

Babu Jaswant Singh also knows that whenever he goes to relieve himself, Tommy always shows its restlessness. He just cannot comprehend Tommy's disconcertment. May be Tommy's effrontery is a kind of protest that he makes him stand in one place without his consent. Whenever Babu Jaswant Singh is in need, he has always found Tommy behaving very cunningly.

Whenever he is in need, dammed Tommy starts behaving so innocent as if it does not know why he has stayed on the bridge so long.

He is not supposed to scold Tommy even after his irksome behavior. Babu Jaswant Singh interrupted himself. However, he has already abused Tommy in his heart silently. Yes he did. So what? It's all about habit. Once one gets habitual, he suffers from slip of tongue. It's best to nail it in time.

He felt happy when he reached from Kanpur and his son and daughter in law at least considered him' capable' enough to take care of dog. Now he has also started feeling that this fact of being a respectable old man is only acknowledged by Tommy. To bear the tantrums of grandsons (Malay- Nilay) is not his cup of tea.

After the clock sounds the alarm in the early morning, the Tommy starts sniveling. As if he has turned on the alarm for Tommy and not for

himself. Many a times, out of his laziness, Babu Jaswant Singh lets the alarm ring even if he is half-awake. But nothing on earth can make Tommy bear the alarm. He used to pounce on the table and chucked the clock to the floor. He could not bear its atrocities too long. He complained to his son Narendra that Tommy should not be tied in his room that it might attack him sometime in a fit of rage. After all, you cannot trust an animal. Narendra did not oppose his objection. Now, Tommy is tied in the passage of the house. Babu Jaswant Singh's daughter- in- law, Sunaina, remained disgusted for many days due to this unpleasant affair, as if Tommy was exiled because of him. He felt like counter questioning her, that, if she is so concerned, why is she not tying Tommy in her room as she has the biggest room in the house.

He also felt that Tommy seemed to have an aversion towards news. Off late, he could understand the whole matter. It had no problems with news but with the language. If an English language channel was on, it never created any disturbance. The moment he put on '*Aaj Tak'* it started sniveling. He could merely listen to the main bulletin. After sometime, Tommy's sniveling changed to growling and started to spread terror in the living room. Sunaina could not bear the discomfort of Tommy. She would always intrude and say, "Please put on some music channel. What is so special about '*Aaj Tak'*? It runs news 24x7."

The remote would finally lay on the armrest of the couch and an annoyed Babu Jaswant Singh got up and came back to his room, which was next to the Balcony. And from there he could hear songs like '*Mahboob mere...mahboob mere...teri aankho se mujhe peene de';* filled with obscenity, would drip like molten lead in his ears. Tommy's gestures astonished him. It sat on the floor, headlying on its legs, mesmerized by the charm of Sushmita Sen's beauty. He neither understood nor could somebody make him understand, why Tommy did not like the language of news – and liked it more when Sushmita Sen was there. Why?

18

Earlier, Babu Jaswant Singh after relieving Tommy would walk it as he went out for a stroll .He soon realised that Col Swami's suggestion was not entirely unfounded. As suggested, while having morning walks, a man expects complete peace – not possible with Tommy in tow. Top of it all, Tommy's playful annoying attitude was dangerous for his age.

After fulfilling its required needs, it would be better to leave Tommy at home. There were other younger people in the house who could fulfill its playful needs. This was not his cup of tea.

Oh my Goodness!

Hey! Hey! Watch it! Are you ok? Wait! Wait! Don't rush to get up. Hold my hand. Do not put much pressure on your knees – Yes, This way… keep holding my shoulders. I will not be hurt. Yes! Good! Try to stand straight.

Yes… aaaa -, hold my hand and try to walk few steps... Are you feeling all right?

That stranger helped him to get up and started wiping the sticky mud off his kurta. As he lifted the back of the Kurta , It was apparent by the marks on the pyjamas that he would have bruised his bottom.

The stranger was satisfied with the fact; he had not sustained any internal injuries. If there were any, he would not have been able to walk a single step. The pain would not have allowed him to walk even a little.

Babu Jaswant Singh was inflamed with anger after it seemed as if Tommy was witnessing everything in glee, standing far off with the chain dangling around its neck. As if, it was having fun seeing him falling. He felt like throwing stone at its head without considering the immediate circumstances.

You are amazing! You have come for a walk wearing slippers. If you have a craze for breaking your bones, then it is a different matter all together. Top it all, you are taking this grenade with you. Stranger fired

sarcastically. You are right on your part friend. But, we can at least drop it back … after it is relieved.

Is it too far? The stranger asked out of curiosity.

Ohk, Ohk. You stay in *Glaxo*? Is it nearby? Let me drop you at your place. The stranger caught his drift.

He was badly shaken by the shock of the fall. Babu Jaswant Singh could not deny the offer.

He was amazed by Tommy's sudden change of behavior. It was behaving with docility after the stranger took over it's leash, 'the rascal'.

'Don't you have any market in your vicinity? It you have, then get good sports shoes for the evening.

However, his worry was that he was not much aware of the neighbourhood. He had seen neither any market nor stores near Nirman Vihar. The stranger asked for his shoe size. Babu Jaswant Singh answered hesitantly; that his shoe size of yore was seven. But he didn't know his current size. Stranger burst into laughter at his ignorance. He was not a growing kid that his size would change with time. It still had to be seven.

The stranger inquisitively asked if he often came this way for walks. He had never seen him on this route before– why?

Babu Jaswant Singh explained that he had come this way for the first time. Actually, he always took Tommy for a walk as well as to relieve him in the big park nearby. Yesterday the gardener had suddenly noticed and objected. Sir, the park is meant for kids not for the pooping of dogs and cats. He would be penalized on being complained against.

After reaching the *Glaxo* bridge incline, Babu Jaswant Singh was overwhelmed with gratitude, and tried to take Tommy's chain from his hands. At this, the stranger said in jest – Do not worry! He did not intend to snack at his house. He was not sure about the rough patch of road near the incline; he did not feel like dropping him off just like that. He

did not need to worry. He would not leave until Babu Jaswant Singh reached his gate. Did he have kids? If he has kids, then, he must be having *Arnica*. If you have, then take 5–6 tablets immediately. Take three – four times a day. Internal injury will be healed. If you do not, then ask somebody to get it from the market. *Arnica–30.*

After reaching the gate, Babu Jaswant Singh felt like inviting Col Swami for a cup of coffee. However, he could not muster up the courage. At this time, Sunaina must hve been busy in preparation of sending Malay – Nelay to school. He was also completely unaware about the geography of the kitchen, so obviously he could not prepare coffee for both of them. It had been long since he arrived from Kanpur to Delhi. He felt like a stranger; the moment he entered the threshold of the house.

Please, do not get into any formalities. The stranger understood the conflict. We will sit sometime later.

Now excuse me please. We shall meet up in the morning on the same *Mayur- Vihar Bridge*. Exactly around quarter past 6 or 6:30.

Please leave your darling behind at home this time.

By the way – My name is Vishnu Narayan Swami – Retired Col swami. I live in Noida in Sec-26. I usually come this same way for a walk. The blooming fields of the Yamuna always attract me. One can barely feel the sweet smell of sugarcane fields in Noida.

Babu Jaswant Singh felt embarrassed.

Babu Jaswant Singh was a retired civil engineer. I live with my son and daughter in Law in *Glaxo*. I am grateful.

It is alright. Do not need to mention it my friend. I believe I am going to see you perfectly alright in the morning on the bridge. Please take *Arnica*. OK, I will make a move. After exchanging the warmth of a strong handshake, Col Swami turned and started walking towards his home.

Babu Jaswant Singh kept watching for his back till the moment he did not climb the incline and hadn't disappeared from his vision.

And now, he was standing on the same bridge and waiting for Col Swami.

Shoes

Tommy was running short of patience. Out of boredom; sometimes it would bark at him and sometimes at the vehicles on the road.

He coaxed it. He tried to make it understand. Tommy could pretend to be nice for some more time if it had borne it so long. it could understand his problems too. How was he feeling? He was no less tense that Col Swami had not reached yet. His problem was that he could not leave the bridge at any cost. To leave the bridge meant to miss Col Swami. If Col Swami did not get to see him, he might think that Babu Jaswant Singh could not come for a morning walk today. It was not that easy to beat dysania. Not an easy task for the weak willed and neither is it truly meant for them.

Babu Jaswant Singh was happy to see that Tommy got persuaded which he did not expect at all. He stopped barking. Thank God, it was being considerate. The rascal must have thought, right then consideration was essential. Mostly they did not gel together. But Tommy knew that he was the one who took him for regular walks. Only because of him, it gets to fill its nostrils with petrichor. He is able to measure the zenith of the beauty of nature. The consequences of his avoidance would be really bad. Nevertheless, the only compunction in his heart is that nothing lasts long for more than fraction of seconds. In a few moments, his heart becomes rebellions. He wants to get free from the chains of oldie's hands and wants to follow that beautiful bitch. Why doesn't he

look at himself? The oldie who always pretend to be hector (Harshchandra) is no less a lecher.

He has always felt: The garbage house attached near *United Apartments* is not a place for his peeing. However, the stubborn oldie does not let Tommy to go anywhere else. It happens only then when voluptuous girls with modern attires come out of the *United Apartment* in their groups chattering and gaggling. They walk towards the ice cream cart. In its helplessness, Tommy has to pee in front of them. It knows that oldie will not move an inch from there, until the moment the group of girls don't leave from there while licking their ice creams.

To keep Tommy in control; instead of scolding it these days, Babu Jaswant Singh holds cane in his hand. He does not come out without his cane.

Babu Jaswant Singh is staring at his left side continuously and suddenly he gets up from three. The expression of his sunken face starts changing.

Far from *Noida's* Side, some blurred image is jogging towards him. He can make out, the most brisk and active figure walking ahead of everybody is Col Swami. He is leaving everyone behind. He feels irksome that why can't he see him clearly. Has he become hypermetropic? On the other hand, he mocks at himself for his impatience. He should stop cribbing about his vision and behave patiently. Col Swami is coming. But gradually that image becomes clearer. His all hopes have gone to dogs. He has been wearing pure white half pants and a t-shirt even in the end of Dec. The image appeared is wearing a Jogging Suit, that too in somewhat black colour, which is not his type at all. Rather this element of being choosy is instilled in him also.

Daughter in law Sunaina already noticed these new changes in him. Earlier his walks were not regular as well as timings were not fixed. He used to get up and go for walk after relieving himself. Now he

regularly sets his alarm for the morning. He has become bit defiant towards Tommy also.

He takes Tommy for a walk that too for a short while. She noticed that Tommy keeps on cribbing at home all time. Tomy's tail waves in desire of going out while seeing the outsiders roaming around. Moreover, this sight pinches Sunaina. Initially she din't object because she thought Babuji must have felt pressure in the stomach. But she couldn't resist herself when she notices that there is no change in his schedule.

Babu Jaswant Singh was expecting it. Rather he was wondering why his hearing has not been done yet.

Perhaps for the first time, he replied to Sunaina objection plainly and ignored her bitter expressions.

It's not possible for him to have a long walk with Tommy. Whom should he take care of himself or Tommy? He cannot run a marathon at this age.

He does not want to have broken bones and get dependent on other's mercy.

Daughter in law Sunaina was astonished that for such a meager issue, he behaved so rudely. She could not understand why he blasted so badly on such a valid complaint.

Good morning Sir! Friend, it does not seem like you had fallen yesterday.

It is for the first time that he laughed in Delhi.

Sir, It was a mere excuse to meet you.

Ha! Ha! Ha! Col Swami busted into lively laughter. For a long time they were sharing their joys together.

They deliberately controlled their laughter. He says

Let's start our walk.

24

Suddenly Col. Swami looked at his feet.

Can you go for walk without shoes? Take support of the edge of bridge and remove your *Hawai chappal*. He took out the box oh *Phinix shoes* from his rucksack and gave it to him – wear it.

It skipped out of my mind.

Actually I ...I knew, you would not be able to find the shoe store. So I bought it. That's all.

And I also knew this thing friend, you would not have bought *Arnika*. Col Swami takes out the bottle of tablets and slips it in Babu Jaswant Singh's pocket. Then he again takes it out and says – come on... open your mouth.

He puts 4–5 tablets in his mouth he again puts the bottle in his pocket and says in an orderly tone- take these tablets every day in an interval of 4–5 hours.

While taking out his shoes from the box and wearing it; Babu Jaswant Singh suddenly became emotional.

Is it fitting properly? Babu Jaswant Singh stands up after wearing the shoes, a child like enthusiasm shines on his face.

Without hesitancy, he replies- They are so fit, as if I am wearing it straight from the shop.

I felt the same friend as if we are together in the shop.

The confusion of where to keep the chappals has also been resolved by Col Swami.

Why don't you keep your chappals behind the bushes, we will take it while coming back.

He understood it and noded his head in agreement.

Let's go?

Yes, let's go. Babu Jaswant Singh could feel the soft comfort in his feet and started competing with the briskness of Col Swami. He has not talked about money yet. He thought that price is always written on the box. He is going to keep money in an envelope before tomorrow's morning walk. Narender must have noticed his chappals. He also knows that it is not an easy task to take Tommy for walk. He didn't care to buy one pair for him. If Narendra would have taken care, he has not any need to sit back due to the severe pain of femur.

His eyes got hazeled because of tears.

In his times, he was quite particular about his clothes and shoes. Especially, for the shoes. Narendra's mom always considered it as wastage of money. He was very strict for spending money on kids in the name of discipline. Even if the smallest peice of pencil was left, they were not allowed to get the new one.The sole of worn out shoes will be replaced by rubber of the tyres. School picnics were strictly prohibited. On one hand, you spend money; on other hand, you take tension. If they have lost their book, they are going to borrow it from their friends. Without strictness and discipline, they are not going to understand the value of money. They want this thing – that thing. It will not be acknowledged. There is no need to take their sides. They have their whole life to fulfill their wants and wishes. They are going to fulfill it with their own earnings. The kids could understand value of money only because be maintained the discipline in the house. It is not a small thing to be a born in a house of Talukadar of 32 villages.

Narendra's Mom always got irritated whenever he used to talk about his past. She has least interested in the brutal fashion of Talukadari. She knows their kids have not come from heaven. Neither is she demanding golden cart for them. But they are not that blind that they cannot notice several pairs of shoes and sandals. It is very important firstly to set an example for kids so that they can also learn

patience without their, it will be like to light a lamp without oil. Is it possible?

He has tried to disarm Narendra mom with his gift of gab. A man's pride does not lie in his house or property, it reflects in his shoes. If a man doesn't have good pair of shoes, he is going to walk like a lady. However, his statements always fall on their face and he used to get disheartened.

Few months back, when he was going back with Narendra from Kanpur to Delhi, so on Narendra's suggestion, he was cleaning and shunting out the useless stuff out of the house. He was astonished by the fact that his all pairs of shoes were polished and kept safely in a poly bag in a wooden box by Narendra's mother. Narendra himself was bewildered.

He was not surprised because of his father's love for shoes. He was well acquainted with his obsession for shoes. Yes, he was bit surprised with the variety. He was amazed but not for a very long time. He was more impressed with the maintenance skills of his mother. She kept it too meticulously as if they are newly bought from showroom.

Reality has now turned upside down. He left the sentimentality behind and said. It is not possible for him to bear the load of laden all the shoes to Delhi. And there is no place to keep it. Moreover, there is no time to maintain them. They both have different sizes so he cannot even use them. It is not right to leave them here for many days. There is also chanceof hardening of leather and subsequent fungal infestation. The only alternative left is that the news should be sent to the village. Any laborer would deliver it to the *Tauji*. It is going to be useful for needy ones. Whatever is useful, he can keep them. They are going to be useful in winter. The prices of shoes are touching sky these days.

Babu Jaswant Singh felt irritated after listening to all this.

He plainly said 'No'. He won't need even a single pair. No matter they are pricy or cheap. It has been a year. His bones are misshaped now. He has been on injections. He cannot wear shoes now. His feet cannot bear hard leather. Last winter's he had been wearing socks with thumb and was wearing it with *Hawai Chappals*. He can wear it in Delhi also.

Narendra replied rudely – As your wish.

See there. Where have you been lost Mr. Singh?

The scare-crows in mid of the fields aren't looking beautiful. Just like, it used to be in Kerala.

My goodness, see those sparrows digging their beaks in the drain and having water from it, as if they are having community meal.

Do you know what the meaning of *Gili* is?

He gets a bit flustered, does he mean *Gili danda*? He nods his head in' No', in ignorance. Gili means sparrow. *Giligadu* means host of sparrows. Actually, in our Malayalam, it is being called as *'Kili Kalu'*. *Giligadu* is a translated version in Hindi.

You don't even know that I have beautiful *Giligadu* at my home.

Do you like birds?

Yes, I do. Col. Swami had a quizzical smile on his face. My *Giligadu* are my grand daughters. Playing, laughing, tweeting, chirping and flattering always. Kumudni and Katyayani – oh my goodness! Such a blast they are! Can't even describe.

Butterflies were fluttering in Babu Jaswant's eyes – Are they twins? How old are they?

They are about to finish their fourth year. They study in nursery class. They carry school bags on their shoulders with colorful water bottles and Tiffin boxes.

When they come from school, they not only offer me the left over from their tiffins but also make me learn the rhymes which they have learnt in school with expressions.

An elephant is terribly big

Has a big trunk walking tik, tik, tik

You are most welcome in our shed

Have some pudding and have some bread.

(Hathi raja bahut bade

Soondh utha kar kaha chale

Mere ghar mein aao naa

Halwa poori khao naa…)

They will give me pencil- paper and make me sit on the chair like a judge. They pass strict orders– Appu! We are going to sing and dance very well. You give us stars like Ma'am.

I give them zero.

And the fight starts like *Tom and Jerry*. I try to find every nook and corner of the house to escape from Giligadu. But Giligadu always find me and then they announce their punishment – I get hell scared.

Appu, hold your ears and stand up on the bench.

You? Babu Jaswant Singh asked in amazement.

Who else?

Then?

Then what! If they have passed the verdict, I have to bear the punishment. I have to stand up on a dining chair until their hearts are not melted and they feel pity on me.

Oh, they are too snobbish. Babu Jaswant Singh smiles and asks him slyly.

Col. Swami supported him. He said, in my whole army life, this kind of court martial never happened to me.

He controls his laughter and enumerates one more interesting incident to Babu Jaswant Singh. It has been a few days. His second daughter in law who is mother of *Giligadu* complained that these Little Suzies don't brush their teeth at night. In the morning, their mouth stinks. They are also going to have cavities. She persuaded them very calmly many times that it is mandatory to brush their teeth before sleep. But they do not obey her. Appu can only tame them. He has to make them understand. They will not get a morning kiss from their appu, if they are not going to brush at night.

He has to threaten them. The tables were turned. They also put one condition. They will brush at night only if appu is also brushing with them. They have never seen appu brushing his teeth at night. Won't he have cavities in his teeth?

So grudgingly, he also has to brush at night. Though Kumudni and Katyayani sleep before him and their sleeping time is actually his drinking time. That time he sips his favorite whisky Royal Challenge. Now he drinks after brushing his teeth.

All family teases him. He turns into a weasel in front of them.

Col. Swami gave narrative of his whole family to satisfy the curiosity of Babu Jaswant Singh. His wife is no more. She died long time back. He has three sons and three daughters. Older son has two sons Sridharan, Srinivasan, second son has these two little daughters

Giligadu and younger son Prabhakaran and his wife Shyamali don't have issues yet. All the family stays together. They all have their separate flats but they don't want to leave him alone. After his wife's death, they are taking special care of him. It is obvious that they will always stay together even after his death. He believes that staying together will bring effluence. They have given their flats on rent. They have been paying their loans from the rents they earned for their property. As he had been posted to inhospitable and far-flung places during his job, he always got chance to stay with his family in installments only. His children understand the gravity of the pain of being separated from family, so they want to give him fullfilling family life.

Do you see the waving and bobbing sugarcane fields? The way the wind caresses these fields, the fields start swaying while earlier standing still.

Babu Jaswant Singh feels like asking Col. Swami – why can't they meet every morning on *Glaxo* Bridge?

He was amazed when he found out that Col. Swami understood in an unsaid way.

Though it is morning time, but Mayur Vihar crossroad is very busy and crowded. The empty kiosk of police though gave an impression of safety. The place is safe. It is better if we meet there friend. It is not right to wait on G*laxo.* I do not have any fear in my heart; have been playing with risks for the whole of my life, its there in my habit. You are not habitual to all this.

1965 war continued for 22 days. 1971 war streched to 13 days, but a soldier does not only fight when the war in on. Preparation for the war is itself a kind of war – it is a ceaseless war. He murmured something in english.

Raamwati – Somwati

Babu Jaswant Singh feels a sudden increase in the chill in breeze. Moreover, the breeze is tickling his nose as if he is about to sneeze. If he sneezes, he will be relaxed and can get relief from ticklish feeling in the nose. Nevertheless, he does not want to sneeze right now. His wife always considered it a bad omen. For sometime, all ominous thoughts hovered across his mind. These bloody blue line buses run on the road with speed like a jet plane about to takes off and consider the entire pedestrian class as mere worms. Roads are not meant for worms. They possess complete right on the road. The one who is invading their space is not going to be spared and why should he be spared? To teach pedestrian a lesson, they usually crush them on the road; so that they will keep it in their mind that they should not dare step on roads.

Are these murderous buses opening their bloody jaws? He felt ashamed of himself. Can't he think something positive in the morning? Is it necessary to instill the heart with a gloomy outlook? If something untoward had happened, the people coming from *Nagarjuna apartment* and *Noida* would be bearing a face with a fateful expression.

There was a possibility that after waiting for a long time, Col. Swami finally decided to walk all alone on *Pantoon Bridge*. His house was not nearby. His speculation could be wrong – distance cannot be less than 4-5 kms. He also remembered that if he came this way he had to walk many miles. Won't he feel tired? Col. Swami burst into laughter as if

some child had posed an innocent question. He was forgetting that he had been working with the army. Where every army man for whole of his life, no matter what rank he is at, has to run many miles to keep themselves healthy and fit.

If he had gone to *Pantoon Bridge*, Swami would have reached this bridge by now. One does not take more than half an hour for a walk there.

Moreover, this much time because he walks while enjoying the greenery of the crops around.

On his fourth meeting Col. Swami turned towards Babu Jaswant Singh and told him, kurta payjama is not meant for walk. These loose clothes make you lazy. Buy two pair of *lux cots wear*. Winter is going to be harsh gradually.

If you feel cold, one can always wear jacket as overcoat over it.

If you cannot buy then tell me – I will buy for you from *atta market.*

Babu Jaswant Singh said 'no' out of embarrassment. He had not taken any money for the shoes, now he would again be in his debt. That day he was scared of falling. He had not much idea about the market in *Acharya Niketan.* This time there would not be any carelessness. He will go by himself and buy; rather he would be wearing *lux cots wool* in front of Col. Swami.

Though he felt good at heart – someone not only wanted to save him from the harsh cold but also wanted to see him fit and fine. He always wanted to see himself like this. He doesn't remember when this zeal of living healthy got extinguished, whether it was extinguished or he deliberately dug this zeal and dropped it inside his heart and covered it with the lid of age – that his life is over.

Suddenly he felt nostalgic while remembering his Kanpur days. That flame of remembrance rekindled.

People must consider Kanpur a dirty, chaotic, backward and restless city. For him, it had always been the synonym of all personal facilities. It is not called *the Manchester of India* for nothing.

He just needed to tell any passersby that he needed something. That thing would be at his service in an hour or so and that too available with different choices. He could pick and choose. If he wanted to pay, he can pay on the spot or if he didn't have money and wanted to pay later, he could do it according to his convenience. Dealers would not dare knock his door for money. Now every shop had a telephone, long hours work could be done in a blink of the eye.

He was transferred to many big cities. However, with his approach and connections, he managed to get back to Kanpur. He had bought a five hundred yard plot many years ago. Then he constructed a planned house there. Coincidentally municipal cooperation builds up a beautiful garden in front of the house. It is like cherry on the cake. There is a banyan tree in the mid of the garden.

Municipality has not touched it all. It is the shelter to the numerous birds. In the morning they chirp around createing a world of happiness that wipes off all grief from the heart.

In the backyard of the house, there is a garage, where Raamasre stays. His wife Sunguniya does the odd jobs of the household. Brooming, dusting, sprinkling of water in the scorching heat were all her responsibilities.

Narendra's amma (mother) could not bear her snobbish kids.

They had constructed a separate Indian toilet for servants but the shameless kids used to poop in the drain of the house.

Narendra's amma blew a gasket.

Babu Jaswant Singh coaxed her. Let them do what they want to do in the backyard. See their presence helps us too. The kids keep whimpering at night. They keep everyone alarmed. Otherwise, anybody can jump the wall and barge in.

But bad luck. Raamasre passed away before Narendra's amma's death. He went to his own village on the call of his elder brother. After 15 days, news – those people from Birhun village that died due to toxic liquor – Raamasre was one of them.

He could not believe it. He had never seen Raamasre tipsy or ever consuming drugs. Sunguniya had admitted. He used to drink sometimes in six months. He used to come drunk and bowled along the bed. However, he had feared Babu Jaswant Singh. He never did so in front of him. Blubbering and mourning like heifer, cursing her own fate, Sunguniya with three kids went to her own village with her brothers- in-law. Her blubbering agonized my heart.

For Narendra's amma, it actually blew away the cobwebs. Though she felt bad as Sunguniya was buried under a mountain of woes. She searched and found a new maid Raamwati barin for herself.

Her left over stuff was chucked out. Garage was washed properly and *gangajal* was sprinkled all over the garage to make it pure.

After almost 20 days, poor Sunguniya knocks the gate with her dirt-smeared kids standing at the gate.

The moment she saw Narendra's amma, she fell at her feet and started crying and the kids started sobbing like their mother.

Narendra's amma, the strong idol, melted after seeing her in tears. She asks – how has she come? Why has she come? If she has come to take his utensils back, she could have sent her relative to take her stuff back. If she has come back to stay here, then it is not possible

for her. She cannot stay alone in the whole city. Is it possible for a bird to live without nest?

Sunguniya controlled her tears somehow.

She wipes her tears with the corner of her dupatta (*pallu)* and says – I have faith in my goddess like lady owner. I will try to muster up my courage under benevolent gaze of your shelter.

She opened herself on the matter of her survival. She is going to take care of her lady like she used to. Nobody is going to dare to take her place. The days she had been working, it was all right. Now this time is over. Now she will not enter the gate whatever spare time she is going to have, she will work in other houses. She just has to bring up her kids well. When the boy will be 10 or 12 years old, then he will work in some hotel or *dhaba*. I will lead my whole life like this.

She will not go back to her village at any cost. Please do not force me to go back.

Brother-in law had tortured me a lot. Just for the sake of grabbing her property, he tied her knot with a middle-aged twice-married man. Sunguniya did not approve of it. Next afternoon, she had to meet that man. She took an excuse of going to the toilet in the morning and ran away with her kids. Finally, she has come to Kanpur at her lady's place. Now she is safe. If her brother in law tried to force her then she has already decided she will go with her lady and complain against him in the police that she doesn't want to go with those wolves.

Though she had melted but her practicality was still overpowering her emotions. She is such a daring woman. She has such courage that she left all her relatives and has come to their place. Their caste does not have trials by fire that they cannot have extra marital affair. She must be having affair with him (Babu Jaswant Singh) that is why she does not want to leave.

Babu Jaswant Singh scolded Narendra's amma so badly that she kept on crying whole night. He accepts that he has been weak at many points in life but that does not mean she would accuse him of such filth. Wherever he has stayed, he has made his reputation. And there is no chance of spoiling it in the future. There is no use of creating insolence and chaos.

Babu Jaswant Singh always has this remorse in his heart that Narendra's amma never thought about herself. Apart from being a good domestic administrator, what are the other attributes due to which he is so attached to her? He believes it is her dexterity and meticulousness. She was like the djini of magic lamp in agility and resourcefulness. Everything was at her service at one call in the blink of an eye.

He was quite fascinated with the vivaciousness of Narendra's Amma. It was not plausible *for him to go after* other women. Actually, he had seen many women in life but no one was like her. She came in like a blank paper and now she has acquired so much of proficiency in everything that anybody can covet such a woman.

Like Narendra's amma, Narendra also posed a question for her presence. He also expressed his apprehensions and doubt about his relationship, which he shares with Sunguniya. Why he needs to vacate the garage for her? He doesn't want to create a scene in the future. He also heard that Sunguniya had been working in the back lane house (mansion) of BSP leader Raam Khilawan Yadav. It is not a small mansion that Sunguniya cannot stay there. If she can put up there then why is she not staying there?

Babu Jaswant Singh disarmed Narendra's argument. She is there in his absence. She started working there when she was already working at Narendra's amma's place. Now she does not have much work in the house as nobody lives there. He does not mind where she actually works.

However, outer premises of the house are still her responsibility, which she fulfills completely to redeem as a cost of living in their house.

He still cannot forget inspite of Narendra being there, she stealthy looked into his eyes and expressed her grief in her tears. Though the landlord (Babu Jaswant Singh) is going to his children's place, may he remain blessed and happy there. Nevertheless, the owner should know the whereabouts of his own house. Sunguniya should also be fortunate enough to serve her owner.

Babu Jaswant Singh gave her Narendra's address and phone number on a slip.

She made a call through elder daughter of leader Raam Khilawan to Delhi. The moment daughter in law Sunaina heard Sunguniya's voice; she called him with a quirky tone.

Sunguniya assured him that everything is fine at home. She cannot tell about the indoor condition, as she does not have the keys. It would have been different, if she had the keys. How is he keeping now? She is thinking of admitting Raamwati and Somwati to a government school with the help of the leader, Mr. Yadav. What does he suggest … does he remember? He said what leader Ram Khilawan can do, nobody can. He has dominance in his area. She should be admitting Raamwati and Somwati to the school without any hesitation.

Studies are too important. He has one wish. If she feels right then she can agree to it. They are not yet admitted to school. Names can be changed. She can name them as Kumudni and Katyayani. Sunguniya could not understand the names. She gave phone to the elder sister of Netaji so that he can make her understand, when Sunguniya will go for admissions; the sister is going along with her. Netaji's daughter was too happy with the names. He gave one more suggestion. She should not add any sir names to their names. She can add suffix of father's last name Aasre. Katyayani Aasre, Kumudni Aasre.

Sunguniya said: Sir, please suggest some name to chutkan. Babu Jaswant Singh could not find his name.

Do you know Mr. Singh, where I had to hide your shoebox? On top of the Godrej almirah in my room. Had they fallen into the hands of giligadu again, they would spoil before reaching you.

And… oh my God! They took huge bribe in return for your shoes.

Actually, it happened in the evening when Col. Swami entered the house with the box of shoes. They noticed a new box of shoes while they were going to play ground. They thought like always, Appu has something for them. They snatched the shoebox despite Col. Swami's objection. One of them put one foot in one shoe and other put her foot in other shoe. Then these brats started hopping all over the house. Col. Swami tried to persuade them. He was scared that they might tumble down and hurt themselves.

Then the youngest daughter in law Shyamali comes and takes them out.

She scolds *Giligadu* quickly they should take their feet out of the shoes otherwise she is going to lock them in washroom where there is a lizard which can bite them.

Shyamali's warning worked. They did not only put off the shoes rather they packed it nicely in the box.

Then they start blackmailing their Appu. They announced it. They want same kind of shoes tomorrow. They will go with Appu to the market. After shopping, Appu is going to treat them in McDonald. They will have chicken burger with French fries. They are going to get some gifts with burger. They watched it on TV. Then they will go to Nirula's for ice cream.

Col. Swami thanked God at being spared at this cost.

Though it was fun to hang out with squirrels, have you ever gone out with your grandsons to Mc Donalds, Mr. Singh?

If you have not, please go out with them someday. You are going to have fun and you will feel like as if you are with your companions. Now it is in fashion that, people celebrate their kids birthdays there.

Col. Swami urges him in a good spirit.

He also tells him that he thought of allowing this trend at home. His Daughters in laws are completely conservative. They are masters of lines. They started cribbing that it is not possible. Birthdays are going to be celebrated the way they used to be. Like Amma (Col Swami's wife) used to celebrate it in form of festival. No matter how much kids insist. How will they come to know how their dadi (granny) used to celebrate their birthday?

Suddenly Babu Jaswant Singh remembers that his grandson's birthday is next week on Nov 18. He will talk to Malay why not celebrate the birthday in Mac Donalds with family. He is going to sponsor the party no matter how much it costs. Malay was happy after hearing the proposal. He tells his dada ji that he has already made his plan, for Mac Donalds. He has talked to Mummy Papa and they have are also agreed. He has his plans with friends. Family will not be part of the party. Mummy anyways feels troubled to make arrangements of party at home. Last time she had to suffer lot of botheration as his friends created a mess in the house. She said; please celebrate your birthdays with your friends only. You are old enough now.

Malay elaborates his plan with enthusiasm

There are going to be fourteen people including *Glaxo, Kirti* and *Nirman* complex friends. Papa has booked table for 14 people in Mac Donalds. There will be three cars going from the society. One is Saguna's car, other is Vivek's and ours. He is going to call driver from his office for his own car.

No, no dadu (grandfather) – we are not going to include any elders in our party. Party will get boring and then we will be with our drivers so nothing to worry. He asks dishearteningly – 'Fine, if you do not want me go with you to Mac Donalds on your birthday then what gift do you want from your Dadu?

'… Buy me a CD of Adnan Sami'

'Where can I get it from?'

'Is there any shop around?'

'No'

'Then?'

'You will have to go to *Palika Bazar'*

'Will you guys accompany me?'

'No!'

'Why?'

We have to study.

Babu Jaswant Singh became sad. Kids are not at fault. They are trained to be reserved. They have been taught that they do not need anyone. That is why he never gifted any of games to Malay and Nilay like Blocks, Mechanics and Puzzles etc. He also felt strange when Narendra and his daughter in law started bestowing weird games upon kids without them asking for them. Those games completely engrossed (Malay-Nilay) kids in their selves only. They never felt need of anyone. Whenever they came to Kanpur, they came with their own games. They were never interested in playing with the kids in the vicinity. They were unlike other curious kids who were interested in their games. They never let them touch their games. Kids always felt something is fishy when someone came close to their games. For enhancing the mental abilities these games are very smartly demolishing the sentimentally from their hearts to the extent that they can neither comeback to their families nor will be able to understand meaning of family.

Wake up before the milk spills

Clouds of dejection made Babu Jaswant Singh dismal for some time. Then he sees the golden rays of the sun turning into a feculent sheet in the sky, being partially obscured by an envelope of smoke.

Oh! From where have these ants climbed my legs? Perhaps they have got bored lying on the bridge.

The hustle-bustle of school buses has already started. It means, he does not realize that time is not waiting for Col. Swami; rather he is waiting for him. That is why he is still on the bridge. But he cannot escape from a major question that for how long he is going to wait for him? Rikshawalas had started picking the passengers from colony pockets and dropping them at the bus stand. Some of them are waiting on the bridge for the passengers coming from Noida.

On the pedestrian path, Tommy is lying with closed eyes, ignoring his insolence and pretending to be sleepy.

Let’s go Tommy? Babu Jaswant Singh’s tone suddenly filled with endearment.

Tommy continued its impudance. Tommy neither opened its eyes nor waved it's tail. He did not move even when he pulled his chain.

He would have gone for some urgent piece of work.

He has a full-fledged family who is going to pay off the formalities of birth/death. Who is going to pay off the formalities if the elder ones are

not fulfilling it? When he was in Kanpur, he had to do the same. Narendra neither attended any of the marriages/tonsure ceremonies nor mournings. Kanpur again grabbed his attention.

Babu Jaswant Singh never wanted to come to Delhi and since the day he has come, he had not spent a single day without cribbing.

Earlier whenever he came, he always visited like a guest and got guest treatment for two/three days, left Narendra's Amma there and came back to Kanpur.

Till the moment Narendra's Amma wanted to stay with her sons and daughters in laws and her grandsons, she used to stay with them. Then on her command, Narendra called -Amma is getting worried about him. Last time when amma talked to him on phone, she realized that his deadly cold had aggrevated. He was babbling. His blood pressure would have been quite high. He is careless in taking medicines. Narendra can make her sit in Shatabdi. Ramasre would pick her up. After coming from Delhi, for several months she kept on chanting about his daughter in law and sons and grandsons like a citation anthem without request. Like a devoted devotee.

She prepared and filled one drum of *gond laddu*[1] with the ingredients of dry fruits, dry ginger. The drum, which she prepared back at home and because of it Sunganiya got blisters on her dusky palms; they finished it in one week. Narendra demanded again. Narendra used to take one *laddu* with glass of milk every morning in the breakfast. Malay-Milay not only ate but also distributed it to their friends in society. However, that day when daughter in law Sunaina noticed it, she scolded them badly. Amma suffered from pain in her hands while preparing these l*adus* and you have opened charity at home.

---

[1] Name of Indian Sweets

Narendra also had *Dahi wadas*[1] of UP cooked by his mother many times rather he arranged many of his official parties on her account. When Narendra's boss's wife had *rasage*, she admired it so much that she came to Narendra's amma with a copy and pencil for the recipe.

While coming down the bumpy road of the bridge, his lips had either chapped because of the cold or due to disappointment caused by Col. Swami's absence. He tightens his lips and heaps sarcasm on himself; Babu Jaswant Singh if you would have dexterity in cooking like Narendra's amma at least you could have been bit help to the daughter in law Sunaina. What is the use of an old age man who is only capable of eating and shitting in the house?

Do you like idli Mr. Singh?

Col. Swami asked Babu Jaswant Singh.

He said in fervor, after Babu Jaswant singh's reply, that sometimes his daughter-in-law Madhvi cooks such soft idlis that it melts in the mouth. Madhvi knows that his three molars of upper jaw and two molars of lower jaw are weak. He cannot chew hard substance. Though having the desire of eating food of his choice, he has to leave his wishes behind. As if Madhvi has taken all the responsibility that whatever she will cook, she is going to prepare according to his taste as well as taking the consideration of the condition of his teeth. So that, he can enjoy it fully. She is going to cook idli, sambhar and nariyal chatni tonight. One can have idli anywhere, but having delectable idli cooked by efficient hands of Madhvi is an experience in itself.

Before coming out for walk in the morning, he is going to bring fresh idli cooked by Madhvi. She is going to pack idlis in banana leaves in such a way that it will remain hot until the time of his breakfast. Do you take spicy chatnis or less spicy one, Mr. Singh? While questioning

---

[1] Name of Indian Cuisine

Col. Swami remembered that spicy food is prohibited to him because of piles, he will bring bland chutney.

Did you go sightseeing in Delhi?

Not yet.

No more excuses.

You come with me and see Delhi through my eyes. You will be compelled to say – Oh my Delhi! Why i remained so far from you – then tell me.

It was a pleasant day with pleasant weather. He paid five hundred rupees for 8 hrs according to 80 kms in *ola*[1] taxi. Col Swami took Babu Jaswant Singh to show historical places of Delhi. And that time, they both were sipping the delicious *rasam* brought by Col. Swami in thermos while sitting by the side of ruins near Qutub Minar.

Babu Jaswant Singh had such yummy *rasam*[2] after a long time. When Daughter Shalini had come from Trivandram to Kanpur he always requested her to cook.

When Babu Jaswant Singh praised Col. Swami's *rasam,* he was also excited to know whether he liked *idli*[3] or not.

Babu Jaswant was almost in tears while explaining that actually he almost forgot after coming to Delhi that his choice matters in food. Usually he has to eat, whatever is offered to him. Usually that food which is served to him is unsuitable for his teeth as well as his stomach. If he ignores the matter of choice in eating, the thing, which irks him, is that here is no fixed time for his meals.

After he comes from his morning walks, he keeps on waiting for his lemon tea and breakfast while turning the pages of Hindustan Times.

---

1 Name of Taxi Sevice
2 Name of Indian Cuisine
3 Name of Indian Cuisine

His daughter in law keeps on consoling him that she is going to cook dalia for him after the kids have gone to school. The sound of shutting of doors is an indication that kids have gone to school and he is going to get his breakfast.

After sometime, she serves a dark red tea and tells him that lemons are finished at home so he has to take tea without lemon. Actually, Sunaina had a misconception that lemons are there in fridge. Then she finds out that there are no lemons in the fridge. Actually Narendra squeezed one in the salad last night and second he had it in the morning with the lukewarm water.

After few minutes of tea, she peeps in the balcony i.e. his room – that porridge is finished in the box. She cannot bring before evening. Would he like to have *cheela* in the breakfast? He remembers day before yesterday, Sunaina's cousin Kusum from *preetampura* came with her family. She specially cooked *Pakauras*[1] for them. A grinded lentil is still lying in the fridge. Sunaina must have not got the chance to use that *daal* anywhere. There is possibility that she has asked others also to utilize it somehow and they have denied to have *chila*. He cannot dare to say no. Only family members possesses right to express their likes and dislikes. Guests do not have this right. If he would have asked sometime that what he actually likes- he likes simple Indian food. He neither likes nor can digest pizzas, burger, noodles, Russian salad etc. etc. He felt after coming to Delhi in one week that he should object to Narendra that he could not eat anything. Stale food from fridge had never been served to him by Narendra's amma. so his stomach is not habitual. He can only have fresh *chapattis*. He cannot chew cold hard left over ones. In his reply, Narendra lectured him and advised Babu Jaswant Singh. From now on, he better not look for his choice of food in this house. He found Narendra's suggestion valid that he should learn to behave according to the time. Narendra always took care of his choice. He and Shalini always

[1] Name of Indian Cuisine

had to eat according to his choice. That too they are instructed that nothing can be taken out from their plates and they cannot leave anything in the plate to disrespect the food.

IIT was situated in Kanpur but Babu Jaswant Singh ordered that Narendra had to stay in hostel. He would be able to concentrate in his studies more. Discussions of bad food in hostel were strictly prohibited, as he is not the only one. Everybody eats it. 'Sacrifice is the first condition for achieving anything in life' he said it.

He misbehaves if Amma sent something to the hostel.

Amma was sending *shakkarpare* [1] *and fruit pickels* through Ramsevak uncle who came from village. When he got to know about it he took the vessel which was tied to cycle carrier filled with *pickle and shakkarpare* and threw it out of the gate.

Babu Jaswant Singh was aghast after hearing all this.

He felt to argue based on definition of discipline with Narendra whose heart is filled with past bitterness is futile. What he thought and why he was strict with kids, that time it was not possible for them to understand. Now how can he define it to Narendra Khushvah who is a Chief Engineer in NTPC and whose house is possessed with discontentment and grudges.

Narendra does not remember that Babu Jaswant Singh broke the fixed deposit for his course of electronic engineering without any hesitation. It is also true that he had to sacrifice a lot for keeping him in the hostel. He never did under table business so he had no black money like his colleagues. He could get rid of his hardships.

It was cheap yet true, when he came from Mumbai after staying there for one week he kept on repenting for many days. He could not

---

[1] Name of Indian Sweets

spend a night with flop beautiful heroine due to lack of money though his friends instigated him a lot.

Colleague Vivek made fun of him, buddy, what kind of Thakur you are? Are you? I doubt.

Tommy pulled him towards the Pomeranian bitch walking nearby. It would have been bit careless, he could get have pulled. He remembers he does not have cane in his hand. Babu Jaswant Singh brings a stick with him. How can he be so careless? He has fallen down because of it once. He could have done the same today. Such a trouble. He feels like leaving his chain behind – go – go to hell.

However, he could not leave the chain.

The Second Absence

Stench

This morning that had not yet opened its eyes with the rising sun, Babu Jaswant had already been awake the whole night and kept tossing on the bed. He was just waiting for that one ray of shine that could make it convenient for him to reach the bridge of Mayur Vihar where he wanted to reach desperately.

One day in the afternoon, Babu Jaswant Singh remembers that Col. Swami gave him his phone number, which he wrote on a slip. And he kept it under the mattress of his iron cot with the other papers lying there carelessly. He thought he gets to meet him daily. He will not need this slip ever. He really had to put lot of efforts to find that one slip.

He felt exasperated that he had uselessly kept the bills, x-ray reports, prescriptions of Dr. Saxena from Kanpur – which are definitely of no use here – he has made heap of all under his pillow and due to which he could not find even the important papers. Sorting was done because of it. Otherwise, it would have been troublesome.

He felt after finding that slip of phone number as if he has got Fortiest Fenn's Million Dollar Buried treasure.

Coincidentally with Fenn's treasure, he also found the handmade card of his birthday, by his grandchildren, sent from Trivandrum. He got emotional.

With the card, he came to know that his birthday has already passed in Narendra's house and nobody took care of it.

Narendra also didn't talk about it that it's his babuji's birthday. The birthday, which was nothing but a mere expectation of one phone call from Narendra with the warm words 'charansparsh Babuji'. He got overwhelmed and showered his blessing on him. He always used to wish him first in the morning. Then Shalu says that she has called so early in the morning so that she can wish before bhaiya, as she wants to come first in wishing. He somehow thanked his obliviousness. Is it worth to remember the date, which indicates that the age of helplessness is increasing? May be, that is why Narendra did not feel like remembering it.

While holding the slip of Col. Swami's number in his fist, he tried his number several times. Suddenly he gets conscious. With raised brows daughter-in-law Sunaina, expressed her objection, which was not very apparent but could only be understood by Babu Jaswant Singh.

Whom is he calling for last half an hour? Important calls can be missed at home. Narendra's phone is on charging in the morning. If this phone rings, there can be two probabilities. Either the phone is not working, as there is nobody at home. To know whether the phone is working or not, one can dial 197, one could dial the same number and request them to connect them on so and so number. They will come to know, what is the exact reality?

Babu Jaswant Singh preferred to get up from there and leave the phone.

Though disconcerted, his hopes were still high. He is definitely going to meet Col. Swami in the morning. It is only matter of one day that he cannot meet him. He should come out of the doubt that he is not going to meet him tomorrow. Whatever bad has happened, he has assurance in his heart that Col. Swami is not going to stick to the pain.

He knows how to overcome. He is an immense source of energy for others also. Earlier before meeting him, his mind was occupied with the trivialities and nostalgia of Kanpur; that why has he come to Delhi and bla bla like.

It will be difficult for you to come out from the memories of behanji. You will forget your pain there – Mr. Ahluwalia from Gumti had suggested – The hoopla of darling grandsons. Kids are the remedy to bereavement.

Ahluwalia must have not any computer at home otherwise, his saying would also have been changed.

He insisted that he has to keep writing him letter. He even thought of writing but the only mental obstruction, which comes across, is he does not know what to write? That he could not find the childhood of Narendra in his own grandchildren. He never had any need to find Narendra's childhood. He hadn't any real time for that. Now he has ample amount of time to play with his childhood. But now he does not come close to catching it. He tries to keeps on finding the reason – why he does not come close? These days it seems like the computer possesses him. Whatever a computer can give – he is incapable. His experience is of no use. The knowledge is limited. How can he connect to his childhood?

Dadu, tell me one thing. You have to answer quickly. It is a question of a quiz.

OK! Ask me.

Egypt's pyramids are one of the seven wonders in the world. Which is the biggest pyramid and of whose it is?

It's of fourth royal generation. I only remember this much.

Dadu, this much will not work. Malay got disappointed.

OK, tell me what is the exact height?

I don't remember it, son.

I have forgotten.

OK fine. I will search it on net.

After sometime Malay comes and tells him. The largest pyramid of Giza is called Pyramid of king Khufu and his wife's tomb with the height of 479 feet . He was sad, as he had lost the quiz because he did not know the answer. He had to submit his answer immediately on telephone to the director of Zee TV.

Knock! Knock! Knock!

Babu Jaswant Singh was beating the shut door. Doors did not open. Maybe it's bolted from inside, how will he enter? Suddenly someone whispers in his ears – Who? Who is this? Tell? Why its not getting unbolted?

Whispers do not clarify the speaker, again it whispers – listen push the door hard. It is unbolted. It remains like this.

Perhaps it was Sunday. May be, no it was Sunday. Col. Swami took him to Kalindi Kunj out skirting the Yamuna Barrage of Noida for a stroll. The orderly embellished greenery mesmerized Babu Jaswant Singh. Such a saga belvedere and it was not far from the house, he had no idea. Narendra never mentioned it. At least he could enjoy while hearing about it so what if he could not go there. How Col. Swami asked him? Have you ever been to *Mathura- Vrindavan* my friend? If you have not been there, no issues. We will make plans someday. It is not that far. Just have to cross *Ballabhgarh.* After reaching Faridabad, you will step in Mathura. Right now, we can go to *Kalindi Kunj.* We will reach Vrindavan. There is *Yamuna* as well as *Kunj.* The only one who is not there is Lord Krishna. Then he burst into laughter. What kind of foolish thing you talk about, if there already are two two Krishans?

While sipping filter coffee, he poured out his feeling to Col. Swami. He feels like learning computer these days. Though he knows that it will not be much helpful for him. Tell Krishna, what should he do!

Col. Swami becomes immensely happy and joggles his shoulder and the glass of the coffee falls down.

Never mind!

It is a very nice idea Mr. Singh he pours coffee in the cup of thermos and offers it to him and says – if you want to learn, go ahead. Learn it for your pleasure and satisfaction. Do not get into the trap of usefulness and uselessness.

To encourage his spirit, he placed his own example.

Is it my age to learn music? Tell me.

That too classical.

Felt like. Therefore, I am learning it.

To make him amaze, Col. Swami tells him that his elder daughter in law is a renowned singer of Karnataka. She has national glory.

She has deferred her programs due to family responsibilities. She keeps on practicing. After dusk, she takes bath and start practicing. Madhvi is determined. Once Shrinivasan and Sridharan will bring their wives, she is going to get free from her responsibilities. She will completely devote herself to music.

Do you know, from whom I am learning? From my daughter in law; Madhvi. He discloses the secret by naming Madhavi. Who else can be better Guru then her?

He tells him. He has systematically given betel, betel nut, coconut eleven rupees as a student fee (*Guru dakshina)* for discipleship. She conducts regular classes. Madhvi teaches him in the afternoon for half an hour.

56

On Babu Jaswant Singh's request, when Col. Swami sang in his melodious voice, it did resonate the strings of his soul. He was so engrossed in the waves of music even when Col. Swami stopped singing; he could not open his eyes for so long. He did not understand the lyrics of the song. However, the voice touched his heart deep inside.

Babu Jaswant Singh already mugged up the line Om aale Kandu aon?

For the first time, Col. Swami talked about his late wife

In her last moments, Vaidehi wished to hear this song from Madhavi. Madhavi closed her eyes and sang vehemently Vaidehi was looking at us with lidded eyes full of tears. We did not know that we were looking at her for the last time. Col. Swami got emotional or he misunderstands.

Babu Jaswant Singh also felt heavy in his throat.

He ran to Ashok Nagar leaving Narendra's amma on Singhaniya's shoulder.

When he came back, he found that she was no more.

Narendra's amma made him get up at four o' clock in the morning. She was having severe pain in her back. She told him that the pain is radiating from upper rib and going through the left arm. It's even tough to be on bed. He did not understand what to do at such late hours? He got up, took *combiflam*[1] from the first aid box, and asked her to have it. He also massaged her wherever she instructed to apply. He decided that he is going to show her to the doctor in the morning. While giving medicines he kept on asking Narendra's amma – has the pain reduced? Is it? Should I call the doctor? *Volini*[2] had given her some relief. After two minutes – she said – she has disturbed him unnecessarily. She

---

1 Name of a medicine
2 Name of an ointment

could have taken medicine by herself only but the radiating pain did not allow her to get up. Lets sleep. I am feeling relaxed.

When sparrows on the banyan tree in the morning made him get up by their roundelaying and he saw Narendra's amma sleeping soundly beside him. He had sighed of relief. Had she be in pain she would not have been able to sleep? He thought she must have eaten rice at night. She is not satisfied until she does not take rice twice a day. Despite being a patient of diabetes, she has framed a new formula to get an excuse of eating rice. She soaked few seeds of fenugreek with rice. She eats bitter gourd pickle whole year. How her sugar level can be increased? She might suffer from gastritis – she is not at all worried about that. Tried to make her understand many times but she is not ready to listen to anything. The pain must have happened because of gastritis.

Sunguniya came to wipe out the kitchen, Babu Jaswant asked her for lemon tea. Narendra's amma could not sleep because of her pain in the back. Keep hot milk beside her. When she will get up, we are going to lie that I have kept it there.

Narendra's amma never let her touch the gas.

Even after sun rises, when Narendra's amma did not move, he kept his newspaper aside and called her anxiously. His call remained ineffectual. She had never been into such sound sleep. He scrolled and touched her forehead. He moved her face. Wherever, he had turned, it remained like that. Tilted.

Dr. Saxena gave up the moment, he saw her. Mostly Diabetic patients have silent attacks unlike other heart patients. They do not suffer from unbearable pain so that others can anticipate the attack.

Narendra openly criticized his father that he treated amma like an illiterate. When she complained first, she should have taken her to the hospital. Why he kept waiting for the morning?

Babu Jaswant Singh kept staring at vaccum like an idol. Narendra could not understand how loneliness makes a man helpless and his helplessness had already started.

He accepted in front of Narendra's amma in his weak moments. She nurtured him like her own kids. She faced all his problems. She is a strong woman. He will not be able to survive alone with his bad habits. He always wanted to go before her. His salvation lay in that only. He kept on mustering up his courage to confess all his flaws and apologize for all his weaknesses of character. She is short tempered yet, large hearted. She will forgive him definitely but he could never confess it. He has no courage to see himself petty in front of Narendra's amma.

Now when Narendra's amma is no more, to think, after getting fed up with her that it is going to be a big relief if she will be no more, was so wrong. Therefore, the question, whether he was living in false hope or the false hope had kept him alive?

He cannot forget that Narendra who always bragged about his love for his mother; denied shaving off his hair for her funeral. What is there in the hair? He does not believe in pageantry. Some people are coming from outside to visit *the* company. He shall leave on the 4th day and will come back on the *13th day*. Everybody started talking about him. Or everyone was following the fashion of caring in that crucial situation. What he will do alone in the house after tehravi? He should go with Narendra bhaiya – Shalini and Mr. Chauhan suggested.

He will think about it. After sometime, he will inform Narendra.

He should not worry about his food. He will arrange something.

I will increase the salary of Sunguniya. I am going to tell her to

leave one house where she works. She will cook for him the way she knows. He will survive, he replied. Babu Jaswant Singh had

already decided but Shalini had an objection for being dependent on Sunguniya.

Keep Maharajin for household work, Babuji.

He did not reply anything.

If you ask for it, I can tell Pandey aunty in neighbourhood to get some maid for the house.

Then Ahluwalia assures Shalini.

Guddi, why are you taking tension we will send food for your babuji from our house.

Before he could not overcome the separation of his wife, he was aghast by the other mishappening. He was hell scared.

Suddenly news came – his childhood friend Harihar Dubey was no more. Harihar lived on the *Birhana* road in *Mangal Bhawan* where he used to stay in a set of two cell like rooms and one hallway. Last month he came from Kolkata where he stayed with his younger son Aditya. He got laser done for his cataract and the moment he came back, he gave him a call. He was sad that he could not meet his sister in law (Narendra's amma) one last time. He just opened the house that had been locked for past 1 year. Bats are hanging in the house. He will come to meet him once he is done with the cleaning of the house. He consoled him. He knew everything inside out. Nothing was hidden from him when Kaushalya passed away. None of his kids could pass even seventh standard. How much a PWD clerk could earn. He did all the household work. He made his kids study. He married them all. Had there been any other responsibility left?

Aditya was not letting him come back. He fought, now at least he has his own eyes to see the world, and came back. He wants to devote sometime spiritually. He is going to go to Allahabad when the Kumbh fare will start.

60

Doors had been broken after three days.

The neighborhood got distraught by the stink. Generations at Mangal Bhawan had changed. Who came when, no one was bothered.

Dead body of Harihar was lying under the bed. One hand was there on his chest. Post mortem, report found that he died of heart attack. He must have tried to unbolt the door and there he collapsed.

Babu Jaswant Singh could not see him for the last time. Post mortem turned Harihar into stenchy bale. He did not want to witness a stinky bale instead of Harihar.

On one hand, he is disconcerted with the old memories of Harihar, on other hand the smell of his body dreaded him inside. The foul smell stuck to his nose. He started igniting incense 24 hours a day. When he used to go out, he would put a pefumed cotton wick in his ear. Doctor Saxena was worried. Why his blood pressure was high? It did not come under control even after the doze was increased. Doctor Saxena made him have his six sittings with Psychiatrist. Dr. Dutta, then he became normal.

Psychiatrist analyzed his problem. It is a mere mental disturbance. Actually, it is not the foul smell but false fear of loneliness. He needs change. He should stay with his son in Delhi for some time. In fact, why for somedays? He should stay there only. There is no meaning of staying alone at this age. That person should stay alone who doesn't have anyone in their family.

Babu Jaswant could not call Narendra out of hesitance.

He called his daughter Shalu in Trivandrum. He talked to his grandson and granddaughter. Then he gradually informed Shalu – that his blood pressure is high these days. Doctor Saxena is worried about him he thinks he should stay in Delhi.

You didn't listen to me, I was saying it earlier, have you got Maharajin Babuji?

Babu Jaswant Singh cut the phone or if it has got cut automatically.

After sometime Narendra called him up – Babu ji, you please do your preparations. I will come next week to pick you up.

What is this place, My Friends!

Babu Jaswant did not remain in a state of indecisiveness for a very long time. The clock hand has already struck the set time. No there is no hope of Col. Swami's arrival. He also feels that the walk is mandatory for his health and he should start walking alone towards *Pantoon* Bridge. Col. Swami is going to scold him the moment he will meet that why hasn't he gone for walk? Didnt you go for a walk before we met. He is also feeling that his blood pressure is high these days. He had a disturbed night. He felt that sun has risen in the middle of the night. Darkness prompted him to sleep again. Morning will wake him up when the alarm rings he has to get his blood pressure checked. He should get his blood pressure checked every 15 days but the high fees of Dr. Chaturvedi do not allow him to follow this routine. Though Dr. Chaturvedi has an acquaintance with his son Narendra and his speech is completely sugar coated. It sounds like his tongue cannot ask for fees. However, while going he does not mind counting his 150 rupee fee. In Kanpur, they take only 5 Rs. to measure the blood pressure. He feels ever and again that Dr. Saxena is an exception. His fees are negotiable according to the financial condition of patient. There is no one as good as he is in Kanpur in detection of problem as well as in prescribing the medicine.

Suddenly the newly built bridge on Nizamuddin grabs his attention. The streetlights are still on…

When he reached home yesterday, Sunaina commented on Babuji- 'you always leave lights on in the room.'

'Must have forgotten'- Babu Jaswant Singh stuttered but the reply went flat on her ears.

'Being forgetful cannot stop the meter.'

He remained silent in his reply. Could he get some concession for his age? If he could have, he would have, without asking for it.

When amma died, Narendra instructed him before leaving the house.

Flat has only two rooms. One is for them and other one is for kids. There are two balconies; one is quite big – he must remember. He is converting that balcony into a room with black sliding glass. Before he comes to Delhi that room will be given to kids.

Babu Jaswant Singh is astonished when he sees the office driver of Narendra is keeping his stuff in the balcony-converted room.

When he quietly expressed his reluctance that at night he has to get up several time for washroom and it will be troublesome for him. Narendra immediately replies in defense. There is a small-attached common toilet in the balcony. He just needs commode and it is there. kids have expensive things like computer in their room. It is not possible to move them out. Apart from this, they have study table, their books, almiras, two-tier bed etc.

Whenever, he opens the sliding windows of balcony, with the cool breeze, the sight of the bare balcony of the third floor of building B appears in front of him.

In front of that balcony, there are three ropes on which the clothes are hanging. Some garments are particularly of ladies and which he has never seen hanging so openly in streets of Kanpur. And there are some big heavy boxes of aluminium and coolers which are heaped and also there is a broom kept for cleaning cobwebs and don't know what else, the sight of which put his heart out. He feels like, he has been chucked out on the heap of trash.

He comes to his senses after a long time. He consoles himself by the sight of the kite like square shaped blue sky and the bright sunlight coming through the tall standing buildings and brightening his balcony. Earlier when he came, he always slept in the living room. He could have slept this time also, but it was not matter of few days. It would have been against the aesthetic beauty of the house to stay in the living room.

First morning – he could only sleep early in the morning. He got disturbed by the wakeup call made by the lady in the neighbouring apartment to her servant. The voice was so strong that it could have shaken the paradise with its pitch. He could not sleep after that. Stupid servant was no less stubborn. Without wakeup call of the lady, he never wakes up. He felt like abusing the foolish servant. He wanted to hit the servant with his shoe that is why you are disturbing other's sleep.

Lady's voice brought such devil's luck that even the bright sun light and the kite like square blue sky too turned to black.

Dusk would fall before 5 o' clock. That day happened the same. Babu Jaswant Singh was browsing through the morning newspaper *Hindustan Times*[1] in the evening. Benazir Bhutto had come to Delhi those days and she became the headline of newspaper; courtesy star talk show of Star TV – Parvez planned Kargil when I was PM.

He was quite impressed by the bluntness of Benazir but he still could not digest the fact that why she did not speak out when she was in

[1] Name of an Indian News Paper

power and suddenly the door bell rang. Babu Jaswant Singh barely gets up for opening the door. Mostly daughter in law or kids open the door. He does not get up deliberately because he knows that he will not know the guests. Whom should he call inside and whom should he leave standing at the door – it is a big deal.

Once Babuji invited Chadha ji and made him, sit inside the house. The moment he went, they had lectured him. He had to get up to the second ring of the doorbell.

Bahu Sunaina was in deep sleep perhaps.

The moment he opens the door, he sees that big lady of the neighborhood, the same one who can tremble the paradise with her voice. Babu Jaswant Singh invites her graciously and goes to the kid's room. Malay and Nilay were completely engrossed in the bike race game and stuck to the joystick. However, he hasn't liked the way they have become completely deaf and dumb. He only told them to wake their mother and tell her that the aunty who stays in the front building has come to meet her.

And he again got involved in the reporting on Benazir. But he gets disturbed after sometime. He heard that Sunaina and that lady are not having a conversation rather they are having a scuffle. There must be some society issue. These days it is very common with unsatisfied residents who keep on blaming recrimination. Sometimes it is because of high parking charges and sometimes raised maintenance costs. One other complaint is that, mostly members do not attend the meeting of general body. When the proposals have passed then they show their objections. They always blame committee for its autocracy, whenever there is a meeting – its mostly on Sunday at 10 o' clock. And the members enjoy their Sundays and don't get up till 10 o' clock Narendra is a member of committee he heard it from daughter in law Sunaina.

Babu Jaswant Singh becomes aghast, when his daughter in law enters the room and she blows a gasket at him.

Why the hell are you ruining our image in society? He should keep his age in consideration. If he is too long in his tooth, so he can go to red-light area anytime. He does not get low pension so that he cannot afford all that. At least do not quench your sexual appetite off teenage girls of society. At this rate, they will not be able to show their face in society.

Babu Jaswant Singh stood stupefied and could barely open his mouth.

What has happened? What I have done?

You don't know what you have done?

If you are not going to tell me, how will I get to know?

You, you put off your payjama while seeing Mrs. Rawat's daughter?

Babu Jaswant Singh had egg on his face.

I am her grandfather's age why would I do such a cheap act?

That you know better. Mrs. Rawat came to complain and also threatened – If your father in law does not stop his jollification, they are going to lodge a written complaint.

She has also said this she will go to the police if needed.

Trust me bahu. I have not done any such sick baudy act. Don't know from where the self conceit in his voice had disappeared.

Stop it, babuji. There is no need of any explanation. Keep check on your devilment. It's a matter of thinking why any mother would blame an old age man unnecessarily? What does it mean?

And her daughter Neena! Do you have any hostility towards her?

Trembling with rage, daughter in law Sunaina left Babu Jaswant Singh in the witness box.

Babu Jaswant Singh has no idea to whom he should give an explanation. He had been condemned without crime. It is a weird irony that our own people are not ready to listen to us.

It is not like that, he had never seen the neighbour's daughter. He had a glimpse of her while she was hanging clothes. He always felt that if Narendra would have had a daughter she could have created some warmth in the drab atmosphere of the house.

With his shivering hands, he took off his glasses and kept it on the pillow. He lay on the bed like a lifeless creature. For a moment he felt, his head was so giddy as if it was racing with a car. As if after today, his head would be decaptivated forever. So that he would get rid off all the sorrows, happiness, disappointment, indignations, expectations. Its good if he gets rid of everything.

How a daughter in law can be so rude to her father in law.

There is no place for dialogue- Straight away the verdict.

He kept his spinning head inside the pillow and cried like a baby. The bed started trembling with his hiccups.

At dusk , Narendra hadn't come in his room, which he had now accepted that it is his room; to know- How was the day babuji?

Nilay brought the evening tea. Four biscuits are there in the plate – have some tea. There was no warmth in the statement. Kids must have heard the scuffle.

Although Tommy kept on growling there, he was still on bed. There were some differences in its growling. It was inquisitive. He felt that humanity still exists in the animal.

The thing, which irked it, was why Tommy's chain was so small. If it were long, he was sure, it would have come and touched with his paws – get up! Won't you take me to the walk? However, Nilay was told to invite him for dinner but he denied.

Babu Jaswant Singh had wondered that his sleep had not betrayed him at all. He had not any sleepless night. Though, his other family members had tried their best to make him feel like hell.

He could not set alarm that night but he got up exactly at the same time.

Unlike other days, Col. Swami was standing here on *Mayur Vihar* Bridge. He welcomed him warmly.

What is wrong?

Let us sit.

Life is a second name for struggle, Mr. Singh.

Babu Jaswant Singh rubbed his face with his hands and tried to control his emotions. He does not want to break down in front of him.

How many struggles one can bear? Col. Swami can't understand it. Actually, he is quite far from stings of blames and accusations. He has no idea about that embarrassment which an old tree had to face as a bard sews. His sons, daughters in law and grandchildren, have pampered Col. Swami. Walls of house are always lit with laughter and conversation – in heart of hearts; he always had this dream of seeing the hooplas of his grandchildren in the house at Kanpur. So that they write their guffaws and carve men on walls. They will draw trees, going to fill colors and spread the colors all over the house. The dropping faces of kids… if he dares to enter empty handed in the house, then he has to rush back to market to bring something. Col. Swami did not take much time to guess that whatever had happened is serious. Somebody has

tried to shatter him to the core. Foundation cannot be trembled by a mere breeze.

Let us sit somewhere. We will go for the walk later.

They sat near the shore of the Yamuna after crossing the *Pontoon bridge***.** Garlands of balls and polythene bags were floating in the stagnant water. He restrained the feeling of disgust and Col. Swai kept his hand on his shoulder.

What happened my friend? I have never seen you so disturbed.

Tell me the problem… grudges in the heart will pain you much.

Unleash it, it is very important to lighten your heart.

A cold sigh followed by a complete silence remained between them.

The lady who resides in front of my room in building B has complained against me to my daughter in law.

I have opened my Pajyama after seeing a teenage kid of that woman.

The moment he heard it, he takes a long sigh of grief.

I have not done it. I cannot do it.

Col. Swami turned his face towards him. How this misconception has happened?

I thought so. I have pondered a lot. I realized. May be, the windows had remained opened sometime I have complaints of chronic piles. I have to apply medicinal cream on warts that time…

Have you told the reality to your daughter in law?

She is not ready to listen anything.

It is my kind suggestion. Mr. Singh, you go to that lady and tell her the truth. What can maximum happen? She is not going to believe you. It does not matter.

Why are you burdening your heart?

Why you want to stay with the burden?

What if Narendra or his wife would feel offended, ?

Suddenly Babu Jaswant Singh changed the topic and asked him a weird question. What do you think about death?

To drive him out from his unstable mental state, Col. Swami deliberately behaves indifferent and says in jest – I do not think about death. He does not consider it so important. Whenever it is going to come, it will come. No matter in which form, it is going to make you suffer for a week, a month or an year or it can grab you in its claw in a moment. It does not matter much. But don't you think it's a mockery of life, if we keep on cribbing about those sufferings which have not come yet.

Sir, live life king size – and on your own terms – your way. Col. Swami clenched his hands with his warm spirited jest.

When they got up from there, the soft touch of Kaas flowers dancing with the wind touches Babu Jaswant Singh. While walking alone on *the Pontoon bridge*, Babu Jaswant realizes that he was not alone. Col. Swami was with him. He is still with him.

Hide and Seek

The moment he enters the room, Narendra had objected.

He realizes that Col. Swami who was there with him during the walk is no longer by his side.

Babu Ji, you left the lift open on the floor.

Actually, son, I forgot my muffler when I was going for a walk. It was matter of few seconds. I thought, I am going to come in few seconds.

Has someone said something?

Leave what somebody has said. You take care in future. Upper floor residents might face problem. Moreover, lift is not an issue. You press the button and it will come again.

Babu Jaswant Singh feels disconcerted. The waving tail of Tommy who is happy to see him back does not at all mesmerize him. He started mumbling while opening his laces. Everybody is ready to pounce on him. What is the big deal if I have left it open for some time?

Nobody has complaints against kids in the house. People are complaining against oldies here. May be people in this society will never get old. Neither are they going to lose power nor memory. They are born immortal; neither will they suffer nor any miseries.

Someone has complained against me to Narendra. That is why he is reacting so. He has not mumbled, his voice is quite loud – he has not dreamt about it.

Babu Jaswant Singh knows about Narendra's routine- he has seen every morning. Narendra sits on a computer chair and sips his morning tea while checking his email and replying to it. He has maintained proper contact with his friends who are working abroad. Shalu mentioned that Narendra is applying to a well-known company of the US. Most of his IITian friends are earning in lakhs and leading a comfortable life in abroad. He is lagging behind due to his bad luck. He does not want to lag behind any more.

It is Babu Jaswant Singh's generosity that he has accepted his fault with honesty without denying it. Otherwise, Narendra has no idea how much trouble he has to go through in the morning due to lift. He cannot have any idea. It is not possible for him to get up so early in the morning.

In the morning, everybody uses lift including newspaper boy, milkman, house cleaners, car cleaner boys etc. Everyone needs newspaper in the morning at the earliest and the newspaper boy take special care that everybody should get newspapers on time. They are serving whichever floor they will stop the lift on that floor. Milkman does the same thing. Servants and maids consider their monopoly on lift.

Narendra even does not know after waiting for long time for lift, Babu Jaswant Singh sometimes climbs down the stairs. Tommy does not like it. It doesn't move from the lift. Oldies have to suffer ultimately. Oldies need escalators more than youngsters do. Owners need it more than servants do. However, one should not think like that. They are also humans but the point is he never complained about it either to society or at home. He never gets lift in the morning.

Though in full grief, Babu Jaswant Singh thought he might be holding a one-sided opinion. How can people notice when there is barely anyone old in the society?

Before Col. Swami met him, he himself was trying to find his age mate in the society. He has not seen anybody apart from Mr. Bhatt of C Building. Mr. Bhatt usually met him in the evenings only. Then he got to know about him. He cannot go for a walk in the morning. He cannot bear the cold. He prefers walks in the evenings. His evening starts from 4 o' clock. He always goes to nearby *Vishal park*. It is not possible for him to go very far. It is not that safe and why should he take risk?

Mr. Bhatt also enhanced his knowledge that sometimes back, all the old age people of nearby societies (*Kala Vihar, Manas, Nirman Vardhman Samachar, Kirti* etc.) formed a laughing club. They form this club to keep themselves healthy. They used to assemble at 8 o' clock and tried to laugh out loud together. The laughing club ran for two or two and half months. The youngsters who used to come for their morning walk couldn't stand the loose skin, artificial dentures and devilish laugh Ha.. Ha.. Ha. Their logic was. It more looks like outcry rather than laughter. How long they could bear ominousness. Protest started. If they want to laugh, they can laugh at their houses. Park is a public place. Tomorrow they will start crying together claiming it is beneficial for health. How can they bear that? They got scared. They met next morning but did not laugh.

It is better to avoid a fight with youngsters. Their laughing clubs converted into satsang with the change of program, timings were also changed. Mostly there was nobody in the afternoon. Somebody used to take tape recorder out of his pocket and listened to the sermons of Asaram Bapu.

Oldies used to listen to sermons and used to get rid of phantasm. Some of the old men got their nirwana through sermons and passed away. New old men have replaced them.

I am also waiting for my turn Mr. Singh. Whenever all mighty wants - Mr. Bhatt raised his hand towards the sky as if he was not referring to God but death.

Whenever Mr. Bhatt met him, he always requested him to join the meeting.

If he wants, he can take him along.

He was in a bit of a dilemma earlier.

His practicality always instructed him to stay away from the residents of the society. What if he opens his mouth about his family by mistake, if daughter in law Sunaina comes to know about it, she will start stinging like a wasp.

He will be court marshaled.

The tea was so sour and it has become hard for him to take single sip. It seems like there are too many lemons in the fridge.

If Narendra's amma had done it, the tea would have been thrown out in the drain.

Until the tea leaves in the boiling water had not produced the color like old monk with the proper amount of lemon drops in it, then only he could take that tea. Daughter in law could not learn anything from her efficient mother in law. The only attribute she has is how to hen peck her husband.

He remembers one unpleasant incident with the sour taste of tea.

He still believes that this attribute of daughter in law Sunaina's is responsible for making Narendra irrational.

Narendra said it long time back he was going to fulfill his parent's wish of visiting *Badrinath and Kedarnath*[1] alone. He just needs one free week out of his busy schedule. Narendra could not find that free week and his mother passed away.

One day Narendra informed him. It was September, he suddenly made a plan with his friends for Kedarnath. Everybody is going in their car with family. Kids will have to take leave from school. He has to abide by what his friends are saying though he had plans to take them. It will be troublesome to take them to *Kedarnath* at this stage. Cars go straight to the *Badrinath* temple. There will not be any problem. *Kedarnath* will be troublesome. It is not a joke to climb up 13 kms. There is also problem of oxygen at high altitude. One can suffer from pneumonia too, if it starts raining. There is no emergency medical help for pilgrims. News of mishappenings comes often. Old age men with the palanquin bearers fell into ditch. It is difficult to find the dead bodies.

There will be no problem to stay alone there. He has already talked to the reliable peon of the office.

For a week, his younger brother Shyam Narayan will stay with him 24 hrs. He is good at cooking on gas. For picnics etc. they usually take cook Shyamnarayan along with them.

They have written the numbers of both house and clinic of Dr. Chaturvedi on the calendar. You can call him any time. He is going to talk to Dr. Anurag personally that he is leaving Babuji on his responsibility.

Still you can tell your wish.

Babu Jaswant started fuming from tip to toe.

---

[1] Name of an Indian pilgrimage

He planned everything already, now they are asking his wish. That too by keeping finger on his mouth. His patience astonished him. He has to accept. Shravan Kumar is a matter for tales.

Infact Col. Swami has shown the sight worthy places of Delhi.

He once said to Col. Swami if he ever wants to go to *Kedarnath, Badrinath* so he can tell him anytime to pack his bags even next week only.

He said just like that, he has not seen any film for past seven years. On third morning, Col. Swami informed him to get ready and meet him at 2:15 on Glaxo bridge. They are going to watch *Aks* in *Delight* cinema. He likes Mast-Mast Ravina a lot. Elder son has bought two tickets while returning from his company.

He has hiccup. He is going to dial 197 and ask for Col. Swami's address by giving his number to the operator. He is also going to ask that why this number is not working. Is it out of order?

197 (exchange)informed phone is perfectly all right. Perhaps there is nobody at home. He can write down the address E-303, Sec-26, Noida.

Phone is all right, still nobody is picking it what does it mean?

Old record played a new dilemma. Nobody is at home is bit questionable. How is it possible?

Col. Swami has a *Jonga*. He mentioned it once. He also said that he does not drive anymore. If he has to go alone to some party, like to some army officer's club etc. he usually calls taxi at his place. He is free when it comes to drinking. If he has to go with family they all go in Jonga.

It is a good vehicle. All the family members can fit in Jonga. They sometime sat on each other's lap and teased each other. They played *antakshari*, imitated *Anu Kapoor*, criticized the obscenity of *Boogy-boogy*, considered *Doordarshan* responsible for the cultural deterioration as well

as discussed the lame policies of Government. They made faces when they reach the destination. Had not they just started. Ch.. Ch.. Ch.. This is bad. Shyamali became sad. It was a compulsion my dear. They came to watch a movie and that too in *Chanakya*. They will have to bear the noise of Anu *Malik's* music in the theatre. He will not be able to hear Shyamli - the great musician. With her voice, one can clearly distinguish between the noise and harmony. Shyamli- my dear! Don't be upset. We will give you the chance of demonstrating your inefficient singing abilities while coming back in Jonga. Will you sing?

She frowns to her husband and complains against him to the Appu. Please tell him to stop making fun of me. Enough is enough.

What if he met with an accident in his jonga?

Uff. Babu Jaswant Singh becomes stunned for a moment.

You have to drink my friend.

Tell me, what do you want to drink?

This teetotaller thing will not work in front of me.

I agree that you have quit drinking long time back. But how does it matter? You can restart it. Try to have it again.

Col. Swami smiles as if he has disarmed Babu Jaswant Singh from the other side of the table.

Do you know Mr. Singh? To have a drink after longtime, is as exciting as meeting your ex-girlfriend again.

They both were sitting on the first floor in Nirula's in Noida.

They bathed in the mystique dim light of the music that leaves no chance of leaving any face unread.

Roasted salted peanuts that Babu Jaswant Singh was finding it like a feast that, he had been getting after a long time. Though he realized that it is not easy to chew with few teeth but his hand was

helplessly gone to the plate only. He would have to bear the pain of indigestion in the morning.

Col. Swami ordered for his favorite whisky- *Royal Challenge* and *Bloody Mary* for him.

He decided with Col. Swami in the morning. He is bored to have drinks alone at home; he wants to have drinks and dinner with Babu Jaswant Singh in Nirulas. He is going to pick him by taxi, sharp at 7 o' clock from *Glaxo*'s gate. He is going to give him a call before he leaves from his place. He should get down exactly after 12 minutes. He should not be worried about how he is going to come back. He is going to drop him.

Narendra did not return, yet kids were engrossed in watching Aladdin after practicing skates in the basement. Sunaina was in a bad mood. They should leave the computer and finish their homework. He had to inform daughter in law Sunaina that he is not going to have dinner at home tonight. He is going to Nirulas in Noida. Sunaina ignored his voice and replied rudely. It is not possible for her to wash his bloodstains from his payjamas and underwear in machine. He has kept a *rin* soap cake in bathroom. He can rub these stains with his own hands before putting it in machine. Kids white uniform is getting fade because of this carelessness.

Babu Jaswant Singh felt sad.

This was not the right time to talk about it. She could have silently indicated later, that what he should do to get rid of such a troublesome disease. May be Sunaina could not bear his happiness and excitement.

He bleeds with farts. His clothes get stained. He is himself tense because of it. She is actually right but what to do? He is taking medicine as well as applying the tube. He is scared of surgery. The matter is serious yet it has been deferred.

He is deferring.

Col. Swami suggested him to buy pads. Wear it like ladies. The instructions for the use are usually printed on the packet. The problem will be resolved to some extent.

Babu Jaswant Singh could not control his laughter after hearing his suggestion and made fun of him. This is all that is left. Now this too shall be done.

He decided that he is going to call and get pads in the morning from Arora chemist. How many packets should he ask for? Neither he had a clue nor Col. Swami knew about it. He is going to ask from chemists. It is useless to talk to Sunaina. He remembers. Once, his medicines were finished. He told this to Sunaina. She gave him the number of Arora Chemist. So that he can ask for the medicine on phone. He is going to bring medicine at home and will take money from you.

He felt disheartened. Daughter in law Sunaina must be thinking that Babu Jaswant Singh got so much pension. He should spend. What is the use of being stingy?

Fathers do take from their sons. Is not her husband his son?

It is a different thing. He has the money. He also puts it before asking for it into Narendra's pocket. Infact he also feels that he should pay when he goes to the market. He always brings something from Malay and Nilay. He also likes milk treats. He has his share in the shop itself.

Col. Swami ordered a second peg for Babu Jaswant Singh and for himself as well.

By the way, Iam reminded of girlfriends by drinks- have you ever been in love apart from your wife?

He had a quizzical smile on his face.

He suddenly felt, nothing happened after bloody Mary but after this question, all of sudden Shivani appeared in front of his eyes.

His heart throbbed at high pace and he could feel the heat of his sighs.

He was amazed. The heart never grows old.

Babu Jaswant Singh controlled himself. As if, he had turned his back to Shivani.

He also realized that he has asked him to dig out his deepest secrets.

You tell me about yourself.

Me? Col. Swami suddenly got flustered. He suddenly had a big sip. He takes some time to gulp it.

Yes! You! Babu Jaswant Singh becomes almost sure of what he has asked. The memories brought a smile to his face.

These days I have fallen for the last love of my life. The silent love, not letting anybody knows about it. I will blast it like pokharan someday. I make excuses to my family. I so want to make *giligadu* meet the love of my life. Love is also getting impatient. I have talked about you too.

She said – You are lucky Colonel. I envy you.

Col. Swami is exchanging letters with Anima Das who lives in Mumbai.

Col. Swami is trying to understand Anima Das and Anima Das wants to understand him. The distance of miles is being reduced, word by word. They are getting close and they have a belief that this distance will be covered in sometime. They also believe that it is important to know each other well. Whenever they are going to meet, they will not behave like strangers.

So being acquainted with each other's faces as well as personality will help to bring intensity in relationship. Both have counted their grey streaks and glares of experience. They both do not want to waste the golden moments in introduction. If it happens like that then Anima Das feels, it is a mere wastage of time. Both are desperate to step forward to cover the distance. Anima Das says that before covering the distance of miles, they are going to measure each other's weaknesses. Those weaknesses that have left their pasts unread.

Anima Das has a computer. Col. Swami also has a computer. They have chatted online. However, lately Anima Das realized one could not describe oneself online. Moreover, it's difficult when you have decided to describe yourself completely they want to be precise the way they have described in writing. Anima Das felt deep inside, the fresh innocent vibrance of feelings can only be touched completely by letters. She is going to write herself in letters.

You can sleep with the letters keeping it under the pillow. Letters do not weave dreams; rather they bring reality to the imagination by touching the words on the letter with her hand. Anima could feel the touch of Col. Swami's fingers. You cannot keep computer under your pillow, computers have different secret corner for everybody but letter belongs only to them. They can have their own land of imagination and sky of hope. Anima Das needs her own space where nobody else can disturb his thoughts in her world.

Anima Das is making a big file of her letters.

Col. Swami has also made file of her letters. Now he feels that they should meet very soon. How will be their first meeting, where to have it? Should it be alone or with family – his family or her family.

Anima Das has sent her black and white pictures as well as coloured pictures. She has a very serene face, there are three wrinkles under her eyes, and a fourth is starting out under her left eye when she

smiles. One can see sharp pouts near her lips. She has two lines on her face as if somebody has drawn it with the ruler she will look more graceful with few more wrinkles. Why is there no bindi on her face? Col. Swami asked her without hesitance. Plain forehead brings melancholy to her face. He cannot bear it. He wants to see a big bindi on her face. Well, will she be able to do it for him?

Next week Anima Das sent a picture of herself with a big bindi. Col. Swami noticed that this time as compare to the last coloured photograph, she has put mild lipstick on her lips. Col. Swami loved the glowing face of Anima Das.

Anima Das has written an English poem for Col. Swami. She has written that without moustache his face looks like that narrow street which is so pebbly that it scares its occupants to tread on.

How many days it takes to grow a moustache?

According to her, I should keep a moustache and the pictures of the growing moustache should be sent to her. He should not be worried how to maintain the moustaches. She is only going to meet when he will have a moustache. He has a smart personality. He can very well maintain them. If he is not able to, he can go to salon to get it trimmed. Moustache should be like handle bar, the way it is in the pic of 1971 during India Pakistan war.

Anima Das is completely into Col. Swami these days after seeing his last picture.

She has written the way she wanted to see him, Col. Swami has exactly the same high and mighty personality.

Anima Das wrote – does he remember that heart rending incident, which, he described that day? That bad phase was the most challenging time of his career. When his dear friend from Gorkha regiment at the border of Kutch; to shove off Pakistan army, met with a bomb blast and

turned into a piece of flesh. That time he decided only his friend is a martyr. He was saved like a coward. It happened because he wanted so. He is not going to keep a moustache ever. He has no right to keep a moustache. The moment he returned from the border, he shaved his moustache.

Anima Das also wrote this to Col. Swami that it is the right time for both of them to meet. Anima Das really likes *Nainital* a lot. For the first time she wants to meet him in *Nainital*. There is a *Hotel Classic* in front of Naini lake, from its balcony one can also have a view of *Naina Devi* temple, one can hear the evening prayers as well as have a view of *Sherwood school*. One can also see the reflection of high peaks in the big lake in the daytime. Next month i.e. December, she had already booking the two rooms in *hotel 'classic'*, she can book it from Mumbai she will sent the dates asap. Col. Swami does not have to do anything. He just has to reach *Nainital* with woolen clothes. Anima Das will reach Nainital via Delhi. She is going to stay one day in Delhi. She will not be able to tell where she is going to stay. She wants to meet Col. Swami for the first time in Nainital. Do not worry. She will take care of everything in Nainital and stay there as much as she wants. There is still one and half month left in their meeting.

He is going to inform Madhvi, Anusha and Shyamli exactly before leaving to Nainital.

He does not want to be in the mess of travelling in buses. He is going to hire a car. Anima Das has written a long poem for him. New. In eight pages poem, Anima Das has mentioned the date of meeting in Nainital i.e 28th Dec. There is a probability of snowfall during that time. It is a time of New Year. This is the best time in Nainital. He believed so. Col. Swami was amazed by the eight-page poem. A poem written by a poem.

Col. Swami has brought a photocopy of Anima Das' long poem so that he could give it to Babu Jaswant Singh. Please read it at home and tell me how it is during the morning walk. Has Babu liked his Anima's poetry?

How this channel started, Col. Swami's face was glowing pink as if someone had sprinkled the colour of butterfly wings on his face. However, there was dim light in the room but he could not hide the vibrancy of the colours of love from the primed vision of Babu Jaswant Singh.

Actually, it happened like that. One Sunday morning, after coming from the morning walk Col. Swami read Anima Das's interesting advertisement in matrimonial column. "A pensioned widow is in search for a widower or a single man who can be her partner in her last stage of life. She is free from her all responsibilities. Her son is married and her two daughters already have young kids. Kids are engrossed in their family life. She is sufferer in loneliness. Willing candidate can send his photo and bio data.

Col. Swami was quite impressed by the advertisement and that too coming from a woman. Others might see it as an offence. Doesn't matter. He saw it as a golden chance. Col. Swami decided he is going to send letters to Anima Das. He sent his biodata, photo and family photo on the given address. He clearly admits that initially he was not that serious. According to Anima Das's conditions, he is a widower but he is not single. He had a huge family.

He had been desperately waiting for her reply. After sometime, he realized that he had failed to show his credibility but he was amazed to receive her congenial reply. His introduction impressed her a lot. She wrote, she would like to stay in touch with him in future. After a long time, she has found as compatible a man as him. She is sending her email address. Would he be able to send her emails?

Had Col. Swami gone to *Nainital* suddenly? There is a possibility that he had no plan. Anima Das might have informed him by mailing him that he has to reach Nainital as soon as possible.

But family? Nothing is going according to his speculation. There is a possibility that they decided to meet each other with their families. He has gone to Nainital. Possibly, he will come in a few weeks.

Might he have thought, whatever they are going to decide, they will take families' consent. Therefore, there will not be any chance of any grudges and disappointment. It is right actually. It should be like that. So that there will not be any objection from anybody. He is darling *appu* to all. Daughter in law Sunaina calls him Babu ji where do you want to have food, on the table or in your room?

I am going to come to the dining table.

Babu Jaswant Singh proceeds towards dining table. He wants to sit with kids. He is pleased with Sunaina's call.

Tommy is engrossed in eating his chapatti crumps in milk. He closes the door on it but Tommy completely ignores him.

But suddenly he feels blackout. He must be exhausted.

He is having headache. Perhaps due to cold. He needs warm sun lit room. But from where? After that humiliating incident, he never dared to open the sliding windows again. There are some benches in the garden in the society. Some people take advantage of that. Just, he is not able to do it. One reason is that he does not want to get upset by the glances of people out there because of the humiliating incident with the neighbourhood ladies.

Long Poem

Babu Jaswant Singh has habit of taking a power nap after having lunch. He tried his best to leave the bed after a short nap. He wanted to sit on a chair with table. He does not have a table and a chair here, so he thought of sitting while taking support of the pillow. No matter if, they are old, he should open some book and read it. But as if the books have some enmity with him. He barely reads one-two pages of a book and feels extremely sleepy. Constrainedly, he likes to read books at night. The moments he starts feeling less sleepy, he starts reading his book. He starts feeling sleepy again. Certainly, he feels grateful to Rabindranath Tagore and Premchand, that they have kept him off sleeping pills. Babu Jaswant Singh has no idea about these current writers whether they are that efficient or not.

After getting no solution for his afternoon trouble, he becomes extremely worried. The problem of belching started from Kanpur is not letting him sit comfortably in Delhi. His burps make Sunaina feel filthy that she feels like puking out everything she has eaten.

Morning walks might have improved his health but his stomach has been denied its healthful effect completely. Babu Jaswant Singh takes balanced diet still he does not get that, with which the machinery of the digestive system would work properly. He misses Narendra's amma

terribly in such situation whenever she used to go out in market for buying household items. She never missed to buy digestive candies or powder. They used to gives him good relief at least for a few days.

Sunaina always wanted to shoot him with her comments and when she was not able to, she always chose Narendra's shoulder.

You should walk in your room after the meal.

Which room?

That is your bad habit – You always take everything otherwise.

You will never get old Narendra?

It's not the matter of young or being old – it's a matter of adjustment.

Right – Why don't you give this suggestion to your wife? She should be taught how to treat old age people? Sneezing, farting or belching is nowhere related to old age Narendra.

Whoever is having bad digestion will have to suffer these problems. Narendra avoided the debate and went to his room. Though the room was locked, the aggressive sounds from the door left him like a stranger in that house.

Meanwhile Babu Jaswant Singh was lumbering in the room and massaging his neck, so that he could burp easily.

That time Nilay came and knocked at his door and informed him that he had a call. Babu Jaswant Singh became very excited and threw himself to receive the call. Col. Swami had reached back.

He got disappointed by the flustered voice of a girl on the phone, the girl enquired after saying 'hello' – May I please talk to Uncle Jaswant Singh?

Uncle? Who can it be, who is addressing him as uncle? Girl was quite descent while talking.

Yes, speaking.

Uncle! Sumitra here… from Kanpur. The eldest daughter of Netaji (leader). How are you?

Netaji. Oh yes, daughter of Raam Khilawan Yadav. He suddenly recognized her and become vey happy.

I am fine dear. Babu Jaswant Singh replied. He understood. He will be able to talk to Sunguniya.

Sunguniya came on phone. The disconcertment due to the absence of Babu Jaswant Singh made her voice choke. Babu Jaswant Singh complained – Why haven't you called me for so long? Sunguniya expressed her helplessness. How could i? Only Netaji's daughter helps her make the call, that too when nobody in the family is around. She was not here too. She was in Lucknow for past two and a half months. She was there for her training. Then she went to Banaras after her internship, so that she could select a bride for her elder brother. She has returned yesterday morning. Now she has dialed the number hence she is talking to her Master. Master, please try to listen to me carefully. The Master is miles apart. If Sunguniya wants to have some words of wisdom, whom should she seek? There are many who are ready to instigate her. Netaji is compelling her to join his party.

Election will be declared soon in the state. To strengthen the position of society in the state, it is very important for backward classes to unite in one. They have to shake the throne of Brahmins and Thakurs upside down. Then only they will be able to attain their respect and dignity in the society. They have to build their own future. Our party should come back in future.

Netaji was suggesting that Sunguniya should become official member of his party B.S.P. He will help her out. After becoming the member of the party, she has to work wholly- solely for the party. There will be the regular attendance in the party office. Party office is in

Hoolaganj. She will have to travel so much. Netaji has also instructed her duties in the office. She has to serve the guests. She has to keep an eye on those fishy people who try to enquire about him that who is the black sheep. Who is against them? Who is trying to stab him? Certainly, they are going to consider her an ordinary woman and will not be that careful while talking about their secrets.

Netaji has also instructed here to visit the slums so that she can meet folk of her cast and make them aware of the party. Brahmins and Thakurs have always been molesting their women. They did not let them survive. They have treated them like soles of their shoes. They made them work and did not pay. They peed in their mouths when they demanded their payments. They chopped and killed them and threw them into pits and drains. But this won't be tolerated anymore. The days of the reign of Brahmins and Thakurs are over. Now we will rule them and are going to pee in their mouth. Ten people in one mouth.

According to Netaji, Sunguniya will have to leave all other places, which she used to visit. He is giving her dreams of having her own residence once he wins the election. He is going to arrange a residence for her. She neither has to serve any thakur nor any need of their mercy.

He will make new slums near *Swaroop nagar* and she is going to have her own house. She is going to get her payment from party office. Eleven hundred rupees per month on the 10th of every month, Netaji has also proposed one other offer – Sunguniya should go back to his in- laws. Netaji will make her pradhan of Panchayat. Nobody will dare object to the choice of Netaji. They will be shot dead.

When she refused to go back to her village then Netaji compelled her and asked for the reason that why she doesn't want to go? She should not worry about her kids. He will arrange their admission in village only. Constrainedly, she had to open her mouth. Master! Please pardon me. There was no way left. She made her point clear to Netaji.

She had not suffered at the hands of Brahmins and Thakurs in the village. Infact the close ones considered her a weak woman. Her own have made her suffer. On the thirteenth night, her brother- in- law tried to molest her. He threatened her, if she dared to raise her voice; he is going to chop her and throw her in well in the morning. She was scared. She zipped her lips. This sufferance was not enough. They arranged her marriage with a middle age widower before the thirteenth day of mourning so that they would not have any need to give her share in the property.

There are many threads woven together. She is somewhere repenting already for revealing these incidents. Master is a witness. The goddess like woman has taken her in and given her refuge. They filed a report against her brother- in- law and took restraining order that he will not dare to be around their bunglow.

Sunguniya made it clear to Netaji- if he does not like, doesn't matter. Please let her nurture her kids. Neither she wants to work in the office nor does she want to become Sarpanch. She will work in their house till the time they want. She is obliged to him for the admissions in school. Master! Kindly say that whether she has done the right thing or not.

Babu Jaswant Singh got emotional after listening to her plight. He only said he completely agrees to her decision. He believes that she will never take any wrong decision. He has one request to Sunguniya please do not address him as Master. He likes her when she sometimes addresses him as Babuji.

Babu Jaswant Singh also knows that she has not called him to seek suggestion only rather she wants to inform him about her decision. Sunguniya is not ignorant of the greed of the politicians who try to tempt helpless and needy for their own benefits. Actually, in garb of cast and

creed, they are trying to create a utopia in the eyes of sufferers like her so that they can fetch maximum votes.

The moment he lies down on bed, the thought suddenly perturbs him that what kind of elder he is? He had forgotten to ask whereabouts of Raamwati and Somwati i.e. Katyayni and Kumudni. Infact, that crazy Sunguniya was so engrossed in cribbing about Netaji Raam Khilawan Yadav that she forgot to inform him about the children. He would also like to know that whether they are studying and learning anything. How much they have learnt. Do they tell something after coming back from school? Do they have copy, books, slates etc. to study? If she needs something and she is short of money, he can send it via money order.

Although Babu Jaswant Singh never talked to Sunguniya's daughters ever. If he ever called them by mistake, they used to get scared and stood there in one position. He told Sunguniya that she should ask the chidren why they are scared. He found a way out finally. He started bringing something for the kids every time he goes to the market. Still they did not come close to him. Ultimately, he has to give chocolate wafers to Sunguniya. His ardour compelled Sunguniya to build up friendship between them. Like she asked her kids to peep in his room whether he is awake or not? Ask the master that should she prepare tea or not? Go and give him the newspaper lying at the door. The eldest daughter Raamwati i.e. Katyayani became bit comfortable with him. Other two were like her tail while entering his room and ran off once she left the room. As if, some dog is chasing them. Dog – Yes dog. A smiled appeared on his face like a bubble after a long time, that too in his room in so-called house.

Babu Jaswant Singh remembered that ideally, Katyayani admission should have been done by last year only. Kumudni's admission should be done by this year. Raamratan is too young. Narendra's amma was always worried about her girls. The moment maid

goes out of the house, these fool hardies try to jump the gate. She believed that if they were in school, they would sit at least for 4-5 hours in class and away from the house. If she were alive, she would have had admitted Raamratan to school.

Because of this, Narendra's amma went to near by govt. school many times. The only obstruction was their birth certificate. She was born in a village. Principal suggested her to go to the panchayat, get the birthdates confirmed, and get the certificate stamped by them. The children will get admission. Raam aasre was alive that time. He said that he is going to village for some work. After that, he will get their birth certificate attested. Nevertheless, one cannot change the destiny. He went and never came back. Sunguniya could not have gone to village. The only alternative left is a magistrate. She could have arranged some meeting with him but Narendra's amma expired. Netaji has an altogether different status. Nobody can say 'no' to him.

Babu Jaswant Singh was feeling sleepy after sometime. He was awakened by Sunaina's voice. Sunaina! in his room? Is he hallucinating? Hallucinating things is weird. He had habit of pissing in the bed till very old age. In sleep, he always felt like as if he is pissing in washroom near balcony.

It was Sunaina only. She kept his tea and biscuit in the tray. Kids might have gone to playground. However, he liked her coming to his room. He is not sure whether she liked it or not. Biscuits are fresh and crispy. Many times, he realised that she had given him soggy biscuits. Daughter in law Sunaina must have considered him as one of the trash in her house.

Dinner, unexpected hospitality was shown to him but things got unleashed very soon and Narendra came to the point.

Narendra told that Sunaina had been to the bank and found that suddenly the locker prices have risen. Why doesn't babuji surrender his

locker? There is no meaning of spending rent uselessly. Anyway, there is no need of two lockers in one house. If things are scattered, it is more difficult to manage.

Narendra offered his services. If Babuji agrees, he can go and take leave from the office and go to Kanpur. He knows that Banks are open on Sundays too. They will do their work in the morning and come back in the evening by *Shatabdi*. And they will call Sunguniya to clean the house on Saturday.

Sunaina has one more wish with which Narendra also agrees. Amma;s sarees are hanging unkempt in Godrej almirah. They are going to be spoiled if not taken care of. Rather it is better to put them to use. Sunaina will wear them with charm. When Amma was alive, she kept on telling Sunaina that these expensive sarees are of no use to her. She is really deserving of them. She kept some of her sarees for her before leaving for Kanpur. However, Sunaina never agreed to her. She had a point that amma has to go to her relatives in Kanpur. Sarees do not matter much. She will wear whenever she feels like. She will ask for it.

Please tell me Babuji, what do you think about it?

Babuji could not swallow the statement as well as the bite in one go for a very long time. He left the food and kept on drinking the water. He tried to muster up the courage in his heart. There was a time that he was so courageous that he had no need to look for it. How things change, how have they changed?

Then he opened his mouth. Narendra and Sunaina were staring at his face in wait of his reply.

Narendra!

Narendra, your amma is not yet dead for me.

Jaswant Singh told this with a choked voice.

Who are these people? Waiting for their own ones to die rather they are not even ready to wait.

Probably, Col. Swami would criticize his nagging behavior on the complaint against his son and daughter in law. He is going to say that your son is not only wise but he is practical as well and whatever is there in the locker belongs to them only. Their's only. They are going to get it today or tomorrow, how does it matter? If they do not possess right on their mother's belonging then who else does? He also knows that these things are more like their mother's memories, if they wear them, they will feel their mother around. You only enjoy your life and leave the accounts to them.

You cannot die with dead ones Mr. Singh. It is better for you to leave this habit of dying every moment. If kids will stop living while missing dead people, they will not be able to survive, let them live. You also live happily.

If Babu Jaswant Singh wants to reply to Col. Swami, he would not be able to that his children are not like Col's sons and daughter in laws.

He also feels like that Col. Swami would not be able to understand his plight – only the wearer knows, where the shoe pinches. Is Babu Jaswant Singh feeling jealous of Col. Swami's happiness? Does he want him to follow the same track, which he is treading? He should only say what Babu Jaswant Singh wants to listen. No, No, it's not like that Babu Jaswant Singh gets hurt very soon. But he is neither mean nor selfish.

Where is Col. Swami? Where is he? He needs him so badly. If he were there, he would have been feeling better. Harihar Dubey also left him.

Where is the photocopy of Anima Das' long poem? Where has he kept it? He searched all the papers under his pillows but could not find it. He has also searched for it earlier.

He pressurized his mind and rethought about it. He was in a sweet charm the time Col. Swami told him. He has brought a special copy of Anima Das' poem for him. After reading the poem, please tell him next morning how does he find it? How she writes?

He also remembered, the next morning he in fact asked about the poem – have you read it? Being reminded by Col. Swami, he searched his pocked where he could not find the poem how would he read it? He did not even remember that where had he kept the poem before sleeping. Normally, he never cleans his pockets. If he needs something, he searches his pocket only. The other space left is under his pillow. Col. Swami got confused himself. He said he might have forgotten after promising to give him the poem. There is a possibility that he has left it on the table in Nirula's or maybe he has forgotten to get it photocopied. That was the moment when he felt that he should have made Mr. Singh read the poem there only. He does not know whether that moment will come again or not. Still if some day he finds Anima Das' long poem, he would definitely like to read it.

His eyes glittered with tears.

Third Absence

The Dream

Babu Jaswant Singh realized it in deep sleep that it was around 11 o' clock in the morning..

Only Sunaina and Tommy were present in the house. The silence was whispering in the house and Babu Jaswant Singh feels like it is an appropriate time to take nap after a long walk. Even if he has not gone for walk, he breaks the rules and takes a power nap without any guilt. He followed the same rule this time again.

He knows that 11 o' clock is time for Sunaina to keep her antennas up. Maid Sita bai cleans the house at this time. Sunaina has announced that nobody should dare to disturb her at this time. Even if someone dares, she will not listen to him or her. According to her, this cleaning time is for all the household ladies to keep eye on their maids. Who knows when they will steal light from the sun?

It has happened several times. She got to know after weeks that so and so stuff is lost in the house. When they asked her, she questioned them back. Does crow caw in your house? If it does in the morning. Definitely, crow has stolen that expensive stuff from your house. Hasn't the lady seen a snake in the beak of an eagle? Therefore, it is better if she shuts her windows in the morning after hearing crow's caw. Then notice, that expensive things disappeared or not.

When Babu Jaswant Singh overheard the conversation, he only suggested this much. What is the point of putting off the jewellery every night?

He has never seen Narendra's amma doing that. A married woman should not do such things. Moreover, after such things happen, we can neither blame the maid nor can trust her.

Sunaina gave a cold reply.

Amma was lucky. She got a big-hearted Sunguniya as her maid. Not everybody is as lucky as her.

Babu Jaswnat got hurt again. Why he keeps harbouring the illusion that this is his house? He has been taught several time that it doesn't belong to him and he should mind his own business.

But Babu Jaswant Singh don't understand, if it is not his house, then why these people claim his stuff, his accounts and want to possess his everything?

Col. Swami scolded him. The truth is my friend; you have habit of becoming a damsel in distress. Trivial things hurt you. Actually, it is nothing Mr. Singh – just frustration that you cannot rule anymore.

Leave it now! You have ruled enough. Property can only become a house if one leaves the habit of owning it.

OK, I have left it.

His suggestion was thoughtful. Sometimes his stubborn mind becomes mindful. It starts pondering. He starts self-analysation.

Oh! A light ray is rising up; in slumber, Babu Jaswant Singh realized that a dream has knocked on the door of his sleep. He was amazed at the dream after a long time.

These days' dreams have also been ignoring him so far. The sting of the emptiness of dreams is still flustering him. The sweet presence of

dreams is flying like dandelions in the air. He has to face avoidance of dreams after his retirement. Dreams must have thought – what is the use of coming in the dreams of an oldie. His snoring will anyways disturb them.

Has Shivani forgotten the way today?

Phone bell rang in the drawing room. Sunaina informed him phone is from Trivandrum. She is busy in her work. It means Sitabai is yet not free from her work. She feels very sad. She could not embrace her.

Phone is from *Trivandrum* – call from his daughter Shalini. *Hawai chappals* have slid under the bed.

Mostly she calls at night only after 11 o' clock, STD rates are too high that even Richie rich will feel pain to pay.

Babu Jaswant Singh knows this much. Son in law Mr. Chauhan gets paid for the telephone bills from the company ONGC. Nevertheless, he also knows that still they exceed the limit so they have to show fake bills. Mostly Shalini prefers that Narendra call her up and let her talk to babuji also. She also told him that her in laws are big time cheats. His brother in law starts discussing all property issues and cases on a phone call, which they have done to know their whereabouts, sometime they start talking about the profit of sugarcane. They also start discussing politics that the Chief Minister Rajnath Singh is working properly or not.

He feels proud of Shalini. She never opens her mouth in front of her father in law though she has grudges in her heart. She has ingrained values from her mother. She is neither rude with elderly people nor she comes without dupatta on her head. Sunaina do not have any values and manners that she could touch her father in laws feet on any auspicious occasion or festivals.

He was bit worried about the phone call.

In the daytime? Is everything all right.

Shalini understood the tension in his voice and calmed him that there is no need to worry. She has come to her husband's office.

Boss has gone to Assam. There was nobody in his chamber. She thought of making good use of phone. It's been more than fifteen days she hasn't talked to him. How is his health? Is he taking medicine regularly?

Suddenly she flipped the coin.

Babuji, why do you not surrender Kanpur's locker?

The purpose of the phone call was no more a secret. Sibblings have talked to each other. They could not wait for one night. Narendra talked about Saturday. Today is Thursday.

Six fifty rupees are not a small amount in such inflation. You should abstain from extravagance.

Babu Jaswant Singh kept aside the sugarcoated attitude.

Locker seems like wastage of money to Narendra. Telephone in his study, has to pay house tax of bungalow, and has to pay the gatekeeper of colony. Is it wastage of money?

Moreover, about jewellery and money Shanu, your mother already gave you and Narendra enough in your marriages.

I had to open a locker.What is left there or maybe it is empty, who knows.

Shalini took a long sigh. As if, it is equally painful for her to talk about it.

There are still many things left in the locker. Many sets of jewellery, Ajiwalis nose ring of 58 gms and many other silver things.

Amma always said – she wants to give panchlad and red gold set to anvita and to vikram's wife.

Lobbying was not meaningless.

Babu Jaswant Singh does not remember that he was ever rude to Shalini. In fact, if he chides her a bit, she keeps on sobbing for hours. He could not bear her tears. He used to try his best to console her to make her calm. He will not say anything to her. Then she would become calm.

Babu Jaswant Singh felt that he was not able to hold his horses. He never expected that Shalini is going to leave him and will start siding with her brother and sister in law. Nobody is left with any feelings for him. That Shalu for whom – Babu Jaswant Singh took trains to Kanpur without reservation just because she wanted him to come that weekend. She did not come out of his lap when she was suffering from measles. It was difficult for him to go to washroom that time because she was in his lap.

Babu Jaswant Singh raised his voice. Girl, you are trying to teach me. Why don't you teach some duties and responsibilities to your brother and sister in law? Those people are one of a kind. They think that there are two dogs in the house – one is Tommy, other one is retired civil engineer Jaswant Singh. Tommy is still in better position than he is. They cater to all its wishes. No body cares for him. Tommy is of better breed. It brings social status to them in the society. Their status is tarnished because of his presence.

Shalini became worried; she thought Babu Jaswant Singh had lost his mental balance. He is not talking in his senses. He never talked to his daughter like that.

She tried to coax her father. She tried to make him understand with patience and revealed the exact situation. Babuji is neither living at peace nor letting anybody live with tranquility. The husband and wife are having differences because of it. It has become difficult for bhaia to reach a common ground. He cannot tell you everything or to his wife Sunaina. He is not able to work in his office with disturbed mindset. It is not as if

her brother does not think about his father. He doesn't want to make him uncomfortable.

He also believes that sudden death of Amma has brought this change of behavior. He has been suffering of loneliness. But her brother's efforts alone cannot bring peace to his father's mind. Babuji also needs to put in efforts. He can only overcome if he actually wants to. He should not think about himself only. He should understand the value of his family. Brother is even thinking of keeping him there only, wherever he is happy. He got to know that in *Noida Sec-55*, there is an old age home *Anand Niketan.* He wants to send you there. If babuji is around his age mates, he will like it more. Brother has seen the place. He told me that it is beautiful. Fooding is of highest order. However, bhaia will have to bear the expenses but he is happily ready for it.

Bhaia's friend Rajiv Raizada has also talked about an old age home in Haridwar, Ashram, on the banks of the Ganges. Even if you do not come out of the ashram, you can easily enjoy the evening prayers from your window. Bhaia is also worried. He might get an appointment letter from an American company. It was different when Amma was alive. Now it is not good to leave him alone in Kanpur.

Receiver of the phone slipped from Babujis hands in shock.

Sunaina ran towards the room after hearing the receiver's sound on the floor. But Babu Jaswant Singh didn't look back.

In his heart of hearts – he could hear the sound of wooden sandals crossing the verandah towards the kitchen. He was served first in the house after taking out the share for the cow. He was the eldest in the family.

Who is he?

Babu Jaswant Singh's father.

Who else?

Fourth Absence

Flu

When Babu Jaswant Singh was tossing and turning in bed, he felt as if he has gone through third degree punishment. He had severe pain in the knees. He himself does not understand that without cough and cold, how fever has attacked him. He does not pay much attention to small up and downs in health. He feels proud of his health. He has enough reason to feel proud about it. He can enlist many of the relatives in Kanpur who went through bypass surgery after crossing fifty. Plaster of legs is so common these days. OK! Fine! Babu Jaswant Singh scolded himself while holding his head in both of his hands. Do not brag about it. He should feel happy that he is alive and fit. Narendra's amma is no more who will feel privileged in serving him during his illness.

Doctor Anurag has rendered strict instructions that he should only take boiled water. Sunaina has kept the boiled water in thermos on peg table. Whenever he feels thirsty, he can have it on his own. He complained once that he feels puckish to have tea, milk or water from thermos because it stinks. Sunaina gave a cold reply. It happens, if thermos is of low quality.

Its enough that when Babu Jaswant Singh brought Tommy from walk, he gets tea. Sunaina woke Narendra after hearing the sound of coughing from the washroom. He realized while making him lying down

that his vomiting is not only due to indigestion. His body is ravaged by fever. Thermometer has shown his temperature rose more than 100°.

Narendra requested Dr. Anurag Chaturvedi to visit and examine his father. Dr. Anurag declared that he has been suffering from flu. He is giving medicines but cholesterol, urea, sugar also need to be tested. He also informed that door-to-door service pathologic assistant comes in *SK lab* of *Arora Chemist*. He must have come by now. He can call him by phone. By 5 pm, report comes to the lab. He will call the chemist and get report in his clinic only. He is going to change the medicines if needed. He has high Blood pressure. He has been taking medicines for that. He does not feel that there is any need to increase the dose.

He realized yesterday that the mental shock, he had been suffering from after hearing from Shalu was not easy to overcome. He lied numb on the bed for hours. Pain after pain.

On one hand, he was disturbed due to the absence of Col. Swami and then the conspiracy of his own children to abandon him. He is distressed with dilemmas that how can a father be a matter of disgust in the house. What has anybody done for him till now? Neither are they helping him financially nor is he suffering from some disease so they have to serve him. How could Shalu listen to such drivel? Why did not she protest? Why don't you take babuji along with you to America? How much extra charge would they have to bear? He was not ready to leave Kanpur and come to Delhi. He consoled and persuaded himself and tried to come out of bed. Darling daughter could have said; if you do not have place to keep babuji, I will keep him with me. She will be honoured to serve him. Babuji did raise both the kids without discrimination.

The same record was playing in his mind.

The same old things. Every moment though he understands that to wheel it out in the mind again and gain is same as going through same

pain, which is going to harm him eventually. He suddenly got up from the bed. He wanted to come out of that roof and breathe some fresh air.

He always likes wandering around. He slipped his feet in the slippers. Sunaina called him from the back. The gesture is a formality, which he is very well aware of. He knows the sound is not going to plead that why he is leaving the house when the kids are coming back.

Babu Jaswant Singh proceeded towards Chilla village.

He saw four-five autos in a queue waiting to get their fuel filled. The stinking smell coming from the left side grabbed his attention. He covered his nose with his handkerchief. A herd of cows was foraging for food in garbage.

When he reached the board of *Riverside* View, the stinking smell was replaced by the freshness of a breeze. He kept the hanky in his pocket, Babu Jaswant Singh crossed through *Shikhar apartments* and reached the newly built empty apartments of *Ashiyana*. A school bus came and dispersed the crowd. Malay-Nilay must have come by now. These buses too probably come from this side. He has not seen them. There is a possibility that he will see them along the way.

Perhaps Ramwati… Gosh! Again… Katyayani and Kumudni come back from school at this time only. Would they too come by bus?

Babu Jaswant Singh suddenly became dismayed. Little Katyayani and Kumudni would not have been able to go by rickshaw. He knows that school is far off. After finishing her household work, she would have run to the school to get them. There is a possibility that she had told both the kids to hold each other's hands and come on their own through shortcuts. Situation is quite risky. Any vehicle can hit anybody in the narrow streets – who knows?

Babu Jaswant Singh fumbled his kurta pocket under his sweater. Wallet was there in his pocket. He took it out. How much money does he

have? Seven notes of hundreds assured him that he could fulfill what he actually wants to do for them. He thought of getting riksahw. He saw one rikshaw coming.

He instructed rickshaw puller to take him to pocket-3. However, it was a bright sunny warm day. Nevertheless, the chill in the air reminded that he should have worn his old blanket as well as his muffler.

Babu Jaswant Singh stopped the rickshaw in pocket-3 right in front of the office. He instructed rickshaw puller not to go anywhere as he is coming back in a moment and going back to his house only. He will pay the waiting charges.

He will send money order of 500 Rs. to his address only. Postman knows him very well. If Hariram had been there, there would be a big problem. Sunguniya knows how to write her name. Narendra's amma taught her in free time. He does not think that she has forgotten. If she would have forgotten, she can receive the money order with her thumbprint. The only problem is her self-esteem. Babu Jaswant Singh is going to write a letter behind the money order. The money is not for her – it is for the purpose of study of Katyayani and Kumudni. He has a request that she should hire a rickshaw to pick and drop her daughters. She should not let her girls come alone. There is lot of traffic in narrow streets also. If they are weak in studies, she can hire a tuition teacher.

Don't even think of retuning the money. He will be hurt. Doesn't she want to see her Babuji happy?

Babu Jaswant Singh rubbed off the last line. He is not sure whether the postman would be Hariram or some other person.

He also wrote – he will send Rs. 500 every month. So that there will not be any difficulty in their studies.

111

Malay opened the door. He was annoyed, where his grandfather has gone during the lunch. Mother was getting worried, as you didn't inform her before leaving.

His plate alone was lying on the table. That means everyone else had his or her lunch. Sunaina asked him that should she serve his lunch. He could not say no to her. He only said if rice is left, then he will have 3-4 spoons with daal.

He came straight to the bed after lunch, as he was not feeling well. Sunaina shut his door and switched on the TV on high volume. Though the door was shut but the noise of 'poto' in loksabha was creating too much disturbance in the room. He could hear that Tommy had been unchained. He had no idea that Tommy could be interested in ruckus of 'poto'. Sunaina takes care of Tommy. She is taking care of him. Suddenly channel has been changed to MTV; she is changing the channel during ads so that Tommy would not get bored. Both the boys have gone to neighbors' house – so that they could do group studies.

Babuji, open your mouth. Going to put in thermometer.

Why? Babu Jaswant Singh asked in curiosity.

Have to measure your temperature.

Babuji came out of the trauma of yesterday. He opened his mouth. Sunaina measured the temperature and came out of the room. He is suffering with flue. They are burdened with his treatment bills now. Dr. Chaturvedi instructed. He wants to see a proper chart of his fever fluctuation.

'How severe is the fever'

'It is high, babuji'

'Still his eyes are burning like fire.'

'It is more than 102^{o}'

Sunaina asked before turning her back. What would he like to have in lunch? Should she make porridge with milk?

He thought how someone could have sweet food in fever. She can make it salty in combination with something. But she took his silence as his agreement. She did not feel like asking him again.

When he got up at mid night for loo, he could feel the body aches. The cold breeze on rikshaw had struck him. He already had the flu. He will take 2-3 disprin tablets in the breakfast. It will be all right. He slept off, once he lay down.

He couldn't get up in the morning to take Tommy out for a walk. He was feeling so weak to get up.

In the morning, he tried to ask Dr. Anurag when he would be fine. He has decided that he is going to take address of Col. Swami and will reach sec-26 in Noida so that he can find his residence.

You are about to get fine uncle. It will take 5-6 days. You are better. Don't think about your illness much.

'How much time he is going to be lying on bed?'

Medicines are helping him to improve. Headache has become bearable now. He is getting better now and body is coming to its senses.

Nasal congestion is getting over; he can smell the air now. Is it the smell of Nasal drop? No someone has kept a bouquet of beautiful flowers of chadramallika on one side of his bed. Babu Jaswant Singh is taking long sighs. Smell is coming from the stairs.

'Why your throat is choked? Shivani was on the phone from Aligarh.

'He only wants to listen to you'

'And what if she says that she has called from so far just to listen to his voice'

'Then he has to say, say something on your behalf as well as mine too, but only she has to talk'

'Stop kidding'

'Suffering from tonsillitis'

'Have you gone to the doctor?'

'Yes, I have shown myself. I will have to take althrosin for five days,

'How severe is the fever'

'105^{o}, it's getting higher'

'Again playing prank, Is somebody around?'

'Hmm… somebody has just come'

'Who?'

'You'

'Uff'

'It is useless to make Vaidehi worrisome in Kanpur, Narendra and Shalini's mid terms are going on. Nothing to worry about'

'You are not able to speak' and tension was obvious in the voice'

'Ketaki comes. Whatever she finds convenient she cooks and keep it for him'

'By what time, she will come in the morning'

'Around 7 am'

'What is the time by your watch right now'

'It is there, on the wall – It is quarter pass seven'

'I will reach in the morning. Infact the night is going to be sleepless'

'What about the students of Aligarh University'

'They already knew that you are going to fall sick – They all have gone on strike'

The doorbell of his new Shahganj house rang around 11 o' clock at night. He was startled who can it be right now? Colleagues from the office already came in the evening. Neighbors? It has been only three months. They have not come out of formalities and protocols. It cannot be neighbors when Babu Jaswant Singh opened the door; he saw Shivani standing at the door.

'Shivani kept her hand on his forehead for the whole night'

'What will he explain to Ketaki?'

'What should he say?'

'Reality'

'Should I tell Ketaki that she is my friend and I … ?'

'Yes, you may. I am very brave'

Why you sacrificed your courage for the sake of traditions? Why you became so docile? Why you married where your brother dictated? Just because he could not show courage, he never committed to anything.

Fifth Absence

Sintex Tank

Babu Jaswant Singh woke up. However, he feels, he is still in sleep. Sometimes one of the body parts is conscious even during the sleep or gets active suddenly and remains active whole night. The activeness of part wakes him up and he feels like pissing. He should go right now otherwise he will make the bed wet. The choked throat is indicating to spit out the cough otherwise; he will keep on coughing whole night. Sometimes he feels that his limbs are numb and it is difficult for him even to turn on bed.

Phone is ringing outside. It kept on ringing. Who can it be? Babu Jaswant was bit worried. It can be from Sunaina's house or it can be Shalu also. It must be Shalu. He has apprehension. They have their own constraints. She cannot go to her husband's office anytime she wants to. Neither their boss can be absent according to their whims and fancies. What would be the time? It is better if he opens his eyes and sees the alarm clock. The timing will calm his apprehensions. Perhaps the conversation has started. Yes, it has definitely started. Sunaina is mostly loud while conversing, she does not whisper. He never heard her like that. He could not understand – what she was talking on phone. He could not see the watch clearly. Phosphenes appear if he opens his eyes. He was surprised. It was as if light bugs are floating in front of his eyes. In his childhood, he used to catch those light bugs in his hands and

released them immediately. He saw them going far from him. Therefore, how they are still caged in his eyes.

He could catch some phrases from her conversation – sintex tank, theft, back house.

Meaning? Who is on the phone?

Sometime back Sita bai came to his room to clean it.

The coarse sound of dragging of bucket hit his eardrums like a shot. He was sleeping otherwise he would have scolded Sita bai. Leave the cleaning of this room today. Isnn't she seeing, he is not well today. He cannot bear noise.

Sita bai comes around 11 am for cleaning Sunaina's house.

Babu Jaswant Singh was awake in the evening, when Narendra reached back from the office. Sunaina thought babuji is sleeping so she started updating Narendra. Sunguniya called in the afternoon from Kanpur. She was pestering me to talk to babuji. She wanted to talk urgent. But she told her, he couldn't come on phone as he is severely ill. Then she told me the whole story. The small sintex water tank was replaced by bigger one and the smaller one was kept in the backyard of the house – had been stolen yesterday. She has filed an FIR. Police has called Netaji. Police assured him nothing to worry about. They will find the tank in few days. There is only one problem. In the other houses of the town, everybody has same sintex tank in their house. If the thief has replaced the tank in his house at night only, it will be difficult to identify.

Sunguniya is filled with guilt. She was telling me – How will she face Babuji? A pin dropping would wake him up when he was here. As if, she had gone deaf last night. Sunaina gave her opinion. It is very much obvious from clever Sunguniya's description that she is trying to garb her own sins with such a story. Who is going to notice that whether the tank was there before or not?

She will play the same track when one day she will squander the whole house. Don't know why babuji doesn't sell the house and get relieved?

Babu Jaswant Singh felt like yelling at Sunaina from his bed. How dare she call Sunguniya a thief for a mere tank? Is he feeling giddy or is there an earthquake? He tried to hold his head with his hands but he could not find the strength to lift himself up – as if they are not there.

Sixth Absence

Consciousness

After sending kids to the school when Sunaina came to examine his temperature, he was completely in his senses. She saw him going to washroom on his own and getting fresh there. He asked her as usual what the degree of the temperature is. When she told him that it is more than 103^{o}, he said I have been taking medicines. It will take some time to get the desired results.

His second question was – has his friend Col. Swami called him up from Noida yesterday? She denied that she has not received any call from such person with this name. She will ask Narendra also; there were many calls at night, if any call was for you, Narendra would have talked about it. Sunguniya called yesterday. He was taking rest at that time. She did not feel right to wake him up. Nothing was so important. She just wanted to know his general condition.

Then he did not ask any more questions. In fact, in his expression it was apparent that he is not interested in knowing something more. The news of the theft of the tank might make him tense. Today a tank has been stolen; something else might be stolen in future. She did not feel right to distress him. She warned Sunguniya calmly. You have a free place to reside – that is how you are taking care of the place.

He was completely conscious in the morning. He seemed to be in his senses even after suffering from high fever. When she was examining

his fever, he stopped her in a meek voice. He gave her ten notes of five hundred from his pillow. He told her to keep it as they are towards the expenses of his medications. Keep it. It will be like a small help. It is of no use to him right now. Then, not for formality sake but she genuinely denied to take his money. Why worry about the expenses. Everything will be managed. But he did not listen to her.

He asked for having *Monaco* biscuits before she examines his temperature. She kept the biscuits in the tray. He had to be given medications subsequent to having his biscuits. She came after 15-20 mins to give him the medications. She was pouring water from thermos and he posed her a weird question.

Are you a nurse?

He did not have it in his nature to play pranks. She felt a bit weird.

I am Sunaina babuji – your daughter in law.

Daughter in law – he blinked his eyes in amazement. As if, he couldn't see properly.

When have you come from Kanpur? Why have you sold the water tank?

She became nervous. She ran towards the bedroom. With the medicines in her hand, she told Narendra.

Babuji is talking weird as if he has lost his senses. He could not recognize her. He is talking gibberish.

Narendra asked her, have you given the medicine? She completely refused. These are the medicines. It is better if you give him. She is scared. She will not be able to go to his room from now on.

Narendra called Dr. Anurag Chaturvedi immediately.

Dr. Anurag come and asked him – 'Uncle, you tell me your name'.

He replied in a meek voice – 'My name … you tell me my name. Yes, I remember – Isn't it Harihar?

Harihar? Do you know him? Dr. Anurag asked Narendra.

'He was a close friend of Babuji'

'Was?'

'He is no more. He died sometime back'

Both came to the drawing room. It is not right to keep uncle at home now. It is better if you admit him in the Kailash hospital in Noida.

He is calling the ambulance. He will come with Narendra. It will be better if uncle stays in the hospital for some time. Examination will be done easily.

He was not ready to go on stretcher. Narendra convinced him. He is not well, so he is taking him to hospital. He will bring him back. They are not going very far. Hospital is in Noida only.

His expressions suddenly flushed with happiness with the name of Noida. As if they were taking him to his favourite place. He silently slid onto the stretcher.

Thirteenth Absence

The Toppling

He was down with an attack of the flu. Babu Jaswant Singh came back from Kailash hospital after six days to Narendra's house. Tommy came to him and started licking his feet to express his love. He felt nice. He wanted to leave hospital memories in hospital. He was happy that Tommy helped him in forgetting everything with its love.

He mustered up his courage, covered himself properly and came downstairs. Weak body and aching bones reminded him that soon he would be walking with support of a stick. But he should not lose his courage no matter even if he reaches the garden near Keerti apartments. He can take rest on the benches placed on the side of road. If he is able to walk for sometime only, it will be good for his knees. Those seven days in bed were like seven years in prison (kalapani). Let bygones be bygones.

He remembered the philosophy of death rendered by Col. Swami once he became completely conscious.

Maybe flu has come as an excuse for his death. It might become severe and would take his life away. That time he felt it was not bad if he dies right now. Nothing much left to do in life. However, this time was more as if death had come to shake hands with him. Let us see next time in which form it comes. He cannot choose his death. Some courageous

men can choose it. They choose their death in form of wells, ponds, poisons, fans, high buildings, rivers, sea etc.

He also felt that no matter how cool he pretends but death felt his intrinsic fear so it had given him one more chance to live. He could not die with peace until he had met Col. Swami.

Today's morning is his turn.

He decided today morning. Today neither is he going to waste his time in calling Col. Swami nor is he going to wait on *Mayur Vihar Bridge* and dive into a river of disappointment and speculation. He is rejuvenated after yesterday's evening walk. Though, he is physically weak but he cannot let his weakness overshadow his zeal. He will go straight to his house. Moreover, he does not need to walk by foot.

He has decided that he will hire a three-wheeler for Noida. He will talk to auto driver prior to his journey that he will have to stay for one or one and a half hour there. He knows that Col. Swami will not let him come without refreshments. There is a possibility that he has not come back from his relatives. Though there are very less chances but still his family will not let him come so soon. He also wants to meet all; rather he will address everyone with their names and astonish them. Probably he will not be able to identify all. If he doesn't identify anyone, he is going to ask directly. Many times, it was decided that the next weekend they are going to have a get together at his place.

He told his daughter in law that he is going to have lunch at his friend's place. That is his plan but there is a possibility that his daughters in law would not let him come back before dinner. Appu's friends do not come daily. In such situation, he is going to call Narendra that he should not worry about him returning to his home. Sri Narayan will drop him back in Jonga.

Every time some or the other problem occurs and his plans get cancelled.

Suddenly he gets to know that day only. His second daughter in law is going to participate in *Khajuraho* dance festival in Madhya Pradesh. Her flight is at 2.30 pm. She has two conditions. First – Appu has to come to drop her at the airport. Second – She also wants to meet his dear friend. If his friend is coming in her absence, how will she be able to meet him?

It will be better once she comes back from Khajuraho dance festival, Appu invites his friend for lunch,. Anushree is the mother of 'Giligadu'. He cannot refuse her conditions. No worries. He will plan it next week. Everybody in the family is so excited to meet him.

He described Anushree with lot of enthusiasm. Anushree is a trained dancer of Bharatnatyam. She is feeling privileged after receiving an invitation from the Khajuraho dance festival. Her hard work has finally fructified. Her teacher S.N. Pillai had put lot of efforts so that she will be selected in Khajuraho festival. He is disgusted with the politics in the world of art that there is no respect for the devotees of art in this nation.

Mimics and zanies grab National Awards these days. It is true that this opportunity is no less than a festival (Diwali-Dusshera) for his family.

Giligadu are eagerly waiting for the coming Sunday. They are insisting that they will also come to drop their mom. Katyayani wants to wear her pink frock that she wore on her last birthday. Kumudni wants to club black coat with jeans. Why do you want to go? They want to see their mother boarding the plane.

If they want to come to airport, they can. But they will not be able to see their mom boarding the plane. Both tried to argue with him in their babbling voice. Appu is trying to fool them. They have seen it in movies – relatives are bidding good byes to their loved ones while they are boarding the plane.

He again resorted to logic. You must have seen it in some old movie. Tell me any new movies in which they have seen this happening? Both squirrels were mum with faces as long as fiddles.

Col. Swami could not bear their sullen faces. He had to say. Do not feel sad. He promised them that in next summer vacations, he would send them to their uncles' place by air. His Giligadu will fly like fairies in the air.

'Shri Narayan was …' Col. Swami stopped for a moment,as if he had some hesitation or he was in a dilemma whether to say it or not.

He did not try to dig out. After sometime, Col. Swami himself revealed. Babu Jaswant felt a pain inside. Sri Narayan was not in favour of sending Anushree with her guruji Mr. Pillai to Khajuraho dance festival. That old man is weird. Why there is any need to go with him? Singer Savitri amma would fit with all her arrangements. If one guruji is not there to play the cymbal, how much difference would it make.

Guruji has a colourful past. His first wife was his pupil. Second wife was the younger sister of first wife. Shri Narayan never liked the way he pampers and encourages Anushree's ambitions. Consequently, they had a fight.

Shri Narayan is an introvert. He tries to keep his feeling disguised. The cool, which he portrays about the relationship between Anushree and Guru Pillai, is superficial. In his heart of hearts, he wants Anushree to say good-bye to her passion and become like sister in law Madhavi. He is adamant. They did not talk to each other for one week because of this Khajuraho dance festival. Anushree took a firm decision. She will not sacrifice this golden chance for such sentimental nonsense. Khajuraho dance festival has an international reputation and the only person who can stop her is her Appu. If Appu would say never ever dance, then she is ready to sacrifice her passion forever… at least she will try to.

The entire matter reached a very delicate point; Col. Swami felt it is better to talk to his son first before reaching any conclusion, what does he want? Both son and father were rambling on the road for one and half hour and discussed the issue. Shri Narayan cleared his point he gets hurt when guru Pillai makes her dance on his fingers. In fact, she never discusses any issue with him. Gurujis decision is supreme to all for her. There is no value of his family in Guruji's eyes. He wants her whole time devoted to dance only. Katyayani and Kumudni are also interested in dance. Appu doesn't know, neither he wanted to tell. Guru Pillai forced her to abort during pregnancy. He belittled her. Motherhood is only the aim of her life. So bear more kids and stay at home only. Nurture your kids. She should forget the dream of becoming country's best dancer. She could give birth to her kids after achieving everything. She is not getting old right now; she only gave birth to kids because of his warning only. The day she is going to abort her child, she will have to see his dead body in the room.

He made his son understand; to make your wife understand that first you have to understand this matter with the cool mind. Actually, his jealousy finds vent in the accusation that she is not taking care of Kumudni and Katyayani well. He never felt like that. Daughters are her life and there is everybody in the family to take care of them. This is what family is all about. It is only because of strength provided by the family that you can bear thick and thins in life without any complaints.

He feels, no matter Katyayani – Kumudni are young but they should know how special their mom is. She is a renowned dancer of the country. The balance he is talking about, he feels deeply that he should rethink about it. You cannot have a balanced approach with a prejudiced heart.

He had to arrange a meeting of all the family members. Katyayani and Kumudni also sat with everybody.

He told Anushree only one thing – close your eyes for five minutes. Just think deep inside. Have a look. Listen to your heart. What does her heart say? The heart is always right. It is always true. Without any malice. Without any pressure.

Everyone was staring at Anushree.

It was more than five minutes.

Suddenly Anushree busted into tears. Everybody was alarmed.

'I can't live without dance'

Annoyed Shri Narayan tried to open his mouth against her wish but he made him shut his mouth with his gestures.

Anushree had guts to tell the truth – which Madhvi could not. We should respect the truth.

Before going for a morning walk Shri Narayan wished him by touching his feet. Anushree was standing right behind him. She also touched his feet. Appupan I need your blessings.

Shri Narayan gave him good news, on Sunday once he comes back from walk, they will do a pooja for Anushree's success.

Babu Jaswant Singh was a bit annoyed with Col. Swami. He always talks about Madhvi but she never talked about Anushree's dance talent. Why?

Col. Swami with his typical style – How could I, my friend. Not only for son but also for his father, she has always only remained the mother of Giligadu.

Suddenly the curtain sheet of three-wheeler flapped on his face. He could not find any thread to tie up the sheet again. He asked autorikshaw driver – is there any way to tie up or not? He replied that he has to sit on the sheet to make that side cover. He felt that he should

have opened the curtain, the moment he sat in the rikshaw. He could feel the chill in the breeze though it was not that cold.

A thought came to his mind – he had just got up from the hospital bed. He should have worn a monkey cap. However, he really found that thought funny. He was going to the Col's house for the first time. His daughters in law would laugh at his face; they would consider him a night watchman.

"I can't hide in my quilt due to the fear of cold.Mr. Singh, Morning walks are walks of paradise. I keep brandy in pocket of half pants. The moment I feel cold, I have a sip of it and everything gets set."

A smile came to Babu Jaswant Singh's face. Col. Swami and his childlike attitude rather, childlike attitude was an understatement for his liveliness. Babu Jaswant Singh did not have the gift of the gab. He did not answer right at the right time. It used to happen in front of Shivani too. Nevertheless, when he was writing poetry, he wanted to pour ever little detail on the piece of paper.

When he crossed *Nagarjuna Society,* he requested auto rikshaw driver to stop on some sweet shop.

It was not nice to visit any well to-do family empty handed. He should take diamond shaped sweets (cashew burfi) for giligadu. Col. Swami revealed their (*giligudu's)* tastes. They did not ask for cashew burfi. They were more fascinated with the shape. What else did they like? He tried to jog his memory. He was their second grandfather.

Col. Swami had praised and drawn a wide graph of his personality like a giraffe. *Giligadu* tried to imagine him – he must have button like eyes.

When he was crossing the roundabout and proceeding towards *Nirula's,* he suddenly remembered *Giligadu* really like its ice cream as well as chocolate cake. That day when they both were sitting in *Nirula's*

bar, Col. Swami got it specially packed for *Giligadu*. He felt that he should also take chocolate cake and ice cream for *Giligadu.* If he crossed another sweet shop on the way, he would take that too.

However, while searching for the Col. Swami's' residence, what if ice cream melted?

But it was quite chilly. It had more scope of melting in summers.

He took a big cake, around 2 kg. Children become the excuse and the whole family enjoys the cake.

If Col. Swami were there – he would have definitely pulled me to the bar – lets have our gala time.

He searched like a hawk but could not find any sweet shop. He felt disgusted.

Which sector do you want to go babuji? He asked without turning his face.

26! He already told the driver before hiring it.

It is on the opposite side babuji, which block do you want to go?

E.

Balconies and the flats built on round pillars grabbed his attention. The greenery of the grove gladdened his heart.

He could not hide his impatience. Where was E block? Please stop the rikshaw and ask somebody. It was a waste of time to wander uselessly. A woman was walking towards them. She was annoyed when three wheeler driver asked her way. "This is G block. You have come the wrong way. On the entrance, turn left and then enter the first lane. E block starts at the end of lane."

E block had started.

Babu Jaswant Singh told the driver that Col. Swami's flat no was 303.

I did not have to wander through the narrow lanes.

“Babuji, there it is. Flat no.303.”

As if the driver had conquered a fort, he accelerated and roared his engine and then turned it off.

Babu Jaswant Singh's face was gleaming with happiness. He requested the driver.

“Please help me in getting off the auto.”

Three- wheeler driver grabbed his box of cake and ice cream. Then he gave his hand to support him in getting off the auto. Before climbing the stairs, he raised his head to estimate that how many floors he had to climb to get to Col. Swami place.

“It’s third floor babuji. I will carry the stuff home.”

Then he weighed his strength on his offer. He found his tall big body very frail because of his illness.

He had to climb three floors and his body had become stubborn as a mule. There was no other way out. He had to climb. Holding the cake box in hand would definitely make it harder. Moreover, he had to hold it with care so that its icing would not be messed. The cake had name of both the girls and the moment they were going to open the box with cake, they would cheer happily. Babu Jaswant Singh also wanted to love them as much as their Appu did.

He had not taken anything for Col. Swami. He could have taken flowers. Or his favourite whisky – Royal Challenge, though there was no shortage of liquor for him. Canteen liquor card not only facilitated him but his relatives too. This had not occurred to him earlier. There was no use thinking and regretting it.

The driver was climbing the stairs behind him. Perhaps the excitement of meeting Col. Swami energized his feeble body. He was very

weak but not that weak that he could not climb the stairs. However, he had a childish idea downstairs that he was going to call and press Col. Swami to come down. Then he himself found this idea very callowish. Retired Civil Engineer Babu Jaswant Singh, have you gone nuts? It was a civilized area. There was no place for boorishness here. If somebody scolded him at his foolhardy behaviour, he would have egg on his face.

Stairs were quite wide and comfortable.

Col. Swami found it very weird that his room was a balcony. He suggested that if his house was small then tell your son to buy a house in Noida. He would get a big house in the same price in Noida. New flyover had also been built. Pay the toll tax and one could reach Delhi in minutes. Restaurants were amazing here. Parks, clubs, golf and what not; you could roam wherever you wanted and have the fun of your life. Live life king size. The way he lived his life. Those old folks who did not find greenery in *Mayur Vihar*, came to Noida. He knew it was useless to talk to Narendra. There was no remedy for 'capital fever'. The house at Kanpur was four times bigger than this house; he could have consideration for his father's age and stayed in Kanpur. Talent could find its way anywhere. But he had no wish like that. Had neither wish nor the feeling of responsibility.

Oh! He did not notice those trees with big trunks.

The stems where the flocks of parrots always chirped, those trees were right in front of Col. Swami's house. He told me. Ok let's meet those trees with him while returning and we would also see the parrots. If it would be possible, we could have a view of the parrots from the balcony itself.

He had a heavy breath because of climbing so he had to take support of the railing to climb up more.

He looked at his watch and checked the time. Would Giligadu be back from school? It was quarter past eleven, Col. Swami had told him

but he did not remember the exact time of their return. Again, that confusion put him in an abyss.

Babu Jaswant Singh had this deep wish inside that when Col. Swami opened the door, he wanted to see both girls giggling behind him. He would immediately offer the cake to them and say – have you not recognized me. He is grandfather no.2. He has brought their favourite chocolate cake especially for them and cassata ice cream, tasty tasty.

He thanked the driver after reaching the third floor. He decided that he would not ring the doorbell till the moment he hadn't caught his breath. When, he would be OK, he was going to ring the bell. There were only two flats, which he could see. Flat No.302 had name of some M.N. Shrivastav. And Flat No.303 had the nameplate of his great friend Col. Swami.

He rang the bell out of his impatience. What about his breath? Actually, it was heavy because of the excitement of meeting Col. Swami – 13 days were like 13 years for him. He could hear nobody coming towards the door. He rang the bell again. Again. His excitement was fading away. He was perplexed. Where had he gone with his whole family? Again, he complained in his heart that if he wanted to go somewhere he could have informed him on phone.

He was angry with him. For the first time he felt hurt due to his cold behaviour. Should he climb down or should he confirm it from some neighbor. There was a possibility that he had gone somewhere in Noida with his family. If he informed somebody in the vicinity, at least he was marking his presence. At least he would get to know that he had come and he wanted to know his whereabouts. How much he missed him!

What if his neighbours were same as Babu Jaswant Singh's neighbours?

He tried to restrain himself. But he could not. No matter how his neighbours would be. He was not there to encroach upon their property.

He rang the doorbell of Mr. M.N. Shrivastav.

He could hear the footsteps proceeding and was satisfied. The door was opened. A serene lady with a shabby hairstyle whom one could actually call beautiful – full of curiosity.

"Yes?"

Babu Jaswant Singh was taken aback.

"mm.. I am Jaswant Singh. I am Friend of Col. Swami. I have come to meet him."

"From where have you come?"

"Just nearby. From Mayur Vihar. Actually he hasn't come on walk for past many days. So I thought … I should better go and meet him,"

Suddenly the tone of the lady changed.

"You are his friend and you don't know?"

"Your friend Col. Swami is no more."

"What do you mean?"

"He expired. No more in this world."

Babu Jaswant Singh could not understand that either he was feeling giddy or whole building was shaking. May be the floor he was standing on. He took support of the wall of flat no.302 with his hands.

The lady got alert after seeing him stumbling. She gave her hand to support him and invited him to her place.

"Please, come in."

She made him sit on a sofa and went back to bring a glass of water. She took his stuff from his hand and kept it by his side.

Water was cold. Babu Jaswant Singh requested her to bring lukewarm water.

That lady not only brought lukewarm water but also added glucose in it. After having water, he was lying numb on the sofa.

"I will bring some coffee. You will feel better"

Babu Jaswant Singh could not deny even if he wanted to.

She seemed worried while going to the kitchen.

"Are you all right? Do you need a doctor?"

"Our account still has to be settled Mrs. Shrivastav." Had he addressed her wrong?

Babu Jaswant Singh and his weird answer hadn't assured the lady. He was in no situation to give assurance to anybody then. But he realized that to worry a stranger was against his ethics.

He gave an explanation, "I am trying to muster up the courage for bearing the irony."

Mrs. Shrivastav brought coffee for not only him but for herself too. She must have thought that if she would have coffee with him, he was going to feel more comfortable. He needed that the most right now.

"When?"

"It has been twelve days now. It was the morning of 30th November."

"Bhai Sahab like always came out for a walk with a smiling face. After climbing down seven eight stairs, he was struck with a pain in his chest. He sat on the stairs due to pain. After sometime, he somehow managed to come upstairs and rang our bell. Mr Shrivastav opened the door. After seeing him in sweat and pain, he made him lie on the sofa and called the family doctor. Doctor immediately said – he is having a heart attack. We should not waste our time in going to nursing homes. He should be admitted to the emergency at Apollo. He met with a second

heart attack on the way and he could not survive. Where was Babu Jaswant Singh at that time?

He had been waiting for him on the same *Mayur Vihar Bridge*. His eyes filled with tears. A death could be in such form, in such a way on the stairs. He had just crossed those stairs.

“Where were his kids, daughters in law at that time?”

“Who? Kids? Daughters in law?” Mrs. Shrivastav was shocked by the question.

“Madhvi, Anushree, Giligadu, his son Sri Narayan”

“We have seen him all alone for the past eight years”

Babu Jaswant Singh felt as if someone had thrown him from the third floor.

He became numb for seconds and kept seeing Mrs. Shrivastav's lips.

He could not hear anything though he was aware she was talking to him. What was this lady saying? Was he suffering from schizophrenia or alzimer’s disease?

Mrs. Shrivastav was narrating it with sighs of grief.

Those sighs were strangling Babu Jaswant Singh.

It must have been in 1994 when Col. Swami’s wife died and he was left alone. All the three sons had joined their new jobs in new cities at that time. They all gave him false promises that once they had settled they are going to keep ‘Appupan’ with them. They also bought flats in Hyderabad, Bangalore (Bengaluru) in some time. His second son Shri Narayan came in last summer from Hyderabad.

He came with a purpose. He had usurped four rooms of the Noida flat uselessly, why didn’t he sell off his flat and divide the amount equally among the three brothers. Their small flats had become too congested for

them. All the three sons had bought plots in their respective cities. Now they felt that they should build their bunglows on the plots so that they could have spacious houses to live happily. To live spaciously they needed a big amount. They did not want to get into loans. Moreover, why should they, if they had a source of income in their own house?

Col. Swami had already sold his Gaziabad flat, located in Rajnagar and gave the amount to his children. He rejected the proposal of Shri Narayan. Shri Narayan hit him in anger.

The wailing of Col. Swami sent a chill down their spines. We asked Shri Narayan to open the door. But Shri Narayan warned them to stay away from their family matters. Mr. Shrivastav was so worried that he called the police. The police made him open the door. A blood drenched Col. Swami had been taken to hospital. When he came to his senses, he declined to file an FIR against his son as he was pleading for forgiveness.

Babu Jaswant Singh talked about Anushree. She was no less. It was too painful. She left her two small twin daughters. She started living in with her dance teacher. The grandmother (dadi) of the kids did their upbringing. They were admitted to APJ School in Nursery. When their granny was no more, Shri Narayan came and took his kids with him. And in between Shri Narayan remarried without Col. Swami's consent. He put his daughters in a hostel in Hyderabad. Col. Swami had put his granddaughter's pictures all over the house. The girls had called him many times without telling their father. Col. Swami often used to go to Hyderabad to meet his granddaughters. He stayed in hotels. He never let any of his relative know about it. He only told us. The warden of their hostel is the widow of some friend of his in army.

Its better to be childless then having such ruthless children. We do not feel sad that we have no kids at all. Mrs. Shrivastav's voice was

choked. Those people kept him in the mortuary. His elder son and his son's wife Madhvi in Bangalore had been informed.

We got Madhvi's Bangalore number from Sangeet Natak Academy, with much difficulty. Mrs. Shrivastav remembered that she had been awarded by the Academy last year. She did not get any address book from the house. The couple came in the evening by air. He told us that the other brothers had some personal problems so they would not be able to attend the cremation. They would not reach on time if they came by train. It was not feasible for them to come by flight. The elder son performed the cremation ceremony. They had no time for other customs so they went back. They took the ashes and went back to Bangalore (Bengaluru). They have very long row of ceremonies. They will perform there only. They have relatives there.

They took all stuff from the house. Mrs. Shrivastav does not have much knowledge about it. The elder son told Mr. Shrivastav – you have helped us a lot. Please help us more. They want to sell the house. Please inform the property dealers nearby. 303 is for sale. And can give his Bangalore number to property dealers. If they would find someone deserving, they are going to come and sell it off immediately. When they will come back, they are going to get their banking work done by showing his death certificate. They want to sell the stuff. It is of no use to them, rather they are surprised that how Appu was surviving on black and white TV.

Around 4 pm in the evening slum kids used to come to be taught by Col. Swami. Half of his pension he had spent on them. He was himself an efficient man. He used to cook very delicious *idlis*, which was not possible for everyone. He had served vadas and idlis to kids with lot of love. Like everyday when kids came to their teacher and heard the news of his death, they fell numb. Next morning, they cried a lot over his dead body. They were not letting his body go. Their parents consoled them somehow.

Mrs. Shrivastav could not control her tears; she wiped them with corner of *dupatta*.

To hide his own tears, Babu Jaswant Singh got up, joined his hands and bid good-bye. “I am leaving, thank you.”

The 'thirteenth day' ceremony must be going on in Bangalore (Bengaluru) today. Please pray for him. May God bless his soul and let it rest in peace.

“Please stop” Mrs. Shrivastav handed over his cake and ice cream to him. “Your box”.

“Slums kids don’t come now?”

“To whom should they come? Their teacher is no more.”

“Can you go to the slum?”

Mrs. Shrivastav took a pause of few seconds.

“Yes, I can”

“If you can, then please give it to slum kids they will also get prasad (offering) of thirteenth day ceremony”

Mrs. Shrivastav stood on stairs to see him off.

By taking support of the railing, Babu Jaswant Singh slowly walked down the stairs. He did not want to step on that stair. He wanted to touch it and feel it with his hand. Wherever he had lost his life, it started from here.

Self libation

Babu Jaswant Singh tried to find those big trunked trees and went to meet them. Trees were not that far. He could not go back without meeting them. The trees, which gave shelter to many parrots. The colouring of their wings and their twirking reminded him of the banyan tree of Kanpur.

Many a times, Babu Jaswant Singh had saved those parrots, from bird fanciers. He complained against them to the police also. He had given strict instruction to the security guard of sec-26. They should not let any suspicious persons with big bags enter the premises that they think this might harm the birds.

It was one big dry crusted huge trunk that one could not even embrace properly. Babu Jaswant Singh did not touch it, rather tried to feel it with closed eyes and putting his head on the tree. An inexplicable divine feeling touched him inside. He never kept his head on Col. Swami's chest. However, he felt that if had done that, he would have felt the same divine pleasure.

As if trunk of the *neem* is his chest.

Perhaps all the old trees have his soul in them?

He sat on the right side and saw the curtain sheet of the three-wheeler fluttering and the running road, which seemed larger than life from the windscreen.

He felt strange. Why was he feeling that he was having diplopia. He was seeing everything as two.

He got his cataract operated ages back and his lenses were doing fine. His lense number had increased three years back but now it was stable. He never felt like this before.

He had to ask the driver. Was he too seeing all images as two? Had his lense been misplaced?

Driver looked at him from the side rear view mirror. He had noticed him earlier also many times while driving.

"Sir, Is everything fine – Why don't you wipe your eyes."

Everything is destined sir – no one can fight with the destiny. His eyes made it obvious that something bad had happened and he could not control his tears.

Babu Jaswant Singh was bit surprised on his comment and he wiped his tears.

Teary eyes were troubling him. The driver was not wrong on his part.

He did not remember that he had cried so much for somebody ever in his life.

He put his hand in his pocket for handkerchief. Why was he feeling that the hanky was as crisp as paper?

He only got wrinkled hankies these days. He had the habit of using only well starched creased ironed hankies. He told his daughter in law Sunaina too. You do not need to put starch but please get it pressed. Ironing is too expensive in Delhi for small hanky, he is going to charge

Rs.2 per piece. He takes thousands according to the pieces. Sizes do not matter.

He found one crumpled slip with the hanky in his pocket. Babu Jaswant Singh was surprised. He wiped his tears and tried to find out what exactly this piece of paper was which he found in his pocket. Long time back he remembered – he kept a slip in his pocket on which Col. Swami's number was written. Col. Swami wrote it. Yes, one more slip that he had always kept i.e. Col. Swami's Address.

Babu Jaswant Singh was amazed that it was nothing but Anima Das' long poem. As if poem was having fun in playing hide and seek with Babu Jaswant Singh. Neither he remembers clearly nor Col. Swami. But Yes!he said that day – if he someday finds Anima Das' poem, please do read it.

One more door of remembrance opened in his eyes. He touched that paper with his forehead and promised with the trembled lips – I have found the poem my friend. Now when he had found it, he was not going to lose it ever. He would keep it safe with him forever. He would keep it close to his heart and read it. He was going to feel every single line. He would call him. He wanted to know how he found Anima Das' long poem. Had he liked it?

When will Babu Jaswant Singh read? At night? Oh! Night is too far.

It will be mere wastage of time to wait and fill the gap until night. He became impatient. Why not right now? His spectacles are bifocal. He can read. He should read.

He wiped his tears and started reading the long poem of Anima Das.

Babu Jaswant Singh, son of Thakur Samrendra Bahadur Singh, V.P.O. Sagvar, Distt. Unnav, Uttar Pradesh.

Babu Jaswant Singh

S/o Samrendra Bahadur Singh

VPO Sagvar

Distt. Unnav

Uttar Pradesh

is changing his will. He wants to change the centuries' old family tradition. He wants to rewrite it in new words. He does not understand that why people do not take risk of changing their will. Why don't they understand that without changing the will, it is not possible for them to lead their life.

Anyway, Babu Jaswant does not want to lead his life in pain.

He had just decided that before reaching *glaxo apartments*, he was going to take three-wheeler to *Nirman Vihar market*. He was going to book his ticket through Goyal travel agent of day after tomorrow in Shatabdi for Kanpur. Then he would make call from STD booth to (Netaji) Raam Khilavan Yadav and talk to Sunguniya. It was about 1 pm . Sunguniya must have been doing her household work right now.

Babu Jaswant Singh wanted to tell Sunguniya – whatever she wanted to address him as, he was ready for it. She would decide not him. He also knew that it was only Sunguniya who could give name to this relationship. In true words, he had been living this anonymous relationship between him and her till now in his heart only. He would have continued the same if he didn't have this long poem of Anima Das.

Babu Jaswant Singh would tell Sunguniya – today she had to listen to him only. Only him. He wanted to tell something, which perhaps he would never be able to do in future. He wanted to live the rest of his life with his Giligadu, Katyayani and Kumudini. He wanted to have the view of the banyan tree of Kanpur every day. He could not forget the chirpings of sparrows in the dawn and made other birds wake up in the

morning. Then the flock of birds would start singing their chorus in one rhythm – the chorus of twirking – his soul got rejuvenated.

Babu Jaswant Singh wanted to tell the same to Sunguniya. After reaching Kanpur, he would call his known advocate Munna Singh Kushwaha. He was going to make his new will and get it registered that Kanpur property was not his ancestral property. He had earned it on his own. After his death, Sunguniya would be the owner of the house. He also wanted to take a new locker on her behalf. So, that she would not have to face any controversies in future. Even if she would have to face any, he knew that Sunguniya was capable enough to face any challenge.

He knew Narendra's nature. This unexpected behaviour would definitely jostle Narendra. He was going to hate him. He might take a decision that he was not going to shave his head, rather he would not attend his cremation ceremony. He does not want to drag her into any family controversies.

He was going to tell Sunguniya and endorse it in his will that her sons Raamratan and Abhishek Parse would perform all his cremation ceremonies.

Yes, Sunguniya should prepare lunch for him. He was going to take only breakfast in Shatabdi. What he liked she knew.

He wanted to tell many other things to Sunguniya. But he restrained himself thinking that the exchange of conversation would continue in normal course. It was not right to be impatient. Nothing more than this on telephone – that is all.

दूसरा–अध्याय

हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद में आने वाली पाठाधारित समस्याएँ

साहित्यिक एवं अन्य ग्रन्थों के अनुवाद ने समाज में एकता को सुदृढ़ आधार दिया है।[1] हिन्दी भारत के एक विशाल भूभाग की भाषा है, जिसको संविधान में राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है। हिन्दी में अनुवाद कर्म की दीर्घ परम्परा है। बड़े-बड़े अनुवादकों ने विभिन्न भाषाओं से महत्त्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद कर हिन्दी की धरोहर को पुष्ट किया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचन्द्र, जैनेन्द्र कुमार, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, राजकमल चौधरी, विष्णु खरे आदि के महत्त्वपूर्ण अवदान को इस दिशा में प्रमुखता से रेखांकित किया जाता है। उक्त अनुवादकों ने अन्य भारतीय एवं राष्ट्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करते अनुवाद कर्म के अनेक मार्ग प्रशस्त किए हैं। इनके द्वारा अनूदित कृतियों से उस दौर की समाज व्यवस्था को तो विशिष्ट लाभ हुआ ही, अज तक के पाठक भी लाभान्वित हो रहे हैं। लेकिन

---

[1] *भारतीय भाषाएँ और हिन्दी अनुवाद*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1996

जब हिन्दी भाषा की कृतियों का अनुवाद किसी अन्य देश की भाषाओं में किया जाता है, तब अनुवाद की प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण बन जाती है।

उसमें शब्द, वाक्य, पदबंधा के साथ-साथ संस्कृतियों के अनुवाद की भी चुनौती सामने आती है। अनुवाद प्रक्रिया में आने वाली समस्याएँ मूलत: दो प्रकार की होती हैं - अन्तर्निष्ठ और बहिर्निष्ठ। भाषिक संरचना, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आदि के कारण आने वाली समस्याओं को अन्तर्निष्ठ माना जा सकता है। ये समस्याएँ अनुवाद कार्य के सैद्धान्तिक एवं व्यावसायिक पक्षों से जुड़ी होती हैं। बहिर्निष्ठ समस्याएँ वे हैं, जो प्रत्यक्षत: अनुवाद कार्य के अन्तर्गत नहीं आतीं, परन्तु बाहर से उस कार्य को प्रभावित करती हैं। राजनीतिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से उपजने वाली समस्याओं को इस कोटि में रखा जाता है।

दरअसल अनुवादक मूल भाषा के पाठ का अनुवाद करते हुए उसमें निहित संस्कृति, मूल्य मान्यता आदि का भी अनुवाद करता है। अनुवाद की बहुत-सी परिभाषाएँ भाषाविदों ने भी दी हैं। महान् अनुवाद चिन्तक J. C. Catford ने अनुवाद का आधार समतुल्यता का सिद्धान्त माना है। वहीं रोमन जैकब्सन ने इसे आलोचनात्मक प्रक्रिया कहा। भाव, भाषा का पूरक होता है। भाषा की लय, उसका प्रवाह, उसके मुहावरे, चरित्रों की स्थानिकता से यह निहित है कि मूल भाषा से अनुवाद करना सरल कार्य नहीं है। भाषा, संस्कृति की देन है। एक संस्कृति को उन्हीं मूल्यों के साथ दूसरी भाषा में ढालना सृजनात्मक प्रक्रिया है।

प्रस्तुत शोध के दौरान *'गिलिगडु'* उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद एवं उसका संश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में पहले ही अनूदित हो चुका है। विदित है कि अंग्रेजी एक संश्लिष्ट (Synthetical) भाषा है तथा हिन्दी विश्लिष्ट (Analytical) भाषा है। स्पष्टतः कई कठिनाइयाँ सामने होने के बावजूद संरचना के स्तर पर यह अनुवादयात्रा काफी रुचिकर रही।

'*गिलिगडु*' उपन्यास दो बुजुर्ग परिवार से जुड़ी समस्याओं, पीढ़ियों के टकराव और बिखराव की विलक्षण कहानी है। इस उपन्यास में कई मोड़ आते हैं, जिनका रोचक वर्णन करती मोहक भाषा में किया गया है कि यह कृति पाठकों के लिए अत्यन्त रुचिकर बन जाती है। लेकिन यही रोचकता अपनी सांस्कृतिक विभिन्नता तथा विषमताओं को दूसरी भाषा में उतारने में कई प्रकार की समस्याएँ पैदा करती है।

'*गिलिगडु*' उपन्यास के नायक बाबु जसवंत सिंह का चरित्र अत्यन्त विश्लेषणात्मक है। वे निरन्तर अपने वर्तमान और भूतकाल दोनों में जी रहे हैं। कहानी भी दोनों काल में पल्लवित होती रहती है। वर्तमान एवं अतीत में कथा प्रसंगों की ताबड़तोड़ आवाजाही के कारण बोध और विश्लेषण के स्तर पर कई उलझनें उत्पन्न होती रहती है। 'वर्तमान एवं अतीत' के बीच समन्वय बिठाने की कठिनाई कदम-कदम पर सामने आई। उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी भाषा और हिन्दी भाषा का ढाँचा एक दूसरे से बिल्कुल अलग है। हिन्दी भाषा में विभिन्न अर्थ को व्यक्त करने के लिए एक साथ कई काल का प्रयोग सम्भव है, अंग्रेजी भाषा में ऐसा नहीं कर सकते। हिन्दी भाषा में कोई Definit Article नहीं होता। हिन्दी भाषा में एक ही वाक्य में दो बार भविष्यत काल उपयोग कर सकते हैं, परन्तु

अंग्रेजी भाषा में करने पर वाक्य गलत हो जाता। अनुवाद करते हुए सबसे पहले यही समस्या सामने आती है कि कथा-विस्तार का किस काल में अनुवाद किया जाए।

'*गिलिगडु*' उपन्यास सात अध्यायों में विभक्त है। प्रारंभिक छः अध्यायों के नाम 'पहली गैरमौजूदगी' से 'छठी गैरमौजूदगी' तक है। परन्तु इसका अन्तिम अध्याय 'छठी गैरमौजूदगी' के बाद सीधे 'तेरहवी गैरमौजूदगी' पर समाप्त होता है। यह कहानी तेरह दिनों की है। मनुष्य की मृत्यु होने पर 'तेरहवीं' का महत्त्व हिन्दू धर्म में व्याख्येय है। अंग्रेज़ी अनुवाद करने पर Sixth Absence से सीधे Thirteenth Absence में जाना पाठकों को तर्कहीन लगेगा। इसका अर्थ स्पष्ट करने के लिए Foot Note की आवश्यकता पड़ी।

यह समस्या काल के साथ-साथ प्रसंग की भी थी। कौन सी बात किस प्रसंग में कही जा रही है, उसी भाव को अंग्रेज़ी भाषा में ढालने की समस्याएँ बार-बार सामने आईं। स्रोत पाठ को लक्ष्य भाषा में अनूदित करने की प्रक्रिया पर बड़े-बड़े विद्वानों ने अपनी राय दी है। कृष्ण कुमार गोस्वामी अपनी पुस्तक '***अनुवाद विज्ञान की भूमिका***' में लिखते हैं - ''इस पुनर्रचना में अनुवादक की यह भूमिका लेखक के रूप में होती है। ... वास्तव में अनुवाद प्रक्रिया के भीतर अनुवादक को तीन प्रकार्यों के कारण तीन भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। विश्लेषण के स्तर पर अर्थ ग्रहण के प्रकार्य के लिए पाठक की भूमिका, अन्तरण के स्तर

पर अर्थान्तरण के प्रकार्य के लिए द्विभाषिक की भूमिका और पुनर्रचना के स्तर पर अर्थसंप्रेषण के प्रकार्य के लिए लेखक की भूमिका निभानी पड़ती है।''[1]

आलोच्य उपन्यास के उपशीर्षकों का अनुवाद करना भी चुनौतीपूर्ण था। उपन्यास के सभी उप-अध्यायों का नाम या तो लेखिका ने पुराने गानों पर रखा है। 'यह क्या जगह है दोस्तो', 'गठरी में लागा चोर' जैसे गानों की पंक्तियों के अलावा देशी और अंग्रेजी शब्दों पर उपशीर्षक दिए गए हैं। 'फ्लू' या 'सिंटेक्स टंकी' जैसे उपशीर्षकों के अनुवाद में कोई कठिनाई नहीं आई। परन्तु हिन्दी गानों का अनुवाद अंग्रेज़ी के प्रचलित मुहावरों द्वारा किया गया है। यह कहाँ तक उपयुक्त है, यह तो विशेषज्ञ ही बता सकते हैं।

अनुवाद प्रक्रिया में किसी भी मूल रचना का अनुवाद करते हुए शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ स्रोत पाठ के संरचनात्मक ढाँचे की रक्षा अनिवार्य है। इसे शाब्दिक अनुवाद (Literal Translation) कहा जाता है। विदित है कि शाब्दिक अनुवाद में कई बार पाठ का भाव पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता। शाब्दिक अनुवाद में कई बार निष्प्राण होने का भय बना रहता है।

J C Catford अनुवाद की परिभाषा देते हुए लिखते हैं – Translation as a Uni-directional process which involves the replacement of textual material in another language (TL)[2]

'स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा में समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन अनुवाद है।'

---

[1] *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, पृ. 53, कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण, 2008

[2] *A Linguistic theory of Translation*, P. 20, VP, London, 1965

समतुल्यता कई स्तरों पर सम्भव है। ध्वनि के स्तर पर हो, शाब्दिक स्तर पर हो, पद के स्तर पर हो, वाक्य के स्तर पर हो या फिर प्रकार्य के स्तर पर हो ... हर जगह समतुल्यता का विशेष महत्त्व है।

'*गिलिगडु*' के अनुवाद में इन सभी स्तरों का प्रयोग किया गया है। संज्ञावाचक शब्दों का लिप्यन्तरण ठीक वैसा ही रखा गया है जैसे कि स्रोत भाषा में है। अनुवाद करते हुए सम्बन्धों का अनुवाद नहीं किया गया है। माता-पिता को Mother Father नहीं किया गया है। न ही मामा चाचा को Uncle। किया गया। भारत में हर सम्बन्ध अपनी गरिमा लेकर आता है। अंग्रेजी अनुवाद करते हुए रिश्ते की उष्मा बोझिल-सी प्रतीत हुई। इसलिए रिश्ते और नामों का अनुवाद नहीं किया गया।

शाब्दिक अनुवाद करते समय यह विशेष ध्यान रखा गया है कि पद का पर्याय लक्ष्य भाषा के अनुकूल हो। उपन्यास में जगह-जगह नेता जी, बाबू जसवंत सिंह, कर्नल स्वामी जैसे चरित्र की उपस्थिति है। ये केवल किसी ऑफिस या राजनीतिक पहचान नहीं दर्शाते, बल्कि उनके चरित्र को भी दर्शाते हैं। नेताजी का नाम राम खिलावन यादव है और उनमें आजकल के नेताओं के सारे गुण विद्यमान हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार गरीब और पिछड़े वर्ग को शब्द जाल से अपनी पार्टी में शामिल किया जा सकता है। इसलिए उपन्यास में, बाद में नेताजी का पूरा नाम न लिखकर केवल 'नेताजी' ही लिखा गया है। 'कर्नल स्वामी' नाम में उनका पद और उनका रुतबा दोनों झलकते हैं।

बाबू जसवंत सिंह एक रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी हैं। उनकी मानसिक पीड़ा एवं लाचारी उपन्यास में बहुत ही मार्मिक रूप से उजागर की गई है। वे इतने असहाय हैं कि 'फ्लू' उप-अध्याय में आत्महत्या करने वाले लोगों के पक्षधर की तरह विचार करते हैं। उनका मानसिक उद्वेलन उनके वक्तव्य में झलकता है। वे कहते हैं कि मौत को चुनना उनके वश में नहीं होगा कुछ साहसियों के वश में। चुन लेते हैं कुआँ, बावड़ी, सल्फास की गोलियाँ, पंखे का डंडा ... (पृ. 124)। इस मानसिक पीड़ा का अनुवाद अगर उसी भावना को व्यक्त करता न हो तो यह रचना के साथ अन्याय होगा। इसलिए अनुवाद करते हुए विशेष ध्यान दिया गया है कि शब्दानुवाद के साथ भावानुवाद का संतुलन बना रहे।

कर्नल स्वामी जो पारम्परिक खाना जैसे इडली, साम्भर या नरेन्द्र की अम्मा जो खाना बनाया करती थी, उसको भी जैसे का तैसा मूल रचना से लक्ष्य भाषा में लाया गया है। अनुवाद करते समय और भी कई कठिनाइयाँ आई।

जैसा कि चित्रा जी कहती है कि वह अवध की है और उनकी जड़ें अवधी से जुड़ी है। उनकी शब्दावली भी देशज शब्दों से भरी हुई है। गाय का अग्रासन, खड़ाऊँ की खट-खट, कुंकुआना, कनपटियों में खून बटूरनु कोरी सलेट आदि शब्दावली का अनुवाद काफ़ी कठिन रहा। अनुवाद करते समय जगह और भारतीय ब्रैंड आदि का अनुवाद भी नहीं किया गया। ये शब्द संज्ञावाचक हैं, इसलिए इनका अनुवाद करना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

उप–अध्याय 'जूते' में जब कर्नल स्वामी बाबू जसवंत सिंह को अपनी पोतियों '*गिलिगडु*' का वर्णन कर रहे होते हैं तो उनके गाए हुए गाने भी सुनाते हैं।

हाथी राजा बहुत बड़े
सूंड उठाकर कहाँ चले
मेरे घर में आओ न
हलुवा पूड़ी खाओ न।

इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है–

An elephant is terribly big
has a big trunk
walking-tik-tok-tik
you are most welcome in our shed
have some pudding & have
some bread.

यह अुनवाद कहाँ तक उपयुक्त है यह तो अनुभवी ही बता सकते हैं परन्तु ऐसी पार्वतियों का अनुवाद बहुत रोचक रहा।

'*गिलिगडु*' आदि से अंत तक एक प्रतीकात्मक उपन्यास भी है। वस्तुत: यह एक मलयालम शब्द 'किलकिल' है, जिसे हिन्दी में गिलिगडु किया गया है। इसका वास्तविक अर्थ है चिड़िया। इस उपन्यास के द्वारा चित्रा जी ने एक फैंटसी का निर्माण किया है, जिसमें एक संयुक्त परिवार चित्रित है। अंत में वह 'यूटोपिया' चिड़िया के घोंसले की तरह तिनका तिनका बिखर जाता है।

के. वनजा अपनी पुस्तक '*चित्रा मुद्गल एक मूल्यांकन*' में लिखती है – 'यह भूमण्डलीकरण' आसुरी संस्कृति का प्रवेश है। इस भूमण्डलीकृत दुनिया में उपभोग संस्कृति ने अतिशय रूपधारण किया है।[1]

'*गिलिगडु*' उपन्यास आज के मशीनी युग और मशीनी मानव पर कटाक्ष करता है। इस कटाक्ष, द्वन्द्व और रोष का अनुवाद दूसरी भाषा में करना कठिन अपितु रुचिकर अनुभव था।

यह व्यंग्य एवं कटाक्ष कभी बाबू जसवंत सिंह की असहाय परिस्थिति से झलकता है तो कभी उनके बच्चों के ऊपरी प्यार के दिखावे से सामने आता है। लेखिका ने उप-अध्यायों के शीर्षक भी व्यंग्यात्मक ही दिए हैं। बाबू जसवंत सिंह अपनी पुत्री शालिनी से बात करते हुए कहते हैं कि इस घर में दो कुत्ते हैं। टामी की स्थिति उनसे बेहतर है क्योंकि उसकी घर में कोई उपयोगिता है। बाबू जसवंत सिंह के पुत्र नरेन्द्र उनकी बहू ऊपरी चिंता और प्यार का तो दिखावा करते हैं। लेकिन खाने से लेकर, अवहेलना, अपमान और यहाँ तक उन्हें वृद्धाश्रम भेजने का भी निर्णय कर चुके थे। परन्तु तानाकशी रोष या असहाय होने की पीड़ा किसी एक संस्कृति का हिस्सा नहीं है। यह सभी संस्कृतियों में मौजूद है। इसका अनुवाद अंग्रेजी में करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि चाहे शब्दों के विकल्पों से समझौता करना पड़े परन्तु भावों को ज्यों का त्यों उतारा जाए। वह पीड़ा और विवशता पाठक के मन को वैसे ही छुए जैसे की मूल कृति ने हुआ है।

---

[1] के. वनजा, *चित्रा मुद्गल : एक मूल्यांकन*, प्रथम संस्करण, 2011, सामयिक बुक्स

कर्नल स्वामी की फैंटसी की दुनिया अंग्रेजी अनुवाद करते समय वैसे ही सृजन करने का प्रयास किया गया है जैसा कि मूल कृति में है।

हमें याद रखना चाहिए कि अनुवाद दो भाषाओं का ही नहीं बल्कि दो संस्कृतियों का भी होता है। भारतीय संस्कृति में ऐसे कई रीति-रिवाज है जो पाश्चात्य सभ्यता में नहीं है। उपन्यास में नरेन्द्र की अम्मा का वर्णन ठेठ देहात की स्त्री के रूप में किया गया है। वही बाबू जसवंत सिंह एक पारम्परिक अनुशासित, विनयशील साधारण से व्यक्ति है। बाद में उपन्यास में अनेक प्रेम सम्बन्धों की भी पता चलता है। जब वह बीमार होते हैं तो बेहोशी में अपनी प्रेमिका शिवानी को देखते हैं। पत्नी के गुजरने के बाद जब बाबू जसवंत सिंह कानपुर से दिल्ली आते हैं तो बच्चों को अवहेलना सहते हैं। जब वह कर्नल स्वामी से मिलते हैं तो उनसे इतना लगाव हो जाता है कि उनके बिना वह अधूरे महसूस करते हैं। उनका चरित्र बार-बार गुजरे हुए वक्त और वर्तमान में डोलता रहता है। सुनगुनिया से उनका रिश्ता भी लेखिका ने बहुत ही नाजुक एवं खूबसूरत-सा दिखाया है। उनके वार्तालाप में ऐसा कुछ भी नहीं है परन्तु वह मन ही मन चाहते हैं कि सुनगुनिया उन्हें बाबू जी बुलाए।

लम्बी कविता -

''सुनगुनिया से वह अपने मन की एक बात कहना चाहते हैं। वह उन्हें मालिक कहकर न पुकारा करे। क्या कहे? बाबूजी कहे। कभी-कभार उसके मुँह से बाबूजी निकल जाता है तो उन्हें बहुत भला लगता है।'' (पृ. 83)

इन पंक्तियों में शब्दों से ज्यादा भावनाओं का संवाद हो रहा है।

संवादों के साथ-साथ चरित्रों का अनुवाद करने के लिए उसकी मानसिकता समझनी जरूरी है। साथ ही चरित्र का रहन-सहन विश्वास और संस्कृति से जुड़ना आवश्यक है। बाबू जसवंत सिंह कानपुर के हैं तो उनकी भाषा में कानपुरिया ठेठपन है। वहीं कर्नल स्वामी संवाद कई जगह अंग्रेजी की शब्दावली प्रयोग में लाते हैं। उनका चरित्र ऊपरी तौर पर बहुत खुश एवं जीवन से सन्तुष्ट दिखाया है। वह हर वक्त अपने बच्चों की बात करते हैं। वह बाबू जसवंत सिंह को सुनाते हैं कि किस प्रकार उनके बच्चे आज्ञाकारी है और उनकी कोई बात नहीं टालते। 'गिलिगडु' कर्नल स्वामी की पोतियों उनके साथ हर वक्त खेलती है, जिद करती है और बहुत प्यार करती है।

इन सबके बीच एक बहुत ही आत्मीय सम्बन्ध, जो 'गिलिगडु' उपन्यास में दर्शाया गया है वह है बाबू जसवंत सिंह एवं कर्नल स्वामी का रिश्ता। बाबू जसवंत सिंह कर्नल स्वामी के बिना व्याकुल हो जाते हैं। हर कठिनाई में, हर खुशी के अवसर पर केवल उन्हें याद करते हैं। उनके न मिलने पर उन्हें ढूँढ़ने चले जाते हैं। कर्नल स्वामी की मृत्यु का आघात सबसे ज्यादा बाबू जसवंत सिंह को ही पहुँचता है।

इस प्रकार इन रिश्तों की गहराई को समझे बिना इनकी भावनाओं का अनुवाद सम्भव नहीं था। अनुवाद करते हुए प्रस्तुत शोधकर्ता का पूरा प्रयास रहा है कि कृति के साथ उसमें व्याप्त भावनाओं को भी पूरा न्याय मिले।

शाब्दिक अनुवाद उचित है या अनुवाद में भावात्मकता पर ज्यादा जोर देना चाहिए, यह चर्चा नाइडा के दो प्रमुख प्रकाशन के बाद पुरानी हो गई थी।

सन् 1964 और 1969 में उन्होंने अनुवाद के सिद्धान्तों पर दो पुस्तकें लिखी। *Toward a Science of Translating (1964) The Theory and Practice of Translation* वह लिखते हैं – *Formal equivalence focuses attending on the message itself in both form and content.*

Dynamic or functional equvalence is based on the principle of equivalent effect, the message is tailored to the receplors linguistic needs and cultural expections, aiming at complete naturalness of expression.[1]

शाब्दिक और भावात्मक अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई आती है उसके मुहावरों का अनुवाद करने की प्रक्रिया में। किसी भी जगह के मुहावरे सम्बन्धित संस्कृति की देन होते हैं। एक संस्कृति का अनुवाद दूसरी संस्कृति में करने के लिए दोनों संस्कृतियों की परस्परता का ज्ञान भी आवश्यक है।

चित्रा जी ने अपने साक्षात्कार में कहा है कि मुहावरे उनकी भाषा में अवधी की देन है। बैसवाडी (अवध) इलाका क्षत्रियों का इलाका है जिनकी बोलचाल में मुहावरे सहज ही इस्तेमाल होते हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास लिखते वक्त भी उन्होंने मुहावरों का बहुतायत में प्रयोग किया है। उन्होंने उपन्यास के आरम्भ से ही मुहावरों का प्रयोग शुरु कर दिया था। जैसे –

i. उम्मीद पर पानी फेर दिया – hopes have gone to dogs (पृ. 17)
ii. पिघले सीसे सा टपकना – drips like molten lead (पृ. 11)
iii. पारा उबलने लगता – blows up the gasket (पृ. 28)
iv. जान का जंजाल कटा – blew away the cobwebs (पृ. 28)

---

[1] *Towards a science of Translating*, Noida, L C Taper Leiden, C J Brell

v. लकीर के फकीर – Master of line (पृ. 33)

vi. अड़ियल घोड़ी – Stubborn as mule (पृ. 131)

vii. घर का भेदी – Black Sheep (पृ. 82)

उपन्यास के कई मुहावरों का literal translation किया गया है। इन मुहावरों का अनुवाद कठिन नहीं था क्योंकि अंग्रेजी में भी इन मुहावरों का प्रयोग कई जगह किया जाता है। लेकिन उपन्यास कई जगह ऐसी शब्दावली या मुहावरों का प्रयोग हुआ जो केवल भारतीय संस्कृति के प्रतीक है। पाश्चात्य सभ्यता का दूर दूर तक इन शब्दावली अथवा मुहावरों कोई सम्बन्ध नहीं है। उदाहरण के तौर पर 'ऊँच-नीच' पद – जिसका हिन्दी भाषा में इसका तात्पर्य है सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतन। अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद Up and down इसका भाव स्पष्ट नहीं कर सकता। जब सुनगुनिया फोन करके बाबू जसवंत सिंह को कहती है – 'मालिक बैठे हुए है कोसों दूर। ऊँच नीच समझना हो सुनगुनिया को तो वह किससे सलाह-मशविरा करे' (पृ. 81)। इसका भावात्मक अनुवाद इस प्रकार से किया गया है –

The master is miles a part. If sunguniya wants to have some words of wisdom, whom should she seek?

इसके अलावा ऐसे कई शब्द एवं मुहावरे आए जिनका भावात्मक अनुवाद किया गया है, यथा–

i. चुल्लू खोजते फिरोगे – having egg on face (पृ. 27)

ii. गठरी में लगा चोर – wake up before the milk spills (पृ. 35)

iii. उम्र के रोने की रियायत – concession of his age (पृ. 56)

iv. मन फूंकी कुप्पी सा – heart put out (पृ. 112)

v. अपनी धरती पर अपना आकाश उठाए – having their own land of imagination and sky of hope (पृ. 74)

vi. हाथ खड़े कर दिए – Gave up (पृ. 119)

vii. अड़ियल घोड़ी – stubborn as mule (पृ. 131)

viii. पारा उबलने लगता है – blows up the gasket

जैसा कि भाषाविद् कहते हैं कि पूरे मुहावरे को एक भाषिक इकाई मानकर अनुवाद करना चाहिए। fell in love for you का अर्थ प्यार में गिरना नहीं होता या कल की कल देखेंगे। यहाँ 'कल' का तात्पर्य (future Tomorrow) भविष्य से है। अगर अनुवाद में भाव स्पष्ट न किया जाय तो कृति की सार्थकता समाप्त हो जाती है।

मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद में भावानुवाद की प्राथमिकता को भोलानाथ तिवारी जैसे भाषाविद् ने भी माना है। अपनी पुस्तक '*अनुवाद विज्ञान*' के उप-अध्याय '*मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याएँ*' में वह लिखते हैं –

''सामान्य शब्दावली के माध्यम से की गई अभिव्यक्ति जितनी अधिक प्रभावशाली तथा व्यंजक होती है, उसका अनुवाद भी उतना कठिन होता है।''

''मुहावरे से युक्त अभिव्यक्ति में अर्थ की गहराई, ध्वन्यात्मकता के कारण सामान्य शब्दों की अभिव्यक्ति से अधिक होती है। इसलिए जब हम

अनुवाद में किसी मुहावरे के स्थान पर सीधे सीधे शब्दों का प्रयोग होता है तो यह अनुवाद प्रायः मात्र कामचलाऊ होता है।''[1]

लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या यह भी है कि अनुवादक को यदि दोनों भाषाओं का ज्ञान हो फिर भी सभी लोकोक्तियों का अनुवाद सम्भव नहीं हो पाता है। समान लोकोक्तियाँ लक्ष्य भाषा में खोजने की कठिनाई अनुवादक को झेलनी पड़ती है।

किसी भी स्थान विशेष की लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे वहाँ के वातावरण से उपजे होते हैं। अनुवाद प्रक्रिया में शब्दों के साथ साथ वहाँ की संस्कृति वातावरण एवं संस्कारों का भी अनुवाद होता है। '*गिलिगडु*' उपन्यास का अनुवाद करते हुए चित्रा जी द्वारा उपन्यास में रचे गए वातावरण का पुनः सृजन बहुत आवश्यक है। वातावरण का सृजन, उपन्यास में उल्लेख की गई विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े संस्कार तथा विभिन्न प्रवृत्ति वाले पात्र करते है। एक अनुवादक के लिए यह अनिवार्य है कि वह उपन्यास की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा उपन्यासकार की मनोभूमि को पूरी तरह समझकर ही अनुवाद का कार्य प्रारम्भ करें। अनूदित कृति में प्राण प्रतिष्ठा तभी संभव है जब वह मर्म को समझ सके।

'*गिलिगडु*' उपन्यास में दो परिवारों का विवरण है। एक परिवार बाबू जसवंत सिंह का है। वह कानपुर (उ. प्र.) शहर के निवासी है। वह पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे के साथ दिल्ली आ जाते हैं। बाबू जसवंतसिंह की बोलचाल रहन सहन ठेठ कानपुरिया है, चित्रा मुद्गल स्वयं अवध की है। यू. पी. के पात्र

---

[1] भोलानाथ तिवारी, पृ. 105-114 *अनुवाद विज्ञान*, 1972, शब्दकार, दिल्ली

की रचना में उन्हें इतनी कठिनाई नहीं हुई होगी। साथ ही चित्रा जी ने अपने साक्षात्कार में बताया था कि उपन्यास के कई पात्र उन्होंने असल जिन्दगी से लिए हैं। वह बहुत से वृद्धाश्रमों से जुड़ी भी रही हैं।

इस उपन्यास के द्वारा उन्होंने पुरानी पीढ़ी और आजकल की पीढ़ी का टकराव दिखाया है। धन के प्रति अतिमोह के कारण आजकल लोग माता-पिता की हत्या करने में भी गुरेज नहीं रखते। माता-पिता अकेलेपन की पीड़ा सहते हैं। यह पीड़ा और असहनीय इसलिए हो जाती है क्योंकि वह तन और मन दोनों से दुर्बल हो जाते हैं। लेकिन यह उपन्यास केवल पीड़ाओं का रोना-धोना ही नहीं बताना है। चित्रा जी ने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से एक फैंटेसी बुनी है। और अंत में फैंटेसी तिनका-तिनका बिखर जाती है। जब से मनुष्य ने होश संभाला है, वह बुढ़ापे की भयावहता, लाचारी तथा अपरिहार्यता को भुगतता रहा है। यह बात अलग है कि वह लगातार इसे छुपाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

कर्नल स्वामी बाबू जसवंत सिंह को अपने संयुक्त परिवार के किस्से सुनाते रहते हैं। वह किस प्रकार अपनी पोतियों के साथ हँसते खेलते हैं। उनके बच्चे बहुत आज्ञाकारी है। परंतु वास्तव में वह अपने पुत्रों की अवहेलना की पीड़ा से खोखले हो चुके हैं।

अनुवाद केवल पात्रों द्वारा कथनों तक सीमित नहीं होता। अनुवाद प्रक्रिया में पात्रों की पीड़ा, लाचारी, संघर्ष एवं संवेदनाओं का भी अनुवाद होता है। चित्रा जी अपने एक साक्षात्कार में कहती है कि सामाजिक सरोकार उन्हें लिखने की

प्रेरणा देता है। समाज में जो विसंगतियाँ है, वो आखिर ऐसी बिडम्बनापूर्ण क्यों है? और ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए जैसे सवाल उनके मन में द्वन्द्व पैदा करते हैं। लेखिका का मुख्य उद्देश्य है कि उनका लेखन पाठकों के अनुभव का हिस्सा बने। अनुवाद करते हुए भी यह विशेष ध्यान दिया गया है कि शब्दजाल के कारण कवि संवेदनाविहीन न हो। विशेषत: जब मूल कृति संवेदनाओं एवं मानवीय सम्बन्धों से परिपूर्ण हो।

'*गिलिगडु*' उपन्यास आजकल की आत्मकेन्द्रित पीढ़ी को आधार बनाकर लिखा गया है। इस उपन्यास में चित्रित ज्वलंत समस्या यह है कि आज की नई पीढ़ी उपभोग संस्कृति की वाहक है। चित्रा जी ने बड़ी ही कुशलता से इस लघु उपन्यास द्वारा जीवन और समाज के बहुत सारे पहलुओं को छुआ है। इस उपन्यास में एक ओर जहाँ स्त्रीवादी दृष्टिकोण है, जो अरुणिमा दास के माध्यम से दिखाया गया है तो दूसरी ओर दलितों की स्थिति को सुनगुनिया जैसे पात्रों द्वारा उजागर किया गया है। साथ ही बेसहारा लोगों की परिस्थितियों से लाभ उठाने वाले दबंग राजनीतिज्ञों की भी चर्चा की गई है।

अनुवाद न केवल एक कृति को दूसरी कृति से परिचित करवाता है बल्कि एक समाज को दूसरे समाज से जोड़ता है। बुढ़ापे की समस्याओं से आज विश्व का हर समाज परिचित है और भयभीत भी। लेकिन भारत में वृद्धों की समस्या कहीं अधिक भयावह है क्योंकि यहाँ वृद्धों को केवल अपने परिवार के सदस्यों पर ही निर्भर रहना पड़ता है और वह भी अर्थ एवं सुविधा के अभाव में। भूमण्डलीकरण विश्व में उपभोग संस्कृति ने विषम रूप धारण कर लिया है। पारिवारिक मूल्यों का अभाव हो गया है। ऐसी समस्याएँ तथा सामाजिक संघर्ष

अहिन्दी या अंग्रेजी पाठकों तक पहुँचाने के लिए अनुवाद की भाषा में लयात्मकता पर ध्यान दिया गया है।

अनूदित पाठ की यह विशेषता है कि अनुवाद में मूल पाठ के भावों तथा लयात्मकता के अनुवाद पर जोर दिया गया है तथा शाब्दिक अनुवाद की थोड़ी छूट ली गई है। अनुवाद करते समय केवल यही महत्त्वपूर्ण नहीं होता कि अनुवादक को लक्ष्य भाषा के व्याकरण या भाषिक संरचना का पूर्ण ज्ञान हो। अनुवादक के लिए यह भी आवश्यक है कि वह मूल रचना के विचार तत्त्व के साथ लेखक की शैली पर विशेष ध्यान रखे। इस उपन्यास में हालांकि तत्सम, तद्भव, हिन्दुस्तानी, मलयालम, अवधी शब्दों का यथाप्रसंग प्रयोग किया गया है लेकिन इसमें प्रयुक्त भाषा का प्रवाह एक लय में वह रहा है। इसलिए अनुवाद की भाषा में भी लय की रक्षा करना था।

अनुवाद में भी मूल में सुरक्षित संवेदना बुढ़ापे की बेवसी का प्रामाणिक चित्रण भी किया गया है ताकि अंग्रेजी के पाठक अनूदित उपन्यास से जुड़ पाएँ। पाश्चात्य समाज में यह मशीनी मानववाला जीवन और भी प्रचलित है। गिलिगडु उपन्यास में चित्रा जी ने पात्रों की अन्तर्ध्वनि पाठकों तक पहुँचाने के लिए व्यंग्य का सहारा भी लिया है। उन्होंने ऐसी शब्दावली का प्रयोग किया है जो पाठकों को शब्दों से परे सोचने के लिए बाध्य करती है। उनके एक उप-अध्याय का नाम 'होश' रखा गया है।

इस उप-अध्याय 'होश' में बाबू जसवंतसिंह बीमार होकर अपना होश खो बैठते हैं। वह बीमारी में अपनी पुरानी प्रेमिका शिवानी को देखते हैं। अपनी बहू सुनयना को नहीं पहचानते। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया जाता है। परन्तु परिस्थिति को ठीक ढंग से समझा जाए तो वास्तव में किसे होश नहीं है? उस इंसान को जिसे बीमारी के कारण अपने लोग नहीं पहचाने जा रहे या उन्हें उन बच्चों को जो पूरे होश में होने के बाद भी अपनों को नहीं पहचानते और उनकी जरा भी कदर नहीं करते।

उप-अध्याय 'गठरी में लागा चोर' शीर्षक भी सांकेतिक है। इस अध्याय में लेखिका ने दर्शाया है कि किस प्रकार आजकल के माता-पिता इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ है कि वह अपने बच्चों को स्वयं दूर करते जा रहे हैं। वह अपना वक्त देने की जगह उनके हाथों में नए-नए उपकरण पकड़ा देते हैं। वह नहीं जानते कि वह स्वयं अपने बच्चों को मशीनी बना रहे हैं।

हालांकि अंग्रेजी में अनुवाद करते हुए इन उप-अध्यायों का अनुवाद 'होश' 'Consciousness' तथा गठरी में लागा चोर 'wake up before the milk spills' किया गया है। लेकिन इसके भावार्थ को स्पष्ट करने के लिए उप-अध्यायों के पात्रों के संवाद का भावार्थ अनुवाद किया गया है। चित्रा जी की शैली रोचक होने के साथ साथ अनुवाद के लिए उतनी ही चूनौतीपूर्ण है। शैली का अनुवाद कठिन है लेकिन इसकी अपेक्षा पाठ का अनुवाद सरल है।

जैसा कि 'काव्यानुवाद की समस्याएँ' में लिखा गया है – ''शैली अपने आप में एक अपूर्ण अभिव्यंजना है – भाव या विचार को अभिव्यक्त करने के लिए। अत: अपूर्ण को दूसरी भाषा में रूपान्तर करना होगा जो और भी अपूर्ण होगा।''[1]

पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी चित्रा जी ने उपन्यास में बड़ी कुशलता से उजागर किया है। उनके लेखन में Sigmund Freud की Psychological analytical theory और Dreams theory का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। इसका अनुवाद समस्यापूर्ण कम तथा चुनौतीपूर्ण एवं रोचक ज्यादा रहा। उपन्यास में विभिन्न पात्र अपनी अपनी विषम परिस्थितियों से लड़ रहे हैं और इन परिस्थितियों का उन चरित्रों की मानसिकता पर अलग प्रभाव पड़ता है। सबसे पहले तो इन पात्रों को पढ़कर उनके अनुभव से साझा करना रोचक था और फिर अंग्रेजी पाठकों के लिए ग्राह्य बनाना चुनौतीपूर्ण था।

इस उपन्यास में या तो पात्रों का द्वन्द्व है या काल्पनिक संसार चित्रित है। मानसिक रूप से कोई भी शांत, सामान्य एवं सौम्य नहीं है। बाबू जसवंत सिंह को उनका मानसिक द्वन्द्व तथा पुरानी यादें घेरे रहती है। वह अपने बच्चों द्वारा की गई अवहेलना से इतने त्रस्त है कि बीमार होने पर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। वह अपने बच्चों तक को नहीं पहचानते। बाबू जसवंतसिंह एक रिटायर्ड सिविल इंजीनियर है जिनका घर कानपुर (उ. प्र.) में है। पत्नी की मृत्यु के बाद

---

[1] *काव्यानुवाद की समस्याएँ*, सम्पादक भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी, पृ. 18, शब्दकार दिल्ली, प्रथम संस्करण, जनवरी, 1980

वह अपने पुत्र के पास दिल्ली आ जाते हैं। वहाँ उन्हें एक छोटा सा कमरा दिया जाता है तथा कुत्ते को घुमाने की जिम्मेदारी दी गई।

टॉमी की पसंद नापसंद का खयाल रखा जाता है, लेकिन बाबू जसवंत सिंह को सुबह का नाश्ता मुश्किल से नसीब होता है। उन्हें सबसे ज्यादा आघात तब लगता है जब उनके बच्चे उन्हें घर बेचने के लिए जोर देने लगते हैं। साथ ही उनका पुत्र नरेन्द्र इन्हें वृद्धाश्रम भेजने का विचार बनाता है और उनकी पुत्री भी इस बात की वकालत करती है। यह आघात वह सह नहीं पाते और बीमार पड़ जाते हैं। वह याद करते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपनी ख्वाहिशों को परे रखकर बच्चों की जरूरतों को पूरा किया। अब वही बच्चे उन्हें अनुपयोगी समझकर घर से बाहर फेंकना चाहते हैं। बीमारी में वह अपनी प्रेमिका से बाते करते हैं। वह अपनी प्रेमिका को सपने में देखते हैं। चित्रा जी ने बाबू जसवंतसिंह के माध्यम से Freud की Dream Interpretation की Theory का भी प्रयोग किया है।

"Dreams are succession of images imotional and sensations chat accur involuntarily in the mind during stages of sleep."

वह अपने सपनों में ही अपनी प्रेमिका शिवानी से संवाद करते हैं। उन सपनों का अनुवाद कुछ इस प्रकार किया है –

Why you sacrificed your courage for the sake of traditions why you became so docile? why you married where your brother dictated just because he could'nt show up his courage but he never commited on anything.

वहीं कर्नल स्वामी बाबू जसवंतसिंह को अपने खुशहाल परिवार के किस्से सुनाते हैं। अपने बच्चे और पोतियों की शरारतें सुनाते हैं। लेकिन वास्तव में वह भी अकेले हैं। उपन्यास में यह पूरी तरह पता नहीं चलता कर्नल स्वामी के किस्से सुनाना, कोई मानसिक रोग था या वह दुनिया से अपना दर्द बाँटना नहीं चाहते थे।

इस अनुवाद प्रक्रिया में ऐसे कई शब्द एवं पंक्तियाँ प्रयुक्त हैं जिसके एक से अधिक अर्थ निकलते है। जिसे अंग्रेजी में Polyvalency कहते हैं। ऐसे में अनुवाद थोड़ा कठिन हो जाता है जिसमें भाव कुछ और हो और बात कुछ और कही जा रही हो।

जब बाबू जसवंत सिंह मन ही मन सोचते हैं कि ''इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं, एक टॉमी दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंतसिंह। टॉमी की स्थिति निस्सन्देह उनकी बनिस्पत मजबूत है''।

'टॉमी अच्छी नस्ल का कुत्ता है। सोसाइटी में उनके घर का रुतबा बढ़ाता है। उनके चलते उनका रुतबा कलंकित हुआ है। कलंकित होकर अक्षत-चंदन क्यों चढ़ाएँ?' इन पंक्तियों में व्यंग्य भी है और साथ ही एक ही वाक्य में निहित दो अर्थ हैं। एक में बाबू जसवंत अपने बच्चों से दुखी होकर मन ही मन उन पर कटाक्ष कर रहे हैं और दूसरे में अपने जीवन से पूरी तरह हताश हो चुके हैं। वह स्वयं को अनुपयोगी मानते हैं। परिवार में उनकी उपस्थिति अब केवल दुखदायी ही हो सकती है। दूसरा कारण अधिक उचित प्रतीत होता है क्योंकि अगले उप-अध्यायों वह आत्महत्या की भी बात करते हैं।

अंग्रेजी अनुवाद करते हुए यह विशेष ध्यान देना होगा कि यहाँ मूल पाठ में निहित दोनों भावों से कौन-सा भाव प्रधान है। जैसे प्रस्तुत पंक्तियों में दोनों भावों (Satire and helplessness) में व्यक्ति के लाचार और असहाय होने का भाव अधिक उजागर होता है।

चित्रा जी ने बाबू जसवंतसिंह एवं सुनगुनिया का रिश्ता भी बहुत रोचकपूर्ण ढंग से दर्शाया है। उन दोनों का रिश्ता समझने के लिए दोनों की मनोस्थिति की गहराई को समझना आवश्यक है। अनुवाद में भी Psychological Translation ज्यादा है।

हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या का एक कारण यह भी है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने के बावजूद अंग्रेजी अपनी प्रभुता बनाए हुए हैं। भारत विविधता का देश है। हिन्दी भाषा भी कई स्वरूपों में विद्यमान है। हर प्रदेश का व्यक्ति में विद्यमान है। हर प्रदेश का व्यक्ति इसे अपने दृष्टिकोण से आँकता है। शब्दों की भरमार दोनों भाषाओं में है। लेकिन सांस्कृतिक भिन्नता और भाषिक संरचना में पर्याप्त अंतर होने के कारण दोनों भाषाओं में ऐसे कई शब्द है जिनका अनुवाद संभव नहीं है। यह Problem of Untranslatability है।

हालॉकि किसी हिन्दी उपन्यास का अन्य प्रादेशिक भाषा में अनुवाद करना होता तो इतनी कठिनाई नहीं आती। परन्तु हिन्दी अंग्रेजी भाषा में अन्तर दो पाठक वर्ग विषय का भी है। इसलिए Untranslatability की समस्या और जटिल हो जाती है, जिस प्रकार अंग्रेज़ी के शब्द जैसे आदि शब्दों का हिन्दी अनुवाद नहीं है। जिस प्रकार ऐसे कई हिन्दी शब्द जैसे Achilles heel, amagon, best man, titans, medusa, a judgement of Paris आदि शब्दों का हिन्दी पर्याप्त

उपलब्ध नहीं है। उसी प्रकार ऐसे कई हिन्दी शब्द है जैसे अक्षत, रात भर गंगा जमुना बहती रही, खड़ाऊँ, अग्रासन, तड़कना, देहेर, ऊँच नीच, तेरहवीं आदि पद या शब्द जिनका अंग्रेजी में अनुवाद संभव नहीं है।

ऐसे शब्द जब अनुवाद करते हुए सामने आए तो केवल इनका भाव समझकर ही अंग्रेजी अनुवाद किया गया है। संस्कृति को समझा और जाना जा सकता है परन्तु किसी दूसरी भाषा में उतारना भागीरथी कार्य समान प्रतीत होता है। इसे अंग्रेजी में Herculean Task भी कहते हैं। ''हर भाषा में हर शब्द का एक अपना अर्थ बिम्ब होता है जो सांस्कृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध होता है। दूसरी भाषा का उसी का समानार्थी शब्द उस पृष्ठभूमि से युक्त न होने के कारण वैसा अर्थ बिम्ब नहीं उभार सकता।''[1]

भारत देश की एक और विशेषता है कि यहाँ लोगों के पद से इनकी पहचान होती है। लोगों के नाम से पहले उनका पद आता है जैसे उपन्यास 'गिलिगडु' में चित्रा जी ने कई जगह पात्रों के साथ उनका पद उल्लेख किया है ताकि उनके चरित्र से पाठक रू-ब-रु हो सके। नेताजी, तालूकेदार को केवल तालूकेदार, विष्णु नारायण स्वामी को कर्नल स्वामी कहकर सम्बोधन किया गया है। इन पात्रों का चरित्र उनके पद के अनुसार ही है। एक सरकारी दफ्तर से रिटायर्ड कर्मचारी की लाचारी वैसे ही दर्शाई गई है जैसा कि भारतीय समाज में कोई भी मध्यमवर्गीय व्यक्ति होगा। इस समाज की समस्याओं तथा उससे उत्पन्न लाचारी के अनुवाद करके अंग्रेजी संस्कृति में ढालना थोड़ा कठिन कार्य था क्योंकि हर समाज की अपनी समस्याएँ होती है जिनसे वह जूझ रहा होता है।

---

[1] *अनुवाद विज्ञान*, पृ. 135 शब्दकार भोलानाथ तिवारी, संस्करण 2002

मूल से हिन्दी में अनुवाद करके दूसरे समाज के पाठक वर्ग तो यह पहुँचाया जा सकता है। किन्तु अनुवाद करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि भाषा लक्ष्य भाषा के अनुसार ही हो, तभी वह मूल पाठ में वर्णित समाज तथा उसकी समस्याओं से जुड़ पाएँगे।

मनुष्य के सुख-दुख के अनुभवों और मानदण्डों ने अलग अलग संस्कृतियों का रूप धारण किया है। भाषा इसी संस्कृति का उत्पाद एवं परिवाहक है। अनुवाद कार्य एक भाषा में निहित संस्कृति को दूसरी भाषा में प्रत्यारोपित करना है। यज्ञ का स्थान Bonfire नहीं ले सकता। चाची, ताई, मासी, बुआ दोनों स्थानों पर केवल Aunty नहीं हो सकती। तेरहवीं Thirteenth day नहीं हो सकता तथा खड़ाऊँ के स्थान पर Wooden Sandel उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। यह समस्या हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद में आती ही है क्योंकि हिन्दी में एक शब्द के कई पर्याय प्रयुक्त हो सकते हैं। उन्हीं में सबसे उचित का चुनाव अनुवादक की कार्य कुशलता पर निर्भर करता है। प्रस्तुत उपन्यास को शोधार्थी ने सम्बन्धित कोशों तथा Thesauras आदि की सहायता से अनूदित किया है।

अनुवाद यात्रा, जो कई पड़ावों से होकर गुजरती है चाहे वे मुहावरे हो या सम्बोधन, Freud की मनोवैज्ञानिक पक्ष हो सांस्कृतिक भिन्नता या फिर चरित्रों की आपसी भिन्नताएँ हो, प्रस्तुत अनुवाद में सबका अनुवाद करना न केवल ज्ञानवर्धक रहा बल्कि बहुत रोचक भी। यह जानते हुए कि यह कृति स्वयं में उत्कृष्ट नहीं होगी और अभी भी इससे सुधार की काफ़ी गुंजाइश है। अगर यह अनूदित पाठ सामग्री पढ़ते समय अंग्रेजी के पाठक स्वयं को इस कृति से जोड़े पाए तो यह प्रयास कमोवेश सफल माना जाएगा।

तीसरा–अध्याय

अनूदित उपन्यास का भाषिक विश्लेषण

हर भाषा का अपना निजी और स्थानीय संस्कार होता है। हर भाषा की सम्प्रेषण क्षमता भी एक दूसरे से भिन्न है। उदाहरण के लिए हिन्दी के वाक्य 'उन्होंने मुझे पुरस्कार दिया'। यह स्पष्ट नहीं हो रहा कि 'उन्होंने' शब्द स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग। इसी तरह अंग्रेजी में Uncle शब्द ताया, चाचा, मामा, सबके लिए उपयोग में आ जाता है। स्पैनिश के वाक्य व्यवहार किए गए शब्दों में लिंग निर्णय समाहित रहता है। वहाँ शब्दों की प्रयुक्ति के साथ उनके लिंग बोध की सूचना रहती है। जबकि हिन्दी में स्त्रलिंग-पुल्लिंग के अलावा उभयलिंग का भी प्रयोग होता है। उल्लेखनीय है कि स्पैनिश में हर वस्तु स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होती है। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की कई भाषाओं में स्त्रीलिंग पुल्लिंग होती ही नहीं।

इस सूचना शक्ति की भिन्नता के कारण हम जब भी अनुवाद करते हैं उसमें वाक्यों और शब्दों के अलावा संदर्भ का पता होना बहुत आवश्यक है। इस अध्याय में भाषा के प्रयोग एवं व्यवहार की चर्चा की गयी है। उक्त उपन्यास में भाषा के विभिन्न स्तर है जो सर्वथा पात्रोचित है। उपन्यास की भाषा में मुहावरों की बहुतायत है। '*गिलिगडु*' उपन्यास की भाषा शैली सरल होते हुए भी गूढ है

जो अन्तर्मन को छू जाती है। हालाकि भाषा में हिन्दुस्तानी, उर्दू, मलयालम, अवधी तथा अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। भाषा प्रवाहपूर्ण है।

अगर आरम्भ से ही देखा जाए तो 'गिलिगडु' उपन्यास के उप-अध्यायों के शीर्षकों का अनुवाद करना चुनौतीपूर्ण था। पहली से छठी गैरमौजूदगी के बाद सीधी तेरहवीं गैरमौजूदगी का अध्याय है। अगर उपन्यास को न पढा हो तो इस भेद को समझना असंभव है। यहाँ 'तेरहवीं गैरमौजूदगी' में तेरहवीं से तात्पर्य मृत्यु के पश्चात् तेरह दिन से है। इस तेरहवीं में माना जाता है कि आत्मा संसार छोड़ पूरी तरह परमात्मा में विलीन हो जाती है। इसका अनुवाद अंग्रेजी में Thirteen Absence से किया गया है। उपन्यास के अध्यायों के शीर्षक स्वयं में ही खालीपन लिए हुए हैं।

चित्रा मुदगल ने बहुत ही खूबसूरती से अध्यायों के शीर्षक द्वारा उपन्यास के भाव को समझाया है। लेखिका के द्वारा दिए गए उप-अध्यायों के शीर्षक उनके भाषा कौशल का प्रमाण है।

'*गिलिगडु*' उपन्यास के उप-अध्यायों के शीर्षक बहुत ही रोचक है। कुछ पुराने गीत तो कुछ पुरानी लोकोक्तियाँ है। शीर्षक जैसे 'कुरकुरी कलफ', 'गठरी में लागा चोर', 'यह क्या जगह है दोस्तों', 'आँख मिचौली', 'होश' आदि आज मशीनी मानव पर कटाक्ष करते हैं। यह शैली पाठकों के लिए रोचक हो जाती है। लेखिका केवल कुछ शब्दों के माध्यम से आज की संस्कृति का पूरा परिदृश्य पाठकों के सामने रख देती हैं। 'यह क्या जगह है दोस्तों' पाठ में उपन्यास के मुख्य पात्र बाबू जसवंत सिंह अपने ही बेटे के घर में पराया महसूस करते हैं।

उन्हें उस घर में कुत्ते घुमाने के काम के अलावा किसी चीज के लिए उपयोगी नहीं समझा जाता। उन पर आरोप लगाए जाते हैं तथा बाहर के लोगों से भी खुलकर बात करने पर पाबंदी होती है। वह कानपुर से दिल्ली आते हैं। उन्हें न तो वह नई जगह समझ आती है और न वही वहाँ के लोग। अपने ही पुत्र के घर में पराए हो जाते हैं। शीर्षक 'यह क्या जगह है दोस्तों' से पाठ का सार समझ आ जाता है। साथ ही साथ यह शीर्षक हमें उमराव जान के गाने की भी याद दिलाता है। मन्ना डे के गाने 'गठरी में लागा चोर' को भी उपन्यास के अध्याय का शीर्षक बनाया गया है। वास्तव में यह भी आज की मशीनी संस्कृति पर व्यंग्य किया गया है। इसका अंग्रेजी अनुवाद Wake up before the milk spills किया है। यहाँ लेखिका मानव संस्कृति को चेतावनी दे रही है।

वर्तमान समय एवं भूमण्डलीकृत विश्व में उपभोग संस्कृति ने विषम रूप धारण कर लिया है। लोगों की मानसिकता पूरी तरह आत्मकेन्द्रित हो गई है। यह कह सकते हैं कि आज की संस्कृति केवल खाओ-पियो और ऐश करो की हो गई है। वृद्धजनों का अनादर आधुनिकता का परिचय नहीं बल्कि पशुवृत्ति का प्रदर्शन है।

चित्रा मुदगल ने '*गिलिगडु*' उपन्यास में एक अध्याय का शीर्षक '*होश*' दिया है। बाबू जसवंत सिंह मानसिक रूप से व्यथित होने पर तथा लू के आघात से बीमार हो जाते हैं उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। वह अपने ही पुत्र और पुत्रवधू को नहीं पहचानते। परन्तु उन्हें बिमारी में भी अपनी प्रेमिका और कर्नल स्वामी याद हैं। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि 'होश' में आखिर कौन नहीं है? वह जो बिमार है या वह जो जवानी और पैसे के गुरुर में मदमस्त हुए घूम

रहे हैं। उपन्यास में अध्यायों और उप-अध्यायों के शीर्षक इस प्रकार के दिए हैं जो पाठकों को पढ़ने के लिए बाध्य कर सके।

पूरा का पूरा उपन्यास एक प्रवाह में बहता प्रतीत होता है। उपन्यास के मुख्य पात्र अपनी पुरानी यादों में जी रहे हैं या फिर अपना ही सपनों का संसार में मग्न हैं। उस सपनों के संसार का वास्तविक जीवन से कोई सरोकार नहीं है।

चित्रा मुद्गल ने बहुत ही निपुणता से दोनों पात्रों के जीवन को दर्शाया है। बाबू जसवंत सिंह जब कानपुर से दिल्ली आते हैं तो वह अकेलेपन से घिर जाते हैं। उनके अकेलेपन का सहारा उनके बच्चे नहीं बल्कि उनका कुत्ता टामी बनता है। उपन्यास के मुख्य पात्र बाबू जसवंत सिंह का जीवन बहुत ही साधारण दिखाया है। वह एक सिद्धान्तवादी तथा पारिवारिक व्यक्ति रहे हैं। बच्चों के लिए उन्होंने खूब मेहनत की तथा पत्नी के प्रति भी इमानदार रहे। हालाकि उनकी प्रेमिका भी थी जिसका नाम शिवानी था, परन्तु समाज और परिवार के डर से वह उससे शादी नहीं कर पाए। चूँकि पात्र साधारण है इसलिए उनके संवाद और पीड़ाओं को भी एक साधारण व्यक्ति के समान ही दर्शाया गया है। उपन्यास की भाषा में बाबू जसवंत सिंह के प्रति उनकी पुत्रवधू की कटुता बहुत ही दबे हुए स्वर में दिखाई गई है। पात्रों को एक दूसरे से लड़ता झगड़ता नहीं दिखाया गया है। यह द्वन्द्व चुपचाप सा घर में पल रहा है परन्तु कोई किसी से कुछ नहीं कहता। यह कटुता एवं परायापन भाषा में भावों के द्वारा दर्शाया है। उदाहरण के लिए पाठ कुरकुरी कलफ में बाबु जसवंत सिंह मन ही मन सोचते हैं ''इस बात से प्रसन्नता हुई थी कि चलो बेटे बहु ने टॉमी की जिम्मेदारी सौंपकर उन्हें अपने गृहस्थी की किसी जिम्मेदारी के काबिल तो समझा। अब तो उन्हें यह भी लगने

लगा है कि इस घर में वह सही अर्थों में किसी के लिए बुजुर्ग है तो वह केवल टामी है। पोते मलय निलय के नाज नखरे उठाने का सुख उनकी थाली का कौर नहीं'' (पृ. 10)। यह पंक्तियाँ पहले ही पाठ के दूसरे पृष्ठ पर वर्णित है। इससे बाबू जसवंत सिंह के परिवार में स्थिति एवं दर्जे का साफ पता चलता है।

बाबू जसवंत सिंह अपने अकेलेपन का सहारा कर्नल स्वामी में दिखता है। लेखिका ने उपन्यास में यह सबसे रोचक पात्र बनाया है। वह उपन्यास के आरम्भ से ही बेहद जिंदादिल और खुशमिजाज प्रतीत होते हैं। उनकी जीवंतता देखकर बाबू जसवंत सिंह जीवन में आशा एवं गति दिखाई देती है। उनके अनुसार वह एक संयुक्त परिवार में रहते हैं। मंझले बेटे की पुत्रियों का नाम कुमुदनी एवं कात्यायनी है जिन्हें वह प्यार से गिलिगडु बुलाते हैं। कर्नल स्वामी के बच्चे उनका आदर सम्मान करते हैं।

उनके जीने का जोश बाबू जसवंत सिंह के जीवन का आशा की किरण प्रदान करती है। बाबू जसवंत सिंह रोज सुबह उनका पुलिया पर इंतजार करते हैं। कर्नल स्वामी उनके लिए इडली आदि लाते हैं जिसे वह अपनी बहु द्वारा बनाया हुआ कहते हैं। कर्नल स्वामी, बाबू जसवंत सिंह से अपनी नई प्रेम कहानी की चर्चा भी करते हैं। अणिमा दास द्वारा दी गई लम्बी कविता कर्नल स्वामी बाबू जसवंत सिंह को देते हैं। कर्नल स्वामी जैसे परिवार का स्वप्न बाबू जसवंत सिंह ने हमेशा सजाया था।

अंत में पता चलता है कि वास्तविकता में ऐसा कुछ नहीं है। अपने अकेलेपन को भरने के लिए कर्नल स्वामी ने एक काल्पनिक परिवार की रचना

की थी। वह अपनी काल्पनिक प्रेमिका अणिमा दास से भी विवाह करने का सोचते हैं। जैसा की साक्षात्कार में लेखिका ने बताया है कि वह कर्नल स्वामी जैसे व्यक्तित्व से मिल चुकी है। इस बात ने इस उपन्यास की रोचकता और बढ़ा दी है। इस चरित्र को अनुवाद भी एक रोचक अनुभव था।

उपन्यास '*गिलिगडु*' के पात्रों की भाषा उनके परिवेश के अनुसार ही है। दाता और पाता की भाषा में साफ अंतर नज़र आता है। सुनगुनिया, बाबू जसवंत सिंह, नेताजी तथा कर्नल स्वामी, समाज के अलग-अलग वर्ग के हिस्से है। उनकी भाषा में भी अर्श और फर्श का अंतर है।

सुनगुनिया के पति की मृत्यु के बाद जब वह गाँव से वापिस मालकिन (बाबु जसवंत सिंह की पत्नी) के पास पहुँचती है तो उसके द्वारा दिया गया ब्यौरा साफ़ साफ़ बताता है कि कोई गाँव की अनपढ़ महिला बात कर रही है।

'कल दोपहर बुढ़वा के संग उसकी बठा बैठी थी। सो तड़के टट्टी फिरने के बहाने बच्चे को ले पैदल बस अड्डे निकल दी और कानपुर की बस पकड़ मालकिन के ठिया पहुँच ली' (पृ. 29)।

वैसे ही कर्नल स्वामी की भाषा से साफ़ पता चलता है कि वह 'सभ्य' खुशमिजाज़, पढ़ा लिखा व्यक्ति है जिनके मिजाज फ़ौजी रुतबा झसकता है। बाय दिवे हमें विष्णू नारायण स्वामी कहते हैं रिटायर्ड कर्नल स्वामी' (पृ. 14)।

वहीं नेता जी की भाषा से स्पष्ट है कि आज कल का कोई राजनेता बात कर रहा है। उपन्यास *गिलिगडु* में बड़ी कुशलता से हर पात्र का चरित्र उसके

जीवन के अनुसार वर्णित किया है। नेताजी को भाषा में चालाकी, कुटनीतिज्ञता तथा मतलबीपन प्रत्यक्ष झलकता है। वह सुनगुनिया के भले के लिए नहीं बल्कि अपना उल्लू सीधा करने के लिए जात बिरादरी का बीज बोते हैं।

'बामन ठाकुर ने हमेशा उनकी बहू-बेटियों की आबरू लूटी है। पनपने नहीं दिया उन्हें। जूतों का तलुवा बनाकर रखा। बेगार करवाया, उपर से मजूरी नहीं दिया। मजूरी के लिए मुँह खोला तो मूँह में मूत दिय। नेटुवा चाप नदी नाले में फिंकवा दिया। पर अब ऐसा नहीं हो पाएगा। बामन ठाकुरों के राजपाट के दिन लद गए। अब हम राजपाट करेंगे। और इन ससुरों के मँह में ... डाल मूतेंगे। एक मुँह में दस' (पृ. 82)।

चित्रा मुदगल ने बड़ी ही कुशलता से चाहे पात्र हो या उनका परिवेश, विवरणात्मक तरीके से पाठक के सामने रखा है। अंग्रेज़ी अनुवाद करते हुए भी इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि अनूदित कृति में का स्थान उसी प्रकार रहे जिस तरह मूल कृति में है।

यह बिम्बात्मकता स्थापित करने के लिए लेखिका ने 'गिलगिडु' उपन्यास में काफ़ी मुहावरों का प्रयोग किया है। चित्रा जी ने जैसा कि अपने साक्षात्कार में कहा है कि वह अवध की है। मुहावरे उनकी भाषा में सहज ही आते हैं। उदाहरण के तौर पर -

घर का भेदी (पृ. 82)

छाती कभी बूढ़ी नहीं होती (पृ. 73)

धरती पर अपना आकाश उठाए (पृ. 74)

जान का जंजाल (पृ. 28)

गंगा जमुना उतारना (पृ. 30)

पारा उबलना (पृ. 28)

उम्मीद पर पानी फेरना (पृ. 17)

कनपटियों में खून बटुर आना (पृ. 59)

लतर सी तिरिया (पृ. 29)

आदि ...।

उपन्यास '*गिलिगडु*' में प्रकृति के सौन्दर्य की भी चर्चा हुई है। कभी दिल्ली के आस-पास के लहलहाते खेत वर्णित हुए तो कभी कानपुर में बाबू जसवंत सिंह के आँगन में बसा पेड़।

कर्नल स्वामी कहते हैं

'खेतों के बीचो बीच रखवालों की मड़ैया? कैसी सुन्दर बनी हुई है। हमारे केरल जैसी?

'माय गॉड! उन मैनाओं को देखिए जरा नाली में चोच डाले कैसे पानी पी रही है, जैसे ब्याह की पंगत में खाने नहीं बैठते लोग' (पृ. 21)।

उक्त उपन्यास में कई जगह मन के भावों को भी प्रकृति से जोड़ा है। कई जगह लेखिका ने शब्दों की जगह भावों को व्यक्त करने के लिए आवाज़ों का सहारा लिया है। जिसे अंग्रेज़ी में Onomatopoea कहते हैं।

(क) खट्, खट्, खट – बाबू जसवंत सिंह घुमड़ते हुए बंद किवाड़ों पर थाप दे रहे हैं (पृ. 48)।

(ख) हा, हा, हा – बरदाश्त नहीं हुई (पृ. 66)।

(ग) खड़ाऊ की खट् खट् आँगन पार कर चौके की ओर बढ़ रही है (पृ. 497।

(घ) खट्ट-खट्ट (पृ. 113)

यहाँ पर उपन्यास *गिलिगडु* में सरल शब्दों की जगह आवाज़ों को लिया है। इससे पाठक न केवल उपन्यास को समझ पाता बल्कि उसके पात्रों से जुड़कर महसूस कर पाता है। इस प्रकार की भाषा शैली उपन्यास को रोचक और जीवंत बना देती है। इसे अनुवाद करने में भी और आनन्द आता है क्योंकि निश्चित भाषिक क्रम अनुवाद प्रक्रिया को अरुचिकर बना देता है। भाषा के प्रयोग अनुवादक को भाषा की संरचना के प्रति सचेत रखता है क्योंकि इसी से उसकी दक्षता का पता चलता है।

उपन्यास *'गिलिगडु'* की भाषा पाठक को अन्दर तक झकझोर देती है। लेखिका ने उपन्यास के कई उप-अध्यायों का अन्त खुला छोड़ दिया है। यह पाठक की कौशल पर निर्भर करता है कि पाठ के भाव किस प्रकार समझता है।

'*लंबी कविता*' उप-अध्याय का अंत केवल इस पंक्ति से हो जाता है।

ये आँखों की कोरें गीली कैसे हो आईं ... (पृ. 88)

केवल इस प्रश्न से पाठ का अन्त हो जाता है। इसमें बाबू जसवंत सिंह की कर्नल स्वामी से मिलने की बेसब्री और व्यथा साफ़-साफ़ झलकती है।

'गिलिगडु' उपन्यास में एक मानवीय बाज़ारु संस्कृति के बारे में चर्चा की गई है जो एक दूसरे को पछाड़ने हो होड़ में लगी है। मनुष्य वस्तु में तब्दील हो रहा है। यह बहुत ही ख़तरनाक प्रक्रिया है। यान्त्रिक मनुष्य के पास प्रेम और संवेदनाओं के लिए वक्त नहीं है। आज के मानव को अरग मतलब हो तो सात समुद्र पार भी सम्बन्ध बनाए रखता है। यदि मतलब नही ंतो अपने माता-पिता से भी सम्बन्ध नहीं रखता। 'आँख मिचौली' उप-अध्याय में बाबू जसवंत सिंह नरेन्द्र के बारे में कहते भी है - ''विदेश में नौकरी पाए हुए मित्रों से उसका बराबर सम्पर्क बना हुआ है'' (पृ. 65)। इसमें यह साफ दर्शाया गया है कि जिनसे लाभ की आशा है वह मित्र उपयोगी है तथा वृद्ध माता-पिता जिन्हें अब सहारे की आवश्यकता है उनसे कोई सरोकार नहीं है।

जबसे मनुष्य ने होश संभाला है वह बुढ़ापे की भयावहता, बेबसी, लाचारी, अपरिहार्यता को भुगतता रहा है और इसे वह अपरिवर्तनीय नियति के रूप में स्वीकारता रहा है। यह बात अलग है कि वह इसे छिपाने के लिए भी प्रयत्नशील रहता है।

उक्त उपन्यास में इन समस्याओं की चर्चा करते हुए जीवन दर्शन को भी पात्रों द्वारा दर्शाया है। उप-अध्याय 'जूते' के अंत में जब कर्नल स्वामी बाबू जसवंत सिंह से युद्ध की बात कर रहे होते हैं तब जीवन संघर्ष की भी चर्चा करते हैं और उसी के साथ उप-अध्याय समाप्त हो जाता है।

''लेकिन ... लड़ाई सिपाही युद्ध छिड़ने पर ही नहीं लड़ता। लड़ाई की तैयारी में जो लड़ाई उसे लड़नी पड़ती है - वह तो अनवरत युद्ध है'' (पृ. 24)।

यहाँ कर्नल स्वामी अपने निजी जीवन के युद्ध की भी बात कर रहे हैं जो वह प्रतिदिन अपने ख़ालीपन से लड़ते हैं। साथ ही साथ वह यह भी बाबू जसवंत सिंह को समझा रहे हैं कि मानव के जीवन का युद्ध उसे खुद ही लड़ना पड़ता है। अपना खून भी उसका साथ नहीं देता।

चित्रा मुद्गल '*गिलगिडु*' उपन्यास में अपनी भाषा से कहानी के विभिन्न दृष्टिकोण सामने रखे हैं। उपन्यास में चरित्रों का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी वर्णित किया गया है। Sigmund Freud की Dream Theory का प्रभाव भी उनके लेखन में दिखता है। Freud ने लिखा है कि हमारा Subconscious Mind उन चित्रों और घटनाओं को सपनों में दिखाता है जिसे मनुष्य वास्तविकता में याद करता है और चाहता है।

बाबू जसवंतसिंह जीवन में अकेलेपन से गुजर रहे थे। उनकी पत्नी का देहांत हो चुका था। ऐसे ख़ालीपन में वह अपने पुराने प्रेम को याद करते हैं। जब वह बीमार होते हैं तो उनके सपनों में उनकी प्रेमिका शिवानी आती है, और उन्हें फल देकर जाती है। पाठ का नाम भी 'होश' है जिसका अंग्रेजी अनुवाद भी Consciousness किया है।

उपन्यास में यह आडम्बना है कि जिस पाठ का नाम 'होश' है उसमें ही पात्र अपना होश खोए हुए है। बाबू जसवंत सिंह बीमारी की वजह से होश खो

बैठते हैं। बच्चे जवानी और पैसे के नशे में मदहोश है। लेखिका इस वाक्य को बहुत ही रोचक ढंग से सामने रखा है। जब बाबू जसवंत सिंह बीमार होते हैं। तो अपने बहु बेटे डॉक्टर को नहीं पहचानते अपितु कुछ हफ़्तों पहले ही मिले कर्नल स्वामी उन्हें याद है। यहाँ अपना कौन है यह प्रश्नात्मक है। उपन्यास की लेखन शैली में पाश्चात्य लेखकों का भी प्रभाव दिखता है। जैसा कि उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा है कि वह Hemingway, Shakspeare, WB Yeats, Tolstoy आदि लेखकों से वह काफ़ी प्रभावित है।

उनका यह उपन्यास Shakespeare के नाटक *As you like it* की याद दिलाता है। यहाँ उन्होंने लिखा है कि वृद्धावस्था मनुष्य का वो समय है जब वह फिर से बच्चों-सा बन जाता है जिसे बहुत प्यार और दुलार की आवश्यकता होती है।

Last scene of all
that ends this strange eventful history
second childishness and more obtuiron
sans leath, sans eyes, sans taste,
sans everything

डब्ल्यू वी येट्स (WB Yeats) एक बूढ़े व्यक्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं।

An aged man is a Paltry thing
A tattered coat upon a stick, unless
soul claps its hands and sing, and louder
sing for every tatter in its mortal dress

- Sailing to Byzantiun

इस अवस्था में मनुष्य को सबसे ज़्यादा परिवार के सहारे की आवश्यकता होती है। लेकिन इसी मुश्किल घड़ी में उसकी संतान उसका साथ छोड़ देती है। यह पूर्व संस्कारों का अनादर है। लेखिका ने केवल खोखले पात्रों और उनकी समस्यापूर्ण स्थिति का वर्णन नहीं किया है बल्कि समस्याओं का समाधान बताते हुए, जो सामाजिक सम्बन्धों और दायित्वों पर प्रश्न उठे है, उनका उत्तर भी प्रदान किया है।

चित्रा मुदगल की भाषा में संवेदनात्मक गहनता है। '*गिलिगडु*' उपन्यास में संघर्षशील पात्रों को दर्शाया है। उनकी लेखन की शैली में मार्क्स का भी प्रभाव दिखता है। इसलिए इन्होंने इस उपन्यास में तथा अन्य कई कहानियों में भी पिछड़े वर्ग के अधिकारों की भी चर्चा की है। हालाँकि यह कई NGO तथा सामाजिक कार्यों से जुड़ी रही है। परन्तु उनकी भाषा केवल आंदोलनों से प्रभावित हुई सीमित धारा नहीं है। उनकी भाषा में जीवन का प्रवाह है।

उनकी पहली रचना '*डोमिन काकी*' थी। वह भी उनके वास्तविक जीवन से ली गई कहानी थी। वह कहती है कि भाषा तथा विचारों की दृष्टि तो आन्दोलनों से ली जा सकती है, लेकिन किसी समस्या को तभी महसूस किया जा सकता जब उसे आपने आस-पास देखा हो। '*गिलिगडु*' उपन्यास के कई पात्र भी उनके वास्तविक जीवन से लिए गए हैं। इसलिए इसकी भाषा जीवन से जुड़ी हुई है तथा पाठक इसे एक बार पढ़ना शुरू कर दे तो समाप्त करके ही उठेंगे।

किसी भी उपन्यास या साहित्यिक रचना का भाषिक विश्लेषण उसकी कला की रूप सामग्री का गहन अध्ययन होता है। भाषिक विश्लेषण में कृति की

'अर्थवत्ता' को महत्त्व दिया जाता है। लेकिन भाषा को प्रभावित करने वाले अन्य तत्त्वों पर भी ध्यान देना बहुत आवश्यक है। उपन्यास का हर छोटे से छोटा हिस्सा, पूरी कृति को रूप प्रदान करता है जैसा डॉ. निर्मल जैन अपनी पुस्तक 'आधुनिक साहित्य मूल्य और मूल्यांकन' में कहते हैं।

''उपन्यास समाप्त करने के बाद हमारे सामने एक एक करके जो चरित्र उभरते हैं, जो सुसम्बन्ध कथानक प्राप्त होता है और परिवेश का जो चरित्र मूर्तिमान होता है वह सारा महल क्रमशः एक-एक शब्द और वाक्य की ईंटों का ही सम्पूजित प्रभाव होता है'' (पृ. 60)।

'*गिलिगडु*' उपन्यास में पात्र आधुनिक अवश्य है परन्तु किसी भी पात्र को पूरी तरह बुरा नहीं दर्शाया गया है। पात्र भ्रमित ज्यादा दिखते हैं। जैसे वह स्वयं नहीं जानते कि अपनों को दूर धकेलकर वह स्वयं को अकेलेपन में धकेल रहे हैं। सुनयना बाबू जसवंत सिंह के बिमार होने पर सेवा करती है। बेटा नरेन्द्र अस्पताल में भर्ती करवाता है। इन सब कारणों से उपन्यास की कहानी में एक तरफ़ रिश्तों का द्वन्द्व दिखता है तो दूसरी तरफ़ दबी हुई सच्चाई भी सामने आती है।

उप-अध्याय '*होश*' में जब बाबू जसवंत सिंह बीमार हो जाते हैं और सुनयना उनका खयाल रख रही होती है तो वह उसे पैसे देते हैं।

'थर्मामीटर झटकते हुए उसने मुड़ते ही उन्होंने क्षीण स्वर में उसे ठहरने के लिए कहा था और तकिए के नीचे से उसे पाँच-पाँच सौ के दस नोट

निकालकर पकड़ाए थे कि उनकी दवादारी का ख़र्च उन पर एक दम से आ पड़ा है ...' (पृ. 118)।

बाबू जसवंत सिंह सुनयना के प्रति इतनी नाराजगी होने के बाबजूद स्वयं स्वीकार करते हैं।

'उसने उस वक्त ऊपरी मन से नहीं बल्कि स्वाभाविक रूप से संकोच प्रकट करते हुए रुपये लेने से इन्कार कर दिया था। खर्च का क्या है चल रहा है' (पृ. 118)।

उपन्यास '*गिलिगडु*' में चित्रा मुदगल ने 13 दिन के लघु उपन्यास में भाषा के विभिन्न आयामों को छुआ है। भाषा साहित्य का अटूट अंग है। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भाषा के बिना साहित्य की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। जैसा कि ज्यादातर भाषाविद मानते हैं कि भाषा का प्रमुख कार्य सूचना देना मात्र है। साहित्य का कथ्य अधिक गहरा होता है। उसकी विशिष्ट अनुभूति और विशिष्ट कथ्य विशिष्ट भाषा की अपेक्षा करते हैं। उक्त उपन्यास की भाषा आम बोल-चाल की भाषा होते हुए भी साहित्यिक विशिष्टता से परिपूर्ण है। तात्पर्य यह कि जब सामान्य भाषा भी साहित्य में प्रयुक्त होती है तो उसमें एक विशेष अर्थवत्ता और लयात्मकता आ जाती है जो भाषा की सामान्यता को भी सृजनात्मकता से रंग देती है।

उपन्यास की भाषा में कहीं बच्चों की कवताओं और कहीं गानों से लयात्मकता प्रदान की गई है। उपन्यास में मुहावरे भाषा के प्रवाह का और मुखर करते हैं। लेखिका ने उपन्यास में जो शब्द चयन, चरित्र का वर्णन, वाक्य की

सजवट तथा वर्ण पद्धति अपनाई है तथा उपन्यास की भाषा को और भी रोचक बना देती है।

भाषा का विश्लेषण मुख्यत: तीन तत्त्वों पर आधारित रहता है। प्रथम रूप से आन्तरिक विज्ञान जिसे अंग्रेजी में Morphology कहा जाता है। इसमें कृति की आंतरिक संरचना का वर्णन होता है और उसे किस तरह संशोधित किया जा सकता है। फिर उस कृति का वाक्य विन्यास के आधार पर विश्लेषण होता है। इसमें कृति का व्याकरण आता है और अंतिम तत्त्व है अर्थ के आधार पर। जिसे अंग्रेजी में Semantic Structure कहते हैं। इस विश्लेषण में शब्दों के अर्थों को समझा जाता है। इसके अन्तर्गत शब्दों द्वारा बनाए गए मुहावरे एवं वाक्यों का अध्ययन किया जाता है।

चित्रा मुदगल ने उपन्यास में वाक्यों के भावों का पाठकों पर और ज्यादा प्रभाव डालने के लिए, वाक्यों को बीच में छोड़ दिया है। उन्होंने पूरी स्थिति का वर्णन करने के बाद अन्तिम पंक्ति का खुला छोड़ा है ताकि स्थिति का भाव पाठक स्वयं महसूस कर सके। उदाहरण –

(1) ये आँखों की कोरें गीली कैसे हो आई ... (पृ. 88)।

(2) वे कौन? उनके बप्पा और कौन? (पृ. 97)

उपन्यास में भावों का व्याख्यान बहुत ही निपुणता से हुआ है फिर चाहे वह अकेलेपन और लाचारी से जूझ रहे बाबू जसवंत सिंह हो या फिर उसके पुत्र और पुत्रवधू का लालच और दोगलापन हो। उनकी माता की मृत्यु के बाद वह किसी तरह बाबू जसवंत सिंह को वृद्धाश्रम में छोड़ आना चाहते हैं। कर्नल स्वामी

की जीवन्तता, सुनगुनिया का साहस जिससे वह समाज की रूढिवादिताओं से लड़ती है या बाबू जसवंत सिंह की कर्नल स्वामी को देखने की अधीरता, बहुत ही कुशलता से उक्त उपन्यास की भाषा में प्रदर्शित की गई।

भाषा का प्रवाह स्वाभाविक है। उपन्यास की भाषा कहीं भी कृत्रिम नहीं लगती। वैसे भी हिन्दी भाषा स्वयं में विविधता का एक ऐसा स्वरूप है जिसने अपने गर्भ के अन्दर, कितनी ही बोलियों को छिपाया हुआ है। इस उपन्यास में अवधी, मलयालम, अंग्रेज़ी, तत्सम, तद्भव, हिन्दुस्तानी आदि शब्दों की बहुत्तायात है, शब्दों की विविधता के बावजूद भावों का कहीं भी हनन नहीं हुआ है, अपितु यह भाषा भावों के साथ बहती हुई प्रतीत होती है। शब्दों की संवादिता, गेयता, काव्यमयता तथा अर्थविहिता बहुत ही सजग है।

चित्रा मुद्गल ने अपने साक्षात्कार में कहा था, विद्रोह, संघर्ष और कायरता मनुष्य को यह सभी चीज़ें घर के वातावरण से ही मिलती हैं। उनको घर के माहौल ने विद्रोही बनाया है। इसलिए उनकी भाषा में विद्रोह का स्वर रहता है। इनकी पहली कहानी भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर थी जो 1955 में प्रकाशित हुई थी।

'*गिलिगडु*' उपन्यास में भी विद्रोह का स्वर मुखर है। पात्र परिस्थितियों से संघर्ष करते दर्शाए हैं। हालाकि कई जगह ऐसा लगा है कि पात्र अपनी भावनाओं को बोलने से रोक रहे हैं। या यह भी कहा जा सकता है कि वह अपनी भावनाएँ बिखरने से डरते हैं। इसलिए पाठक इस उपन्यास से और ज्यादा जुड़ जाता है। जब बात जसवंत सिंह सुनगुनिया को पैसे भिजवाते हैं तो साथ में लिखते हैं-

''रुपए लौटाने का हरगिज न सोचें! अपने बाबूजी को वह खुश नहीं देखना चाहती''?

आख़िरी पंक्तियाँ लिखकर मिटा दी बाबू जसवंत सिंह ने।

जाने क्या सोचकर। (पृ. 105)

यहाँ पात्र अपनी भावनाएँ व्यक्त करने से घबरा रहा है। उपन्यास में यह घबराहट और हिचकिचाहट बहुत ही सुन्दर शब्दों में ढली है। जसवंत सिंह अपनों में अपना महसूस नहीं कर पाते बल्कि दूसरों में अपनापन खोजते हैं।

चित्रा मुदगल ने जिस प्रकार पात्रों और परिवेश का वर्णन किया वह उपन्यास को और भी रोचक बना देता है। उपन्यास में उस वक़्त चल रहे समाचारों का भी वर्णन है तथा गानों का भी। उसमें बताया गया है कि किस प्रकार टॉमी को परवेज और कारगिल युद्ध में कोई रुचि नहीं अपितु सुस्मिता सेन का 'मेहबूब मेरे' गीत बहुत चाव से सुनता है। इसके साथ-साथ उपन्यास की भाषा में MTV, भारतीय ब्रैंड जैसे हवाई चप्पल, लक्स काट्रसवूल आदि का भी नाम लिया है। इस तरह के संदर्भों से पाठक उपन्यास से और भी गहनता से जुड़ जाता है क्योंकि इस तरह वह पात्रों के समय को स्वयं में जी पाता है। लेखिका ने जगहों के नाम भी वास्तविकता के आधार पर रखे हैं। नागार्जुन अपार्टमेंट या ग्लैक्सो अपार्टमेंट या फिर Noida का वृद्धाश्रम, यह सब जगह दिल्ली में हैं।

टॉमी बाबू जसवंत सिंह के पुत्र के घर का एक पालतू जानवर है। उपन्यास में टॉमी का भी अपना महत्त्वपूर्ण किरदार है। बाबू जसवंत सिंह शुरू में टॉमी को लाने ले जाने से परेशान होते हैं। लेकिन जब वह बिमार होते हैं और

अस्पताल में दाखिल हो जाते हैं, तो उनके घर वापिस आने पर सबसे ज्यादा टॉमी खुश होता है। मलय-निलय तो मशीनी बच्चे प्रतीत होते हैं। उन्हें न अपने घर से सरोकार है न घरवालों से। वह अपने मशीनी उपकरणों व अपने मित्रों में खुश है। माता-पिता भी सन्तुष्ट है कि बच्चे अपना जन्मदिन घर में न मनाकर मित्रों के साथ मनाना चाहते हैं और बड़ों को उनकी पार्टी में आने की मनाही है। उपन्यास के पात्रों को बड़ी ही गहनता से गढ़ा है। इसमें दर्शाया है कि किस प्रकार जानवर अपने मालिक के लिए ईमानदार हो सकता है परन्तु वह बच्चे जिन्होंने अपने माता-पिता से जीवन भर सब कुछ लिया, उनके अशक्त होने पर उन्हें छोड़ देता है।

लेखिका ने शब्दों का चयन भी उसी प्रकार से किया है जैसे चकाचक फुरफुरी, मिचमिचाहट, ऊल-जुलूल, टपटपा, रौंद रौंद आदि। यह शब्द हिन्दी पाठकों को उपन्यास से और भी मनोरंजक बना देते हैं। अंग्रेज़ी अनुवाद में भी इस उपन्यास और इन शब्दों के जादू को बरक़रार रखने का पूरा प्रयास किया गया है।

पाठ '*रामवती-सोमवती*' बाबू जसवंत सिंह को लगने लगा है कि ''हवा में एकाएक ठंड बढ़ रही है और ठंड ढिठाई के साथ नाक में छींक आने की हद तक फुरफुरी कर रही। छींक आ जाए तो फुरफुरी की 'मिचमिचाहट' से मुक्ति मिले'' (पृ. 25)।

आज के बदलते मूल्यों पर और संवेदनाओं के मशीनीकरण पर लेखिका ने इस उपन्यास द्वारा बहुत ही सटीक कटाक्ष दिया है। साथ ही साथ पात्रों की

परिस्थितियों की कड़ी को इस प्रकार जोड़ा है कि वह अन्त तक एक दूसरे से बँधी नज़र आती है। खून से ज्यादा मन के सम्बन्धों की गूढता दिखाई है।

जब कर्नल स्वामी की मृत्यु होती है उस वक्त बाबू जसवंत सिंह को बिना जाने उदासी के बादल घेर लेते हैं। वह नहीं जानते कि कर्नल स्वामी को ठीक भी है या नहीं परन्तु उनकी अनुपस्थिति कुछ बुरा होने का अंदेशा दे देती है। उनके मन में उल्टे-सीधे खयाल आने लगते हैं जैसे कर्नल स्वामी की मृत्यु बाबू जसवंत सिंह ने भाँप ली हो। सुबह जब उन्हें छींक आती है तो वह अपनी स्वर्गवासी पत्नी को याद करते हैं कि शायद यह अपशगुन है। लेखिका ने '*गिलिगडु*' उपन्यास में रिश्तों का जाल बहुत ही दक्षता से बुना है। कर्नल स्वामी के अपने बच्चे उनकी मृत्यु पर नहीं आते। वह एक अकेली मौत मरते हैं। उनकी मृत्यु के समय उनके पास कोई नहीं होता है।

परन्तु बाबु जसवंत सिंह जिनका कर्नल स्वामी से मित्रता के अलावा कोई रिश्ता नहीं, उनको कर्नल स्वामी की मृत्यु का आभास हो जाता है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि रिश्तों के लिए केवल प्रेम की आवश्यकता होती है फिर चाहे वह खून के रिश्ते हो या न हो। इसका एक और बहुत प्यारा उदाहरण उपन्यास में लेखिका ने बाबू जसवंत सिंह और सुनगुनिया के रिश्ते का दिया है।

सुनगुनिया बाबू जसवंत सिंह के अकेलेपन का सहारा बनती है। उनके कानपुर छोड़ने पर रोती है। लेखिका ने यहाँ भी अकेलेपन का सहारा उनके घर में काम करने वाली महिला बताई है न कि उनका अपना बेटा नरेन्द्र। पत्नी की मृत्यु के बाद जब वह अकेलेपन में घिर जाते हैं तो उन्हें घर से बदबू आने लगती है।

मनोचिकित्सक ने उनकी समस्या को विश्लेषण किया। उसने इसे मामूली सी मानसिक परेशानी बताया, दरअसल बदबू कुछ और नहीं उनका भय है। अकेलेपन का भय।

उपन्यास की भाषा पाठकों के लिए भी स्वप्न गढ़ती है। पहली बार तो कर्नल स्वामी का खुशहाल परिवार का स्वप्न और दूसरी बार बाबू जसवंत सिंह जब कर्नल स्वामी से मिलने जाते हैं।

शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि पाठक भी उस पात्र को जीने लगते हैं। बाबू जसवंत सिंह जब कर्नल स्वामी के घर जाते हैं तो रास्ते से *गिलिगडु* के लिए केक और मिठाइयाँ ख़रीदते हैं। पूरे रास्ते सोचते हैं कि कर्नल स्वामी से क्या क्या कहेंगे।

उनकी घर के पास पहुँच कर आस पास के वृक्षों और पक्षियों को देखते हैं। उनको सब जगह से कर्नल स्वामी का नाता दिखाई देता है। बाबू जसवंत सिंह की यह इच्छा है कि दरवाजा खुलते ही गिलिगडु उनके हाथों से मिठाई छीन ले। लेखिका ने जिस प्रकार शब्द जाल से यह स्वप्न गढ़ा है पाठक भी उसे साथ महसूस करता है।

बाबू जसवंत सिंह कि मिसिज श्रीवास्तव से मुलाकात पाठकों को भी झकझोरती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे बाबू जसवंत सिंह के साथ पाठकों का भी स्वप्न टूटता है।

लेकिन यह उपन्यास केवल समस्या की चर्चा नहीं करता है। यह उपन्यास समाधान भी प्रस्तुत करता है। इसका अन्त तसल्ली भरा है। 'गिलिगडु'

उपन्यास जीवन से हारे हुए अशक्त पात्रों की कहानी नहीं है बल्कि जीवन को उत्साह से जीने की कहानी है।

चित्रा मुद्गल भारतीय भाषाओं की लेखिकाओं में एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर है। उन्होंने प्रस्तुत उपन्यास से यह स्पष्ट कर दिया है कि परिवार के वृद्धजनों का अनादर आधुनिकता का परिचायक नहीं है बल्कि पशुवृत्ति का प्रदर्शन है। वह अन्य उपन्यासकारों की तरह इस उपन्यास में अकेलेपन से जूझ रहे खोखले चरित्रों का वर्णन नहीं कर रही बल्कि उनके संघर्ष और प्रतिरोध की चर्चा भी करती हैं। उपन्यास प्रौढ़ पात्रों की भाषा में है। *'गिलिगडु'* उपन्यास को अंग्रेज़ी में अनुवाद करने के लिए Thesauras की सहायता ली गई, जिससे कई नए शब्दों से पहचान हुई। शब्दों का आम बोलचाल का होना अपने में एक वरदान था।

चित्रा मुद्गल की भाषा में गहनता और लयात्मकता का कारण है उनका सामाजिक जीवन से सरोकार है। उनकी प्रेरणा का स्रोत ही प्रवाहमयी जीवन है और वह इस उपन्यास में पूरी तरह दृष्टिगोचर होता है। उनकी सामाजिक मुद्दों के साथ साथ भाषा पर भी अच्छी पकड़ है। इसी कारण वह सामाजिक परिस्थितियों तथा उनसे उत्पन्न हुई भावनाओं और द्वन्द्वों को अपनी रचनाओं में इतनी सरलता से प्रकट कर पाती है। जैसा कि भोलानाथ तिवारी अपनी पुस्तक अनुवाद विज्ञान में लिखते हैं कि भाषा में प्रयुक्त शब्द, वस्तुओं, भावों, विचारों आदि के प्रतीक होते हैं। किसी भी कृति का भाषिक विश्लेषण करने से पहले उस कृति को ऐतिहासिकता, लेखक का परिवेश, कृति के सामाजिक और राजनीतिक काल का ज्ञान बहुत आवश्यक है।

भाषिक विश्लेषण करते हुए लेखिका द्वारा रचित कई अन्य रचनाओं की भी पढ़ा ताकि उनकी भाषा शैली का और ज्ञान मिल सके। उन्होंने साक्षात्कार का सुअवसर प्रदान किया। जिससे उनकी भाषा और लेखन की शैली का और गूढ़ ज्ञान प्राप्त हुआ। उनकी भाषा में विद्रोह का स्वर हमेशा रहता है फिर चाहे वह 'एक जमीन अपनी' हो या फिर उनका अभी प्रकाशित हुआ उपन्यास 'नाला सपोरा पो बाक्स नं. 203, हो। हाल ही में प्रकाशित इस उपन्यास में चित्रा जी ने समाज के लिए प्रश्न उठाया है कि अगर लिंग परीक्षण पर सज़ा का प्रवधान है तो ऐसे माता-पिता को क्यों दण्डित नहीं किया जाना चाहिए जो अपने किन्नर बच्चों को कहीं छोड़ आते हैं। उनकी भाषा समाज पर कटाक्ष करती रही है।

इसके आधार पर यह स्पष्ट होता है कि चित्रा मुद्गल की भाषा में कल्पना और सूझबूझ दोनों है। वह भाषा और लेखक को किसी बंधे कैदी की तरह कटघरे में नहीं रखना चाहती। हर रचना को रचने के लिए एक दृष्टि की आवश्यकता होती है। वह स्वयं कहती है कि वह दृष्टि कभी उन्हें मार्क्स से मिली है, कभी गाँधी से तो कभी लोहिया से। पाठक तभी समस्या से जुड़ सकता है जब कृति की भाषा बोधगम्य हो, सरल हो तथा आडम्बर रहित हो। उनकी भाषा इन सभी मापदण्डों को पार कर पाठक के हृदय तक पहुँचती है। और यह बात *'गिलिगडु'* उपन्यास से स्पष्ट तौर पर प्रमाणित हो जाती है कि मनुष्य ने मशीनें बना-बनाकर स्वयं को भी संवेदनारहित मशीन बना दिया है।

चौथा-अध्याय

अनूदित उपन्यास का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

मानव जन्म से मरण तक अपने समाज से जुड़ा हुआ होता है। उसका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा तथा जीवन निर्वाह समाज में ही होता है। वही मानव जब समाज में हुए अनुभवों को शब्दों में ढलता है तो वह साहित्य बन जाता है। कोई भी लेखक समाज से ही उत्पन्न होता है और फिर अपनी क़लम के दम पर समाज की अच्छाई बुराई को रेखांकित करता है।

ग्रीस के प्रसिद्ध आचार्य एरिस वेटल ने साहित्य को जीवन और समाज का अनुकरण माना है। रचनाकार जीवन और जगत के अनुभवों और घटनाओं को समाज से उठाकर समाज को ही लौटा देता है। साहित्यकार समाज का उत्थान-पतन, रीति-रिवाज, आस्था एवं मूल्यों को स्पष्ट रूप से साहित्य में प्रदर्शित करता है। शेक्सपियर के नाटक, चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यास, जेन आस्टन के उपन्यास, ओ हेनरी की कहानियाँ, वर्ड्सवर्थ की कविताएँ, शैली, कोलरिज एवं कीट्स की कविताएँ, जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ, रवीन्द्रनाथ की कविताएँ, प्रेमचंद के उपन्यास आदि कृतियों को पढ़ने पर समाज एवं साहित्य का सम्बन्ध समझ आता है।

इसके अलावा भी कई लेखक जैसे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, फणीश्वरनाथ रेणु, बिहारी, महादेवी वर्मा, यशपाल, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, हरिवंशराय बच्चन, भारतेन्दु, अज्ञेय, दिनकर आदि कई साहित्यकार हुए, जिन्होंने न केवल अपनी क़लम के द्वारा समाज की विसंगतियों को उजागर किया बल्कि उनके समाधान भी दिए।

आधुनिक कथा लेखिका चित्रा मुदगल हिन्दी कथा-साहित्य की बहुचर्चित और सम्मानित लेखिका हैं। वह स्वभाव से शीतल, विचारों से दार्शनिक तथा शब्दों से क्रान्तिकारी है। समाज में फैली विंसगतियों एवं कुरीतियों का विद्रोह उनके जीवन के साथ-साथ लेखन में भी दिखता है। अब तक इनकी 13 कहानी संग्रह, चार उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, चार बालकथा संग्रह, पाँच सम्पादित पुस्तकें और दो वैचारिक संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अनुवाद के माध्यम से भी इनका संसार अन्य भाषा-भाषी पाठकों के समक्ष पहुँचा है। उपन्यास कहानी लेखन के साथ-साथ आलोचना वैचारिक लेखन में भी उनकी सृजनात्मक प्रतिभा की झलक दिखती है।

चित्रा मुद्गल कहानियाँ हो या उपन्यास, समय और समाज की जड़ों से जुड़े होना उनकी विशेषता है। वह अपनी रचनाओं में स्त्री के चरित्र को अशक्त नहीं दिखाती। स्त्री के चरित्र के नए-नए आयामों को वह अपनी कृतियों में उभारती है। चाहे वह स्त्री समाज की परिस्थितियों से लड़ रही हो या सांस्कृतिक रूढ़ियों को तोड़ आगे बढ़ रही है।

'लकड़बग्घा' की 'पछाँहवाली', 'केंचुल' की 'कमल', 'भूख' की, 'लक्ष्मी' 'नीले चीख़ने वाला कंबल, की टिकैतिनि कक्की तथा 'प्रतियोनि' की छात्रा 'अनीता गुप्ता' हो। ये सब चरित्र स्वयं में अपनी विशेषता लिए हुए हैं। सामाजिक समस्याओं के उल्लेख के साथ नारीवादी दृष्टिकोण भी स्पष्ट नज़र आता है।

लेखिका अपने साक्षात्कार में कहती है कि सामाजिक सरोकार उन्हें लिखने के लिए प्रेरित करता है। विद्रोह और संघर्ष उनकी क़लम की खूबी रही है। उनके लेखन में एक ओर पात्र जहाँ ज़माने के साथ छोड़ रहे होते हैं वहीं दूसरी ओर इनकी रचनाएँ संवेदनाओं से भी ओत-प्रोत होती हैं।

'*गिलिगडु*' भी ऐसा ही उपन्यास है। यह उपन्यास मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में अनूदित हो चुका है। अंग्रेजी में इसका अनुवाद नहीं हुआ है। उक्त उपन्यास तेरह दिनों की कहानी है। यह दो बुजुर्गों के शेष पर्व के जीवन का मार्मिक ब्यौरा प्रस्तुत करता है।

वर्तमान समय और समाज में लगातार मशीनीकरण और मूल्यों के हनन से आज की पीढ़ी वृद्ध माँ-बाप को अनुपयोगी मानती है। यह उपन्यास उसी त्रासदी को बयां करती है। माँ-बाप अगर बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा करते हैं तो यह उनका कर्तव्य माना जाता है। लेकिन जीवन के अन्तिम चरण में जब माता-पिता को सबसे अधिक ज़रूरत होती है, तब पुत्र उन्हें, बोझ मान उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं। इसी क्रूर और कटु यथार्थ को चित्राजी ने संवेदनशील ढंग से उपन्यास में व्यंजित किया है।

किसी भी समाज की भौतिक समृद्धि का विकास तब होता है जब उसकी कला और संस्कृति दूसरे समाज में किसी-न-किसी ढंग से अपनी पहचान बना पाती है। अनुवाद ने साहित्य के सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष के आदान-प्रदान में बहुत गहरी भूमिका निभाई है। हर समाज की अपनी संस्कृति होती है तथा उस संस्कृति की अपनी विशेषता रहती है। उस संस्कृति से उपजे शब्द तथा अभिव्यक्तियों को दूसरी भाषा में ढूँढ़ पाना कठिन कार्य है। ये सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ बहुत पैनी और व्यंजक होती है। उक्त उपन्यास का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष का शोधपरक विश्लेषण करने का सबसे बड़ा कारण भी यही है। चित्राजी ने भी जिस प्रकार यूपी के कानपुर की ठेठ संस्कृति के साथ शहर और समाज का बनावटीपन दशा या उसका चित्र आज के पाठक वर्ग को भीतर तक छूने की क्षमता रखता है। इस उपन्यास से आकर्षित होने का यह कारण भी है कि यह आजकल की आत्मकेन्द्रित पीढ़ी को आधार बनाकर लिखा गया है। इसलिए पाठक के आधार से भी, कृति से जुड़ाव स्वाभाविक है।

इस उपन्यास में पहली बार कई सामाजिक समस्याओं की चर्चा की गई है। हालांकि इस उपन्यास में मुख्य रूप-सी पीढ़ियों के टकराव की कहानी वर्णित की गई है परन्तु इसके साथ स्त्रीवादी दृष्टिकोण भी है। लेखिका ने उपन्यास में अरूणिमा दास के पात्र को एक सशक्त महिला के रूप में चित्रित किया गया है। वह एक विधवा महिला है जो जीवन के आख़िरी पड़ाव में अपना हमसफ़र ढूँढ़ रही है। उनके दो लड़कियाँ और एक लड़का है और वह दादी नानी भी बन चुकी है। वह अख़बार में विज्ञापन देती है कि इच्छुक व्यक्ति अपना फोटो, परिचय सहित विचारार्थ प्रेषित करे।

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति अभी भी उतनी सशक्त और स्वतंत्र नहीं है जितनी होनी चाहिए। शहरी महिलाओं ने फिर भी समाज में अपनी पहचान प्राप्त की हैं परन्तु गाँव-देहात की महिला अभी भी अपने मौलिक अधिकारों से अनभिज्ञ है। विधवा महिला की जीवन यात्रा तो भारतीय समाज में और भी कठिन हो जाती है। सामाजिक रूढ़ियों में फँसकर वह अपने अधिकारों को तो क्या उसके लिए साधारण जीवन का भी निर्वाह करना दूभर हो जाता है।

विधवा अणिमा दास का पात्र बहुत आकर्षित करने वाला है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अखबार में जीवन साथी के लिए विज्ञापन देना साहसिक कार्य है। लेखिका स्वयं भी स्वतंत्र एव विद्रोही प्रवृत्ति की है। उनके पात्र समाज की रूढ़ियों के सामने घुटने नहीं टेकते बल्कि उनसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं।

लेखिका ने इस उपन्यास में दो वर्गों की स्त्रियों का चित्रण, जो समाज के दो अलग हिस्सों से आती है। दूसरा पात्र है सुनगुनिया। अणिमा दास अंग्रेजी में पत्र व्यवहार करती है, कम्प्यूटर चलाना जानती है और अपने पुरुष प्रेम को स्वीकार करने में सकुचाती नहीं है। वहीं दूसरी ओर सुनगुनिया है जो बाबू जसवंत सिंह के घर में काम करती है। उसका पति और बच्चे बाबू जसवंत सिंह के घर के आसरे ही पलते हैं। सुनगुनिया का पति रामआसुरे जहरीली शराब पीकर मर जाता है। इस कारण सुनगुनिया पर उस घर चलाने की जिम्मेदारी आ जाती है। वह अनपढ़, गरीब और दलित समाज की है। पढ़े-लिखे बुर्जुआ समाज के तौर तरीको से वह अनभिज्ञ है। लेकिन उपन्यास में उसकी समझ कई पढ़े-लिखे शिक्षित वर्ग से कहीं आगे की दिखाई है। नेता रामखिलावन यादव सुनगुनिया को

राजनीति का प्रलोभन देते हैं। वह चुनावादि में जातिवाद को भुनाकर उससे फ़ायदा उठाना चाहता है। उसका नेताजी को दिया गया सपाट जवाब, सुनगुनिया के सशक्त चरित्र को दर्शाता है। वह कहती है –

''गाँव में उसको बामन ठाकुरों ने नहीं सताया, सगे लोगों के लिए भी औरत औरत ही ठहरी ...। उन्हें न सुहाए तो न सही। उसे शांति से अपने बच्चे पालने दे। उसे न पार्टी के दफ़्तर में काम करना है न गाँव की सरपंचगिरी बजानी है।'' (पृ. 83)

आज का समाज सामाजिक तौर पर है। बातों की मिठास और शालीनता की रक्षा करते-करते मनुष्य झूठ और दोगलेपन का नमूना बनता जा रहा है। सुनगुनिया की पात्रता पाठक वर्ग को समाज का वह हिस्सा दिखाता है, जिसमें पढ़ाई लिखाई के समझ तो नहीं परन्तु जीवन की समझ शिक्षित वर्ग से ज्यादा है। ऐसे लोगों में सही ग़लत की समझ होती है और अपनी बात को बिना मिलावट और बनावट के दूसरों को सामने प्रस्तुत करना जानते हैं।

दूसरी तरफ बाबू जसवंत सिंह का चरित्र है। वह एक रिटायर्ड इंजीनियर है। उनका पात्र समाज के हर दूसरे घर का पात्र – जैसा प्रतीत होता है। वह आजीवन अपना काम ईमानदारी से करते हैं और उन्होंने बहुत ही साधारण जीवन शैली अपनाई है। वह पुरानी रीतियों में विश्वास रखते हैं तथा अपने बुढ़ापे के समय बच्चों से आदर और सम्मान के इच्छुक हैं। लेकिन लेखिका बताती हैं कि अब भारतीय समाज में बुढ़ापा एक अभिशाप बनता जा रहा है।

बाबू जसवंत सिंह के बच्चे उनका कानपुर वाला घर हड़पकर उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ने की बात करते हैं। इससे आज के युवा वर्ग का स्वार्थी तथा

संवेदनहीनता का पता चलता है। चित्रा मुद्गल अपने जीवन में काफी NGO से जुड़ी रही है। वह नोयडा में रहती है। अपने साक्षात्कार में बताती हैं कि नोयडा सै. 55 के वृद्धाश्रम का यह हाल है कि अगर आश्रम में पाँच सीटें खाली होती है तो पाँच हजार आवेदन आते हैं। इससे स्पष्ट है कि ऐसे कितने लोग हैं जो अपने माँ बाप को घर में रखना नहीं चाहते हैं। यह उपन्यास समाज के जड़ों से जुड़ी हुई समस्या पर सवाल उठाता है। वृद्ध माता-पिता की अवहेलना साफ दर्शाती है कि किस प्रकार भारतीय मूल्यों से बेखबर हमारी पीढ़ी संवेदनाविहीन होती जा रही है।

यह उपन्यास समाज की आधारभूत संरचना का भी वर्णन करता है। फिर चाहे वह पुलिस हो, प्रशासन के साधन हों या फिर हमारे समाज के राजनीतिज्ञ हो। शहर की बसों के हाल पर भी लेखिका इस उपन्यास द्वारा कटाक्ष करती है।

''कातिल ब्लू लाइन बसें आजकल जेट विमानों से होड़ लेने पर उतारू हैं और सड़क पर चलने वाले फुटपथिए उन्हें कीड़े-मकोड़े नज़र आते हैं। ये सड़कें कीड़े-मकोड़े के लिए नहीं बनी। सड़क पर एकछत्र उनका अधिकार है।''

उपन्यास में एक ओर संचार के माध्यमों पर कटाक्ष है तो दूसरी ओर समाज में पुलिस वालों की छवि पर भी व्यंग्य कसा गया है। 'पुलिस वालों का ख़ाली खोखला रोब बनाए रखता है।

दरअसल पुलिस जो हमारी रक्षा के लिए मुस्तैद है, वह नदारद है और केवल ख़ाली दीवारें हमारी रक्षा का आश्वासन देती हैं।

उपन्यासकार ने इस कृति में समाज के कई आयामों एवं संस्कृतियों का परिदृश्य उजागर किया है। एक तरफ़ उन्होंने ग्रामीण जीवन की स्पष्ट छवि दिखाई है तो दूसरी तरफ शहरी जीवन का चित्रण किया है। इस उपन्यास में दो तरह की जीवन शैलियों में टकराव व्यक्त है। सरल, साधारण जीवन जीने के बावजूद वह कठिनाइयों से परे नहीं है। उन्हें जीवन भर स्वीकृत समाज-व्यवस्था की बारीकियों से जूझना पड़ता है। समाज की रूढ़ियों में फँसकर वे कई बार अपने मौलिक अधिकारों से भी वंचित कर दिए जाते हैं।

इसी तरह शहरी जीवन का परिदृश्य चित्रित हुआ है। हर कोई होड़ में शामिल है। एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ उन्हें मानवीय संवेदनाओं से दूर कर देती है। यहाँ प्लेटो की धारणा पर दृष्टिपात करना उचित होगा। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति *'रिपब्लिक'* के दूसरे खण्ड में दो तरह के समाजों की चर्चा की है। साधारण शहर तथा धनी शहर। प्लेटो के उदाहरण से साधारण शहर या समाज में न्याय और शासन के लिए सरकारी दख़ल की भी जरूरत नहीं है। उनका समाज इतना सक्षम है कि वह अपनी न्याय प्रणाली द्वारा समाज व्यवस्था बना सकती है जबकि धनी समाज जिसे शहरी समाज की भी संज्ञा दी जाती है। अपनी पारम्परिक रीतियों एवं रूढियों से मुँह मोड़कर अपनी आकांक्षा के अनुसार राह निर्मित करते हैं।[1]

---

[1] "They deviate from the simple ways of their ancestors to indulge in the satisfaction of new needs that require new products. Thus, they sit on cushions and at tables, eat desserts, use pomades and fragrances, visit with prostitutes, and enjoy pastry, theatre and music concerts." (P. 159)

ग्रामीण जीवन का यथार्थ हो या शहरी जीवन की न्याय प्रणाली और शासन व्यवस्था की आवश्यकता दोनों जगह है। अंतर केवल इतना है कि साधारण जीवन में बनावट नहीं होती। जीवन की कठिनाइयाँ, सरलता से सुलझाई जा सकती है। परन्तु शहरी जीवन शैली में रचे-बसे लोग अपने ही माता पिता को बोझ मान उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं अन्त में उनका जीवन अपनों के बिना और कठिन हो जाता है तथा जीवन के संघर्ष में वह बिल्कुल अकेले हो जाते हैं।

उक्त उपन्यास को अंग्रेजी अनुवाद के लिए चुनने का सबसे बड़ा कारण यह भी है ताकि भारतीय समाज में घर करती यह समस्या अंग्रेजी पाठक वर्ग तक पहुँच सके। हालाँकि बुढ़ापे की समस्याओं से आज विश्व का हर समाज परिचित है और भयभीत भी। लेकिन भारत में वृद्धों की समस्या इसलिए कहीं अधिक भयावह है क्योंकि यहाँ वृद्धों को केवल अपने परिवार के सदस्यों पर ही निर्भर रहना पड़ता है और वह भी अर्थ एवं सामान्य सुविधा के अभाव में।

वर्तमान समय एवं भूमण्डलीकृत विश्व में उपभोग संस्कृति ने विषम रूप धारण कर लिया है। लोगों की मानसिकता पूर्ण रूप से आत्मकेन्द्रित हो गई है। पारिवारिक मूल्यों का निरंतर अभाव होता जा रहा है। परिवार के वृद्धजनों का अनादर आधुनिकता का परिचायक नहीं है बल्कि पशुवृत्ति का प्रदर्शन है। आज की संस्कृति में एवं मशीनीकरण के दौरे में 'इस्तेमाल करो और फेंको' (Use & Throw) वाली संवेदनहीनता ने समाज को जकड़ लिया है।

वर्तमान पीढ़ी 'फायदे की पीढ़ी' की वकालत करती है। जिससे और जिसमें फायदा दिखता है, उनका आदर-सत्कार करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं

होती। प्रस्तुत उपन्यास में भी जब तक नरेन्द्र की माता जीवित रहती हैं, वह उनका खूब आदर सम्मान करते हैं। इसका कारण है माँ के पास बहुत साड़ियाँ होना तथा माता-पिता का एकजुट रहना। नरेन्द्र जानता है कि कानपुर वाला घर अभी भी उसके पिता बाबू जसवंत सिंह के पास है।

नरेन्द्र की पार्टियों में भी उसकी माँ भिन्न-भिन्न प्रकार के पकवान पकाया करती थी। जब तक वह जीवित रही तब तक उनका बहुत आदर-सम्मान किया। उनकी मृत्यु के पश्चात् ही उनकी साड़ियों और गहनों के बँटवारे की बात चलने लगती है। उक्त उपन्यास हमें अपनी सामाजिक संरचना की कमजोरियाँ और पीढ़ियों के अंतर पर बार-बार विचार करने पर बाध्य कर देता है।

लेकिन इस प्रकार के स्वार्थी प्रवृत्ति, समाज में आनेवाली नई पीढ़ी पर भी दुष्प्रभाव डाल रही है। आज की नई पीढ़ी माँ-बाप की जगह मनोरंजक मशीनों के साथ समय बिताना ज्यादा पसंद करते हैं। अब बच्चों को समझाने के लिए बहुत सख़्ती नहीं की जा सकती। वह किस बात की कड़वाहट लेकर बड़े होकर क्या जवाब दे, इस बात का अनुमान लगाना असम्भव है। इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण तब मिलता है जब नरेन्द्र बचपन की कड़वाहट अपने पिताजी से उजागर करता है। 'गठरी में लागा चोर' प्रकरण में नरेन्द्र कहता है।

''गाँव से आए रामसेवक कक्का के हाथों अम्मा उनसे छिपाकर उसके होस्टल शक्करपारे और कटहल का आचार भिजवा रही थी। देख लेने पर उन्होंने कक्का की साइकिल के कैरियर में बँधी अचार की मटकी और शक्करपारे उठाकर गेट से बाहर फेंक दिए थे।'' (पृ. 40)

यह सुनकर बाबू जसवंत सिंह हतप्रभ रह गए।'

जो सख्ती बच्चों में अनुशासन लाने तथा बेहतर भविष्य के लिए बाबू जसवंत सिंह ने की थी, वही सख्ती उनके अनादर का कारण बन गई थी। समाज में फैले इस स्वार्थी मशीनीकरण के विषय ने आनेवाली पीढ़ी को बिल्कुल संवेदनाओं से रहित कर दिया है। आज की पीढ़ी, अपनी उम्र से ज़्यादा बड़ी हो गई है। बड़ों के प्रति आदर प्रेम, उनके लिए मात्र खोखले शब्द रह गए हैं। 'यह क्या जगह है दोस्तो' उप-अध्याय में जब बाबू जसवंत सिंह पर बहू सुनयना पड़ोसन की बेटी के सामने अभद्र हरकत का आरोप लगाती है तो यह घटना समाज की मानसिकता पर प्रश्न उठाती है।

जिस लड़की को देखकर बाबू जसवंत सिंह पर अभद्रता आरोप लगता है, उसमें वह अपनी पोती देखते हैं। वह कहते हैं -

''ऐसा नहीं है कि पड़ोसन की बेटी को बाबू जसवंत सिंह ने देखा नहीं। ज़रूरी कपड़े उठाते फैलाते नजर पड़ी है उस पर। उस मासूम-सी किशोरी को देखकर सदैव यही ख़याल आया। नरेन्द्र की एक बेटी होती तो घर के रुक्ष वातावरण में शायद कोई कलरव जन्मता।'' (पृ. 60)

दरअसल यहाँ समाज की बीमार मानसिकता का चित्रण किया गया है। अब किसी भी रिश्ते और भावनाओं का कोई अर्थ नहीं रहा है। इस पीढ़ी की फितरत में उम्र का लिहाज नहीं है। इसलिए बाबू जसवंत सिंह द्वारा की गई हरकत सबको अभद्र और अश्लील लगती है। सोचा ही नहीं होगा कि इसका कारण बाबू जसवंत सिंह की कोई पीड़ा या तकलीफ़ हो सकती है।

आज की पीढ़ी माता-पिता के साथ रहने के बाद भी उनकी भावनाओं से कोसों दूर है। जैसा कि बाबू जसवंत सिंह नरेन्द्र के बारे में कहते हैं कि विदेश में रहनेवाले मित्रों से उसका बराबर सम्पर्क बना हुआ है। इसमें व्यंग्य यह है कि वह अपने बाबू जी की पीड़ा नहीं समझता। वह नरेन्द्र के ही घर में रहते हैं। लेकिन वह उनकी पीड़ा और अकेलेपन से पूरी तरह अनभिज्ञ है। विदेश के मित्रों से नरेन्द्र का फायदा है। वह स्वयं भी अमेरिका जाना चाहता है। इसलिए उसका सम्पर्क बना हुआ है। ऐसी ही संवेदनहीन स्वार्थी प्रवृत्ति नई पीढ़ी के पात्र मलय और निलय में भी दिखाई गई है।

दरअसल इस उपन्यास में दो तरह के बच्चों का वर्णन हुआ है। एक तरफ नरेन्द्र और सुनयना के बेटे मलय और निलय का वर्णन किया गया है। दूसरी तरफ कर्नल स्वामी के काल्पनिक संसार की गिलिगडु (कात्यायनी - कुमुदनी है मलय-निलय मशीनी बच्चे प्रतीत होते हैं। अपना जन्मदिन वह अपनों के साथ ही मनाना नहीं चाहते। वह अपने जन्मदिन की पार्टी में सब मित्रों को बुलाते हैं लेकिन माता-पिता या दादा को नहीं। विडम्बना यह है कि माता-पिता भी बच्चों के निर्णय से खुश है। सुनयना कहती है कि पिछली बार जन्मदिन की पार्टी का उसे बहुत काम पड़ गया था। इसलिए यही अच्छा है कि बच्चे अपना जन्मदिन बाहर ही मना आए। वह अपने दादा से उपहार तो चाहते हैं लेकिन उनके साथ समय व्यतीत नहीं करना चाहते।

दूसरी तरफ चित्रा मुद्गल ने उपन्यास में 'गिलिगडु' के कर्नल स्वामी की पौत्रियाँ - कात्यायनी और कुमुदनी है। वह अपने दादा के साथ खेलती हैं। उन्हें अपने स्कूल की कविताएँ सुनाती हैं। वह कर्नल स्वामी से प्यार भरी ज़िद करती

है, गाती-नाचती तथा सबसे ज़्यादा वक़्त उन्हीं के साथ व्यतीत करती है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में दो परिवारों के बिल्कुल अलग संसारों का वर्णन किया गया है, तो इसने पाठकों के काफ़ी हैरान किया। पाठक यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि आज के समय में भी परिवार यह प्यार और सद्भाव होना सम्भव है। लेकिन अंत में जब यह पता चलता है कि यह सद्भाव केवल भ्रम था तो यह प्रसंग सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उठाता प्रतीत होता है।

बाबू जसवंत सिंह को अंत में पता चलता है कि कर्नल स्वामी तो बहुत अकेले थे। उनके साथ उनके परिवार का कोई भी नहीं रहता था। उनके बेटे ने उन पर पैसों के लिए हाथ उठाया था। उनकी बहू अपने गुरु के साथ भाग गई थी। उनकी पौत्रियाँ उनके साथ नहीं रहती थी बल्कि वे किसी होस्टल में पढ़ती थीं। उनका जीवन बिल्कुल अकेला था। यहाँ तक कि उनकी मृत्यु पर भी सब बच्चे नहीं आए बल्कि बस्ती के गरीब बच्चे इकट्ठे हुए। उपन्यास में यह वर्णित घटना समाज की व्यवस्था पर कई प्रश्न उठाती है। वास्तव में हमारा अपना कौन है? क्या खून का रिश्ता ही सबसे बड़ा रिश्ता होता है?

इस उपन्यास में लेखिका ने गहरे शोध से पात्रों के रिश्तों की रचना की है। मनुष्य हो या जानवर, हर कोई अपने बच्चे का पालन-पोषण तथा संरक्षण करता है। भारतीय समाज में तो मनुष्य अपना पूरा जीवन बच्चों को अपने पैरों पर खड़े होने में लगा देता है। वही बच्चे बड़े होकर बुढ़ापे में अपने माँ-बाप को अपने घर तक में रखने से गुरेज करते हैं। वह उन्हें अनुपयोगी मानकर वृद्धाश्रम में फेंक आना चाहते हैं।

दूसरी ओर कई और रिश्तों का द्वन्द्व भी उक्त उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी का रिश्ता। बाबू जसवंत सिंह को कर्नल स्वामी से इतना लगाव हो जाता है कि बीमार होने पर वह अपने पुत्र और पुत्रवधू तक को नहीं पहचानते बल्कि कर्नल स्वामी को याद करते हैं। कर्नल स्वामी भी बाबू जसवंत सिंह के लिए तरह-तरह के व्यंजन बनवाते हैं। उन्हें घुमाते हैं, उनके दवाई और जूते ख़रीदकर देते हैं तथा उनकी तकलीफ़ें सुनते हैं। बाबू जसवंत सिंह को कर्नल स्वामी के मृत्यु वाले दिन अंदेशा हो जाता है कि कोई दुर्घटना हुई है। उनके गुज़रने पर इतना दु:ख कर्नल स्वामी के बच्चों को नहीं होता जितना बाबू जसवंत सिंह को होता है।

टॉमी और बाबू जसवंत सिंह का भी रिश्ता उनके अपने बच्चों से ज्यादा गहरा है। हालाँकि आरम्भ में बाबू जसवंत सिंह टॉमी से खीझ जाते हैं लेकिन जब वह बीमारी के बाद अस्पताल से वापिस आते हैं, तो घर में टॉमी के अलावा किसी को खुशी नहीं होती। यहाँ एक जानवर मनुष्यों से ज्यादा संवेदनशील दिखाया गया है।

सुनगुनिया और बाबू जसवंत सिंह का रिश्ता भी सामाजिक परम्पराओं के अनुसार वैध नहीं है लेकिन उसमें मालिक और नौकर के रिश्ते में भी माता-पिता तथा बच्चों के रिश्ते से ज़्यादा गहराई और प्रेम है। बाबू जसवंत सिंह चाहते हैं कि सुनगुनिया उन्हें बाबू जी कहकर पुकारे। वह उसके बच्चों की शिक्षा के लिए पैसे भिजवाते हैं। उसके बच्चों का नामकरण करते हैं तथा उसकी बेटियों को भी कर्नल स्वामी की पोतियाँ वाला नाम देते हैं। यथा कात्यायनी और कुमुदनी। इससे

यह स्पष्ट पता चलता है कि सुनगुनिया की बेटियों में वह पोतियों का प्रेम खोजते हैं, जो प्रेम उन्हें अपने पुत्र के घर नहीं मिला।

सुनगुनिया की देखभाल में बाबू जसवंत सिंह का रहना, उनके बच्चों के लिए अस्वीकार्य था। वह न स्वयं उनकी देखभाल कर पाते हैं न ही उन्हें अपने पुराने घन में रहने देते हैं। समाज ने स्वयं कुछ ऐसी परम्पराएँ और रूढ़ियाँ बनाई है, जो बाद में मनुष्य को खुद ही परेशान करती हैं। बच्चों पर माता-पिता के बुढ़ापे का दायित्व सौंपा गया है। लेकिन वह दायित्व निभाने के लिए बाध्य नहीं है और इसी लचर सामाजिक व्यवस्था के कारण माता-पिता को बुढ़ापे में अनादर सहना पड़ता है।

उक्त उपन्यास हमारे समकालीन समाज की त्रासदी का बयान है जो समाज की बेहतरी के लिए लिखा गया है। चित्रा मुद्गल ने अपने साक्षात्कार बताया था कि उन्होंने ये पात्र वास्तविक जीवन से ही लिए हैं। वह वास्तविक जीवन में भी कर्नल स्वामी जैसे पात्रों से मिल चुकी है। लेखिका स्वयं कई NGO तथा वृद्धाश्रमों से जुड़ी रही हैं। उन्होंने अपने साक्षात्कार में डॉ. राव की पात्रता की चर्चा की है। डॉ. राव भी कर्नल स्वामी की तरह एक खूबसूरत और खुशहाल परिवार का भ्रम बनाकर जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनकी मृत्यु पर भी उनके बच्चे उन्हें देखने नहीं आए थे।

हमारे भारतीय समाज में परिवार और बच्चों की उपस्थिति को महत्ता दी जाती है। लेकिन उपन्यास में वर्णित अपने नहीं बल्कि पराये पात्र बाबू जसवंत सिंह का साथ निभाते हैं। प्रकारांतर से लेखिका ने उस मानवीय संबंध को बेहतर

बताया है, जो रक्त संबंध से परे हैं। बाबू जसवंत सिंह के अपने बेटे उन्हें वृद्धाश्रम भेजना चाहते हैं। यह विषम परिस्थिति समाज की व्यवस्था पर सवाल उठाती है।

उपन्यास के अन्तिम अध्याय में मि. और मिसिज श्रीवास्तव के पात्र का वर्णन मिलता है। उक्त दम्पति कर्नल स्वामी का पड़ोसी है। वे सप्रेम साथ में रहते थे। परन्तु उनका अपना कोई बच्चा नहीं होता। वे कर्नल स्वामी से उनके बच्चों से ज्यादा लगाव रखते हैं। उनके बच्चे कर्नल स्वामी की मृत्यु पर भी नहीं आए। जब कर्नल स्वामी को उनके बड़े बेटे ने मार कर लहूलुहान कर दिया था तब मि. श्रीवास्तव ने ही पुलिस को बुलाया था। कर्नल स्वामी के परिवार और उनके बच्चों की बदसलूकी देखकर मिसिज श्रीवास्तव अंत में बाबू जसवंत सिंह से कहती है –

''ऐसी कसाई औलादों से तो आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं, कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं ... मिसिज श्रीवास्तव का गला भर्रा आया।'' (पृ. 138)

वृद्धावस्था में मनुष्य को सबसे ज्यादा परिवार के सहारे की जरूरत होती है। लेकिन इसी मुश्किल घड़ी में उसकी संतान उसका साथ छोड़ देती है। यह पूर्व संस्कारों का अनादर है। ऐसे लाचार और अशक्त व्यक्ति के सामने जो भी विकल्प आता है, उसी को जीवन का आधार बना लेता है। अपनी वृद्धावस्था में सन्तान का सेवा का सुख न मिलने के कारण, वृद्धावस्था की कठिनाइयाँ और बढ़ जाती है। ऐसी परिस्थितियाँ देखकर अगर निसन्तान व्यक्ति बच्चे होने की

कामना ही छोड़ देता है तो यह ग़लत नहीं जान पड़ता। हालाँकि समाज के अनुसार माता-पिता को अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव में अपनी सन्तान के साथ ही रहना चाहिए। मनुष्य सामाजिक प्राणी है इस नाते सबको सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुकूल ही जीवन यापन करना होता है। लेकिन जब वही संतान अपना कर्तव्य नहीं निभाती तो माता-पिता को भी संतान से किनारा करने में झिझकना नहीं चाहिए।

प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक परम्पराओं और संस्कृतियों रूढ़ियों को तोड़ने की व्यथा-कथा है। आज के समाज में निर्धारित शिक्षा प्रणाली का माननीय संवेदनाओं से कोई सरोकार नहीं है। किसी भी समाज को गढ़ने में उस समाज की शिक्षा प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान होता है। आनेवाली पीढ़ी का भविष्य, समाज की शिक्षा प्रणाली पर ही निर्भर होता है लेकिन अमल के अभाव में हमारे सारे मूल्य और आदर्श किताबी बनकर रह गए हैं।

बच्चों को जिस प्रकार की किताबें पढ़ाई जाती है, जिस प्रकार के खेल सिखाए जाते हैं, वही उनकी सोच-समझ पर गहरा असर डालते हैं। अगर हम उन्हें बन्दूकों वाले, गाड़ियों को उड़ानेवाले, पक्षियों को मारनेवाले वीडियो गेम्स खिलायेंगे तो उनकी प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से हिंसात्मक ही बनेगी। हमारी शिक्षा प्रणाली में अपनी ही भाषा को छोड़ने की छूट मिली हुई है। विज्ञान के छात्र ज्यादातर भाषा नहीं पढ़ते हैं। अपनी भाषा से कटने का अभिप्राय है, संवेदनाओं से दूर हो जाना। आज के माता-पिता बच्चों को बड़े-बड़े डॉक्टर और वैज्ञानिक ही बनाना चाहते हैं। यह सब बनाना कोई आपत्तिजनक बात नहीं है लेकिन बच्चों की संवेदनाओं के साथ खिलबाड़ करना, स्वयं के लिए खाई खोदने के समान है।

पाश्चात्य सभ्यता की नकल करते हुए भारतीय समाज के मानव ने अपनी मूल्य मर्यादा की खूबी भी खो दी है। आज भी पाश्चात्य समाज में मानसिक रोगियों की संख्या एशियाई समाज से कहीं ज्यादा है। भारतीय संस्कृति में बुढ़ापा पहले अभिशाप नहीं माना जाता था। लेकिन आज समय के बदलाव के कारण हमारे सोच और मूल्यों में भी अन्तर आया है। उपन्यास में भी पीढियों का अन्तराल तथा मूल्यों का बदलाव दिखता है।

बेटे नरेन्द्र और बहू सुनयना का अनादर देखकर बाबू जसवंत सिंह अपने पुराने समय में खो जाते हैं। वह अपने पिता की खड़ाऊँ की आहट कानपुर वाले घर के आँगन में महसूस करते हैं। वह याद करते हैं कि किस प्रकार बाबू जी को पहले खाना परोसा जाता था। नरेन्द्र की अम्मा अपने ससुर से पर्दा करती थी तथा घर में उनके मान, सम्मान में कहीं कोई कमी नहीं आती थी। वहीं नरेन्द्र ने बाबू जसवंत सिंह को बालकनी वाला कमरा देकर, कुत्ते घुमाने की ज़िम्मेदारी दे रखी है। उनके खाने का भी कोई समय नहीं है और बातों ही बातों में उन्हें बार-बार याद दिलाया जाता है कि यह घर उनका नहीं है।

उक्त उपन्यास में केवल दो नहीं बल्कि तीन-तीन पीढ़ियों का टकराव दर्शाया गया है। मलय-निलय अपने दादा के पास बैठ कहानियाँ नहीं सुनना चाहते। वे अपने दादा से प्रश्न पूछते हैं तथा जवाब न मिलने पर इण्टरनेट का हवाला देते हैं। उन्हें अपने दादा के पास बैठ उनके अनुभव सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है। उन्हें इण्टरनेट से ज्यादा जल्दी और आसानी से जवाब मिल जाते हैं। आज का इन्सान एक अनदेखी और अनजानी दौड़ का हिस्सा बना हुआ है। उसके पास ठहर कर संवेदनाओं को महसूस करने का भी समय नहीं है।

भारतीय समाज का मनुष्य अपनी जड़ों से तो अलग हो गया है लेकिन सामाजिक रूढ़ियों के बोझ तले अब भी दबा हुआ है। अगर अपने अकेलेपन से निकलने के लिए इन रूढ़ियों को तोड़ता भी है तो लेखिका के अनुसार वह गलत नहीं है।

उपन्यास में कर्नल स्वामी की प्रेमिका अणिमा दास की भी चर्चा की गई है। कर्नल स्वामी बिल्कुल अकेले हैं। उनका अणिमा दास से पत्र-व्यवहार चलता है। अणिमा दास भी विधवा है तथा अपने बच्चों की जिम्मेदारी से पूरी तरह मुक्त हो चुकी है। कर्नल स्वामी और अणिमा दास विवाह करना चाहते हैं। हालाँकि यह सामाजिक परम्पराओं के विरुद्ध है लेकिन लेखिका यह सवाल उठाती हैं कि क्या खुशहाली से साथ रहने के बजाय अकेली मौत मरना सही है। यह उपन्यास हमारी सामाजिक व्यवस्था पर कई प्रश्न खड़े करता है जो पाठकों को विचलित करने के लिए काफ़ी है।

उपन्यास की शैली जहाँ एक ओर प्रश्नात्मक है वहाँ दूसरी ओर व्यंग्यात्मक है। लेखिका समाज की व्यावहारिकता पर गहरा कटाक्ष किया है। उन्होंने प्रसंगानुसार पात्रों के संवाद से यह जताया है कि जो कुछ आज की पीढ़ी कर रही है, वह चाहे आदर्शों के अनुसार न हो लेकिन व्यावहारिकता की दृष्टि से कहीं से भी कमजोर नहीं है। लेखिका ने इस तात्कालिक व्यावहारिकता पर कटाक्ष करते हुए दर्शाया है कि आज के समाज की माँग भावात्मकता के स्तर पर नहीं, उपयोगिता के आधार पर है। जिसकी जितनी उपयोगिता है - समाज में उसकी उतनी महत्ता है।

लेकिन विचार करने का विषय यह है कि यह स्वार्थी प्रवृत्ति हमारे समाज को किस ओर लेकर जा रही है। आदर्शों का पालन आज की पीढ़ी को पिछड़ापन लगता है। वह भूल चुकी है कि आदर्श समाज की संरचना मूल्यों के बिना संभव नहीं है। व्यावहारिकता समाज में अनिवार्य है परन्तु मूल्यविहीन समाज कभी भी बहुत देर तक नहीं टिक सकता। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था –

That society is greatest, where the highest truth became practical, That is my opinion and if society is that fit for the highest truths, make it so and the sooner the better. - Swami Vivekanand and Social Change

समय का बदलाव सृष्टि का नियम है तथा बदलते समय के साथ समाज हमेशा बदलता रहा है। आज से बीस साल पहले जो आधुनिक था, वह आज पुराना है और जो आज आधुनिक है वह कुछ वर्षों बाद पुराना गिना जाएगा। वर्तमान पीढ़ी जिस आधुनिकता की दौड़ में भाग रही है, वह स्वयं के लिए खाई खोद रही है।

पाश्चात्य समाज की अंधाधुंध नकल भी इस पीढ़ी की प्रवृत्ति रही है और इसी के कारण हम अपनी संस्कृति की अच्छाइयों को भी खो रहे हैं। जैसा कि पहले कहा गया है और लेखिका भी मानती है कि इसी मशीनी मानव को बनाने में हमारी शिक्षा प्रणाली ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। जिस तरह की कहानियाँ, लेख और फ़िल्में परोसी जा रही है, उनका भी हमारे समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। एक साहित्यकार और रचनाकार पर समाज बनाने और सुधारने का उत्तरदायित्व होता है। आज आधुनिकता तथा वास्तविकता को ज्यों का त्यों प्रदर्शित करने के नाम पर समाज में मूल्यविहीन पीढ़ी चित्रित की जा रही है।

हालाँकि सभी रचनाएँ ऐसी नहीं है। वैसे भी सभी लेखन साहित्य नहीं होता और सभी साहित्य रचना नहीं कहलाता है। ऐसे में आज की पीढ़ी की यह और जिम्मेदारी बन जाती है कि वह अपनी गुम हो ही संवेदनाओं को सँजोए।

यह उपन्यास अपने समापन के साथ कई प्रश्न खड़े कर देता है। वस्तुतः बुढ़ापा क्या है, क्या बढ़ती आयु के साथ मानवीय भावनाएँ शिथिल हो जाती हैं?

क्या मानवीय आशाएँ, उनकी छोटी-छोटी आकांक्षाएँ भी ख़त्म हो जानी चाहिए क्योंकि वह व्यक्ति बूढ़ा हो चुका है? जीवन का यह पड़ाव आखिरकार इतना दुःखदायी क्यों है, क्या पीढ़ियों के अंतर (Generation Gap) के चलते वर्तमान पीढ़ी ने बड़ों को समझने का प्रयास भी बंद कर दिया है और अंत में क्या रूढ़िवादी परम्पराओं के चलते जीवन को उन सामाजिक परम्पराओं से मुक्ति दिलाना ग़लत है?

यह कहानी पुराने समय से चली आ रही कि अंधपरम्पराओं को तोड़ने का समय आ गया है। इस कृति से यह विश्वास और भी गहरा हो जाता है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का मूल्य हमेशा बना रहेगा। '*गिलिगडु*' में जिन दो वृद्ध पात्रों की कथा वर्णित की गई है, उन दोनों की पत्नियाँ गुजर चुकी हैं। इनसे सम्बद्ध जटिल परिस्थितियाँ एवं विषम समस्याएँ पाठकों के मन में गहरी वेदना एवं मानवीय संवेदना उत्पन्न करती है। धन के प्रति अतिमोह के कारण आज-कल लोग वृद्ध एवं अशक्त माता-पिता की मात्र अनदेखी ही करते, उनकी हत्या करने से भी गुरेज नहीं करते। वही माता-पिता अकेलेपन की पीड़ा सहते रहते हैं। अकेलेपन की यह पीड़ा असहनीय है, खासकर जब वह तन और

मन दोनों से दुर्बल हो जाते हैं। उक्त उपन्यास समाज में बुजुर्गों की पीड़ा पर ही नहीं बल्कि अमानवीय परिस्थितियों एवं भविष्य में आनेवाली समस्याओं पर भी प्रकाश डालता है, जिनके बहुत घातक परिणाम हो सकते हैं।

न केवल सामाजिक संबंधों और दायित्वों पर प्रश्न उठाता है बल्कि उसका उत्तर भी प्रदान करता उक्त उपन्यास केवल समस्याओं से जूझ रहे कमजोर पात्रों की कहानी नहीं है। जसवंत सिंह, कर्नल स्वामी, सुनगुनिया जैसे पात्र हमें आस-पास दिख जायेंगे। लेकिन ऐसे कितने लोग होते हैं, जो समस्याओं से लड़कर, परम्पराओं को तोड़कर निर्णायक फैसला लेने में सक्षम होते हैं। उपन्यास के पात्र विषम परिस्थितियों में संघर्ष और प्रतिरोध करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास से तात्पर्य परिस्थितियों से हारने वाले नहीं बल्कि निरंतर संघर्ष करनेवाले चरित्रों से है।

उपन्यास के मुख्य पात्र बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् अपने बेटे के पास दिल्ली आ जाते हैं। वहाँ वह बिल्कुल अकेले होते हैं। इस अकेलेपन का एकमात्र सहारा कर्नल स्वामी बनते हैं। बाद में पता चलता है कि कर्नल स्वामी जिस सुखद परिवार की कथाएँ सुनाया करते थे, वह सब भ्रम था। लेकिन कर्नल स्वामी की मृत्यु के बाद भी बाबू जसवंत सिंह का मनोबल टूटना नहीं है। वह फैसला करते हैं कि अब वह अपने पुत्र के आसरे नहीं रहेंगे। वह कानपुर वापिस जाएँगे तथा अपनी संपत्ति भी सुनगुनिया का नाम करेंगे। यहाँ तक कि उनके दाह संस्कार तक का अधिकार भी उनके पुत्र नरेन्द्र तक को नहीं दिया जाएगा। वे सारे अधिकार सुनगुनिया के पुत्र रामरतन को मिलेंगे जिसका

उन्होंने नाम अभिषेक आसरे रखा था, वह अपने बेटों से, जो उन्हें वृद्धाश्रम में फेंकना चाहते हैं, कोई सरोकार नहीं रखेंगे।

अंत के अनुच्छेद पाठकों को झकझोरने तथा सीख देने वाला है।

''... कहना चाहते हैं कि कानपुर पहुँचते ही वे अपने परिचित एडवोकेट मुन्ना सिंह कुशवाहा से अविलंब मुलाकात करेंगे। उनसे अपनी नई वसीयत बनवाएँगे और उसे रजिस्टर्ड करवाएँगे कि कानपुर वाला घर उनकी पैतृक सम्पत्ति नहीं है। उनकी अर्जित सम्पत्ति है। उनके न रहने पर उस घर की एकमात्र अधिकारिणी सुनगुनिया होगी।''

अगर पुरानी पीढ़ी स्वयं को सशक्त कर ऐसे निर्णय ले तभी शायद ऐसी पीढ़ी तैयार हो पागी जो उपयोगिता के आधार पर रिश्तों को तौले। ऐसे निर्णय ही आज की पीढ़ी को इस सत्य से अवगत करवा सकते हैं। अगर वह माता-पिता के कर्तव्यों से विमुख हो सकती है तो माता-पिता भी उससे सम्बन्ध तोड़ सकते हैं। ऐसा बदलाव आज के समाज की आवश्यकता है। ऐसे निर्णयों से ही हम बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं, जिसमें भावनाओं को उपयोगिता के तराजू में न तोला जाए। अगर मानवीय आस्थाएँ और सामाजिक समस्याएँ मनुष्य के भीतर विवेक पैदा नहीं करती तो इसका अभिप्राय यह है कि उसे अपने समाज से कोई सरोकार नहीं है। यह मशीनी युग मनुष्य की मनुष्यता ही समाप्त कर रहा है।

चित्रा मुद्गल के अनुसार मनुष्य अपने प्रति संसार से अनभिज्ञ है। वह किसी भी प्रकार की मानवीय संवेदना से जुड़ना नहीं चाहता। वह यह नहीं समझता कि उसके घर पर जो काम करनेवाले आते हैं, उनके संसार की क्या

पीड़ाएँ है। सीमित साधनों में आज की पीढ़ी को संतोष नहीं है। हालाँकि आज भी हमारे समाज एक ऐसा बड़ा वर्ग है जिसे दो वक्त का खाना भी कठिनाई से प्राप्त होता है। लेकिन नई पीढ़ी सामाजिक मूल्यों से नहीं जुड़ना चाहती। सुविधाप्राप्त और सशक्त वर्ग के पास उनकी पीड़ाएँ एवं दुश्वार जीवन की विडम्बनाएँ सुनने का समय नहीं है। मनुष्य केवल शब्दों से रिश्ता बनाता है।

लेखिका अपनी पहली कहानी '*डोमिन काकी*' का उल्लेख करते हुए कहती हैं – ''सामाजिक रिश्तों की विडम्बना पर मुझे अपनी दादी का चाँटा याद आता है।'' '*डोमिन काकी*' कहानी सच्ची घटना पर आधारित है। उनके पुश्तैनी घर पर जब सफाई करनेवाली आती है तो वह 'डोमिन ... डोमिन' कह कर बुलाती है। तभी उनकी दादी उन्हें समझाती है कि डोमिन नहीं डोमिन काकी कहते हैं। एक दिन डोमिन काकी का समान गिर जाता है और वह उनकी सहायता करती है। तभी दादी आकर उन्हें थप्पड़ मारती है। वह नाराज होती है कि उन्होंने डोमिन काकी को छू लिया। तो उन्हें लगा मानवीय रिश्ते आडम्बरों के लिए बनाते हैं।

'*गिलिगडु*' उपन्यास में नरेन्द्र कथानायक बाबू जसवंत सिंह को बाबू जी कहता है। जब तक नरेन्द्र की माँ जीवित थी, वह पहले उन्हें फ़ोन किया करता था। लेकिन बाबू जी की ज़िम्मेदारी तत्परता नरेन्द्र पर आते ही वह उनका अनादर करने लगा। सर्दी में उन्हें ढंग के कपड़े जूते तक नहीं दिलाए जाते, लिहाजा वे बीमार हो जाते हैं। उनका ख़याल एक अजनबी कर्नल स्वामी रखते हैं। जाहिर है यहाँ उपन्यासकार ने मानवीय सम्बन्धों के ह्रास की उस त्रासदी को उकेरा है, जो आज की आधुनिकता एवं भौतिकता की अनिवार्य परिणति बन गई है। समाज

और समय का यह शाश्वत सत्य बेशक न हो लेकिन इससे मुकरा नहीं जा सकता। आधुनिकता एवं विश्व ग्राम की अवधारणा के चलते नव-बाजारीकरण की संस्कृति ने मनुष्य में भोगवृत्ति की ललक इतनी बढ़ा दी है कि उसकी भरपाई के लिए व्यक्ति सारे सम्बन्धों को ताख पर रखकर अपने जन्मदाता तक की परवाह करना भूल गया है। चित्रा मुद्गल द्वारा सृजित पात्र नरेन्द्र ऐसे ही अधोगामी वृत्ति का पात्र है।

उपन्यास को आधुनिक काल का महाकाव्य कहा जाता है। तर्क यह है कि सामन्तीदौर से पूर्व ही महाकाव्य का जन्म हो जाने के बावजूद इसका विकास सामन्ती समाज के दौर में ही हुआ। महाकाव्य में नायक अभिजात वर्ग के होते थे। उसके कथातत्त्व की संरचना किसी पारलौकिक शक्तियों पर आधारित होती थी।[1]

किन्तु आधुनिक उपन्यास का नायक लोकोन्मुख होता है। उसके नायक समाज के किसी भी वर्ग का होता है। वह उपन्यास में अपनी स्वतंत्र सत्ता के साथ उपस्थित होता है और उसकी वैयक्तिकता जीवन एवं समाज से सन्दर्भित समस्त जटिलताओं एवं सहजताओं से जुड़ी होती है।

मैनेजर पाण्डेय का कहना है, ''उपन्यास केवल साहित्यिक रूप नहीं है, वह जीवन जगत् देखने एक विशेष दृष्टि है और मानव जीवन तथा समाज का एक विशिष्ट बोध भी। उपन्यास का इतिहास इस दृष्टि और बोध के परिवर्तन का इतिहास भी है वह केवल उपन्यास के बदलते रूपों का इतिहास नहीं है।''

---

[1] पाण्डेय, मैनेजर, *उपन्यास और लोकतंत्र*, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2013, पृ. 11

'*गिलिगडु*' मोटे तौर पर इसी दृष्टि और बोध के परिवर्तन की पड़ताल करता है। स्वातन्त्र्योत्तर काल के बीते छः दशकों में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक स्तर पर जितने तीव्र परिवर्तन हुए है उसमें कई स्थितियाँ दिग्भ्रम पैदा करती हैं। मूल्यों के ह्रास का ताँता सा लग गया है। नैतिक पतन की कोई सीमा नहीं रह गई। कई तरह के साहित्यिक विमर्श का उदय हुआ। विचार-विमर्श के दौरान यह बात स्पष्ट है कि सामाजिक घटनाओं का सम्बन्ध वहाँ की पारम्परिक पद्धतियों से होता है। समस्त घटनाएँ और परम्पराएँ, उस समय के साहित्य पर गहरा असर डालती हैं।

'*गिलिगडु*' उपन्यास आज के समाज की कहानी है। हालाँकि इसकी रचना 2002 में हुई थी, परन्तु इसमें उल्लेखित पीढ़ियों की समस्या समय के साथ विषम होती चली गई। इसके अंग्रेजी में अनूदित पाठ में भी पाठक वर्ग को इस समस्या से जोड़ा गया है। क्योंकि यह समस्या सर्वव्यापी है। इसलिए इसकी अनूदित कृति से जुड़ना कठिन कार्य नहीं होगा। अनुवाद करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि मूल कृति का स्वर एवं संदेश यथासंभव सुरक्षित रहे। अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद अधिक है। उसमें उजागर की गई सामाजिक समस्या और वृद्धों की दारुण स्थिति को उसी तरह संरक्षित रखने का प्रयत्न किया है जैसा कि मूल रचना में है।

इस उपन्यास में आज के आधुनिक समाज की संस्कृति चित्रित की गई है। आज यह देखना भी रोचक होगा कि संस्कृति की व्यापक अवधारणा में वर्तमान (आधुनिक) संस्कृति की जगह कितनी बची है। रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है - ''अनेक शताब्दियों तक एक

समाज के लोग जिस तरह खाते-पीते, रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते और राज-काज चलाते अथवा धर्म-कर्म करते हैं, उन सभी कार्यों से उनकी संस्कृति उत्पन्न होती है।''

विडम्बना यह है कि आज की पीढ़ी का भोग-विलास तथा खोखले दंभ वाला रवैया ही उसकी संस्कृति बनता जा रहा है। यदि समय रहते इस प्रवृत्ति को रोका न गया, तो आनेवाली पीढ़ी दिशाहीन होकर पतन की ओर अग्रसर हो जाएगी। लेखिका ने यही संदेश उक्त उपन्यास द्वारा दिया है। अगर समाज से संवेदनाएँ और परस्पर सरोकार समाप्त हो जाएगा तो अगले कुछ वर्षों में समाज मे केवल रोबोट रूपी मानव रह जाएँगे। अनूदित उपन्यास में अंग्रेजी भाषा-भाषी पाठक वर्ग इस सामाजिक समस्या से जुड़े यही प्रयत्न किया। साथ ही, उसका निवारण भी दिया गया। पीढ़ियों के टकराव की समस्या किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है अपितु समस्त समाज इससे जूझ रहा है।

परिशिष्ट

लेखिका का साक्षात्कार[1]

दिव्या : आपका उपन्यास *गिलिगडु* मात्र तेरह दिनों की गाथा है। आज के बदलते मूल्यों और पीढ़ियों के टकराव को आपने लगभग चौदह साल पहले इतनी कुशलता से अपने उपन्यास में उतारा था। इस उपन्यास को लिखने की पृष्ठभूमि क्या थी, क्योंकि यह कृति कई सवाल भी खड़े करती है। आपको इसकी प्रेरणा कहाँ से मिली ?

चित्रा मुद्गल : इस उपन्यास को लिखने की प्रेरणा मेरे मन में बहुत दिनों से थी। समाज की बदलती परिस्थितियों ने मनुष्य पर उपभोक्तावाद को बेहद हावी कर दिया है। आपके घर के आसपास खड़े किए जा रहे बाज़ार केवल अपने उत्पादों को बेचने के लिए ही आपके दरवाज़े पर थपकी नहीं दे रहे बल्कि वह यह भी बता-जता रहे हैं कि ऐसे उत्पाद जो उपभोग के लायक़ नहीं रहते तो उन्हें बाहर फेंक दिया जाना चाहिए। जैसे कि किसी पैकेट को कैंची से काटने

---

[1] पिछले दिनों हिन्दी की वरिष्ठ एवं प्रतिष्ठित लेखिका चित्रा मुद्गल से उनके दिल्ली स्थित आवास पर लिया गया साक्षात्कार।

के बाद उसे फेंक दिया जाता है। वैसे ही घर की देहरी के अंदर जो लोग हैं और अगर वे उपयोगी नहीं रह गए हैं तो उन्हें भी साथ रखने का कोई मतलब नहीं। मैं जब मुंबई में जन आंदोलनों का हिस्सा थी, तब मैंने देखा एक खोली में दस-दस लोग रहते थे। लेकिन उस छोटे-से घर में भी लोग मिल-जुलकर रहते थे। उस ग़रीबी में भी बुज़ुर्गों का परिवार में बहुत महत्त्व था। मैंने अपने घर पर भी कई बुज़ुर्ग देखे हैं, वे सब ठीक इसी तरह के होते थे। अब मैं देख रही हूँ कि अनाथाश्रम के साथ-साथ वृद्धाश्रम की संख्या भी उसी तेज़ी से बढ़ रही है तो मैं बड़ी परेशान हो जाती हूँ। पीढ़ियों का अंतराल तब भी था और अब भी है। लेकिन परस्पर सम्मान केवल पैसों से नहीं ख़रीदा जा सकता। जिस देश की परंपरा में ही बुज़ुर्गों का सम्मान बसा था, आज इस देश की यह दुर्दशा है। *गिलिगडु* की विचलित कर देनेवाली यह विषय-वस्तु बहुत दिनों से मेरी मन में कसक रही थी। कौटुम्बिक प्रधान देश में आज बुज़ुर्गों की ऐसी दयनीय हालत देखकर ही मुझे *गिलिगडु* लिखने की प्रेरणा मिली।

दिव्या : आप कई एन.जी.ओ. और समाज सेवा के कार्यों से जुड़ी रही हैं। क्या आपके उपन्यास *गिलिगडु* का वास्तविक जीवन से कोई सीधा सरोकार रहा है ? क्या आप अपने जीवन में बाबू जसवंत सिंह

तथा कर्नल स्वामी-जैसे चरित्रों से मिल चुकी हैं या ये पात्र काल्पनिक हैं ?

चित्रा मुद्गल : कर्नल स्वामी से तो मिलती रही हूँ मैं। वे जनकपुरी में रहते थे। तब हम लोग एन.सी.इ.आर.टी. की महिला अध्ययन इकाई में, जिसकी निदेशिका उषा नायर थीं, से जुड़े हुए थे। उस वक़्त अलग-अलग जगह पर कार्यशालाएँ हुआ करती थीं। एक बार हम नाहन गए थे। नाहन में एक फ़ोसिल्स पार्क है। वहाँ मि. राव नाम के एक वृद्ध लेकिन बड़े विद्वान व्यक्ति मिले। मुझे बूढ़ों से बहुत लगाव है। मैं मानती हूँ कि कोई भी वृद्ध अपने आप में अनुभवों की चलती-फिरती किताब है। उनके पास बैठकर उनके अनुभव लेने चाहिए। मि. राव ने एक दिन कहा भी था, हम भी कभी उन्हीं 'फॉसिल्स' की तरह देखे और ढूँढ़े जाएँगे।

मैंने उनसे पूछा, डॉ. साहब, आप भारतीय समाज शास्त्र के इतने बड़े विद्वान हैं। आप भारतीय संस्कृति और इसके वैविध्य तथा दर्शन शास्त्र की इतनी गूढ़ बातें करते हैं तो फिर आपने इतनी निराशाजनक बात क्यूँ कही। उन्होंने कहा, चित्रा जी, यह भी वही बात है। कभी हमारा अपने वाला वक़्त था। फिर हम कर्नाटक गए। उन्होंने वहाँ के पुराने घर का चित्र दिखाया। वे हर घड़ी अपने परिवार की बातें करते रहते थे। कटहल के चिप्स, अचार, इडली वग़ैरह सब बनाना सिखाते रहते थे। उन्होंने बताया कि अब वह

दिल्ली में जनकपुरी में रहते हैं। फिर वह मेरे घर आने लगे। पोंगल आदि उत्सव पर कभी केले के चिप्स, इडली मेरे घर पर ले आते। उनका टिफिन कैरियर मेरे पास आज भी पड़ा है। वे घर में बच्चों के साथ शतरंज खेलते। फिर बहुत दिनों तक उनकी कोई ख़बर नहीं आई। मुझे चिंता हुई। मैंने उन्हें बहुत फ़ोन किए। पर कोई जवाब नहीं आया।

एक दिन मैं गाड़ी लेकर उनके दिए गए पते पर जनकपुरी गई। मुझे चिंता थी कि वह बीमार तो नहीं पड़ गए। फिर मैंने सोचा, उनका तो भरा-पूरा परिवार है, जैसा कि उन्होंने बताया था। उनकी बहुएँ ही तो सारे व्यंजन बनाकर दिया करती थीं। चार बार घंटी बजाने पर उन्होंने मुश्किल से दरवाज़ा खोला। वह बेहद बीमार थे। मुझे देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए। मैंने पूछा, आप ऐसी हालत में यहाँ अकेले पड़े हैं ? उन्होंने बताया कि घर के सारे लोग बैंगलोर चले गए। इससे ज़्यादा उन्होंने कुछ नहीं बताया। उन्होंने मेरे साथ चलने के लिए भी मना कर दिया। जाती बार जब उनकी गली में खड़े पानवाले से मैं मिली तो उसने बताया -- ''भगवान ऐसी औलाद किसी को न दें जैसी कैप्टन साहब को दी है। इस बीच इनका बेटा आया तो था लेकिन उन्हें घर बेचने के लिए मजबूर कर रहा था।''

कर्नल स्वामी का परिवार और बाक़ी कहानी मेरी काल्पनिकता का हिस्सा है और मैं समझती हूँ कि उनकी कहानी समाज के सारे

वृद्धों की कहानियाँ स्वयं में समाए हुई है। मैं इस चरित्र को अपनी कृति की उपलब्धि मानती हूँ।

दिव्या : इस उपन्यास में समाज की कुरीतियों के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई गई है। फिर चाहे वह जाति-प्रथा हो या स्त्री-विमर्श की बात हो। क्या आप मानती हैं कि स्त्री का शोषण केवल निचले तबके के समाज में ही होता है?

चित्रा मुद्गल : नहीं, यह शोषण समाज के हर हिस्से में मौजूद है। हालाँकि बड़े घरों में महिलाओं को परंपराओं में बाँधकर मर्यादाओं में चलाया जाता है। लेकिन इस उपन्यास की सुनगुनिया अपनी बात कह सकती है। वह अंदर की बात प्रकट कर सकती है। उच्च वर्ग यानी सवर्ण बनाम निम्नवर्ण की लड़ाई का चलन तो कब से चला आ रहा है। सवर्ण लोग उनकी स्त्रियों से बलात्कार करते रहे हैं। लेकिन प्रेमचंद द्वारा रचित 'घास' कहानी में जहाँ चैनसिंह ठाकुर मुलिया का हाथ पकड़ते हैं, वहाँ घास काटनेवाली कहानी की नायिका अपना प्रतिरोध दर्ज करती है। वह कहती है कि आपकी जो ठाकुराइनें कोठियों में रहती हैं, अगर उनके साथ भी यही हो तो उन्हें कैसा लगेगा? क्योंकि ये लोग अपनी ठकुराइनों को बहुत ही सुरक्षित माहौल में रखते हैं। लेकिन दैहिक आकर्षण के चलते पहले जो चाहत उठती है, वह उससे वैसा ही करना चाहते हैं। यह दैहिक आकर्षण अंततः चकले में जाकर शांत हो जाता है।

ठाकुर मुलिया को बहुत पसंद करता है। इसी कारण जब वह उसे किसी अंग्रेज़ के सामने घास के गठरी के लिए गिड़गिड़ाते देखती है तो उसे तकलीफ़ होती है। वह उसकी पति की सहायता दरअसल मुलिया के लिए करते हैं। अंत में मुलिया को पता चल जाता है कि ठाकुर चैन सिंह ने उसकी मान की रक्षा की है।

सुनगुनिया का पात्र कहीं-न-कहीं मुलिया से अलग होते हुए भी जुड़ा है। मुलिया मानती है कि ठाकुरों का तो काम ही है ग़रीबों का शोषण। सुनगुनिया ठाकुर जसवंत सिंह के घर बरसों से काम कर रही है, वह उस घर को नहीं छोड़ना चाहती। ठाकुर जसवंत सिंह की पत्नी उसका बहुत ख़याल रखती है। वह जिस जाति की है, उसमें दाना-पानी देकर एक की बीवी दूसरे को दी जाने का रिवाज है। उसका जेठ सुनगुनिया के साथ बलात्कार करता है। उसे धमकाता है कि आवाज़ ऊँची करने पर वह उसे कुएँ में काट के फेंक देगा। वह भागकर ठाकुर जसवंत सिंह के घर आती है। कहानी में नेताजी भी उसकी जाति भुनाकर अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने की कोशिश करते हैं। तभी वह कहती है कि उसका शोषण करनेवाले कोई ठाकुर या ब्राह्मण नहीं, अपने ही लोग हैं। सवर्ण अवर्ण का भेद स्त्री के शोषण से बहुत गहरा ताल्लुक़ रखता है लेकिन यह बात भी सच है कि शोषक कई बार अपने ही होते हैं। दरअसल संपन्न परिवारों में परंपराओं के चलते उनकी आवाज़

दब जाती है 'घास' कहानी में स्वाभिमानी मुलिया भी अपनी आवाज़ उठाती है और *गिलिगडु* में सुनगुनिया मुखर होकर निर्णायक ढंग से बोलती और ठाकुर जसवंत सिंह के घर में रहने का निर्णय लेती है।

दिव्या : इस समस्या को समकालीन संदर्भों में पाठकों तक कैसे समझाया जा सकता है ?

चित्रा मुद्गल : 2005 में राज्यसभा ने यह निर्णय लिया था कि लड़कियों को भी पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा मिलेगा। यह उपन्यास मैंने 2002 में लिखा था। जिस तरह का माहौल आज बिगड़ा है, मैंने उसे तब महसूस कर लिया था। आज वीडियो या एसएमएस में बच्चों को मात्र हिंसा सिखाई जाती है। ऐसे में मानवीय संवेदना कहाँ से पैदा होगी? मैं पश्चिमीकरण के ख़िलाफ़ नहीं लेकिन बच्चों को भी विज्ञानसम्मत चीज़ें सीखनी चाहिए। लेकिन संवेदनाविहीन जीवन निरर्थक है। आनेवाला वक़्त बेहद चुनौतीपूर्ण है। मानवीय संवेदनाएँ का शोषण समाप्त नहीं किया जा सकता।

दिव्या : आपके अनुसार पीढ़ियों के इस टकराव के लिए कौन ज़िम्मेदार है? क्या इसका कोई समाधान है ? क्योंकि समाज में समूह नहीं, आज व्यक्ति केन्द्र में आ गया है।

चित्रा मुद्गल : इसके लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति ज़िम्मेदार है। अकादमिक शिक्षा मानव को विचारशील नहीं बना रही है। आजकल की शिक्षा

केवल लोगों को परस्पर प्रतिस्पर्धी बनाकर अधिकाधिक अंक लाने की जानकारी देती है। मेरी पोती ने मुझसे पूछा था क्या हम सौ प्रतिशत अंक नहीं ला सकते ताकि हमारा फ़लां कॉलेज में नामांकन हो जाए। यह प्रतिस्पर्धा हमारे समाज को परेशान कर रही है। अंकों की दौड़ आपकी संवेदनशीलता का कुंद करती है जबकि माँ-बाप इसी की वकालत करते हैं। इसके लिए हर तरह की सुविधा जुटाते हैं।

दिव्या : लैंगिक विमर्श पर भी आपने खुलकर लिखा है। स्त्री होने के नाते हमें भी पुरुष वर्ग की तानाशाही झेलनी पड़ती है। सामाजिक ताना-बाना बिखर न जाए इसलिए स्त्रियाँ अक्सर चुप्पी साधा लेती हैं। क्या इसमें कभी सुधार आएगा?

चित्रा मुद्गल : आजकल पुरुषों के ख़िलाफ़ बहुत कुछ हो रहा है कि स्त्रियाँ नया समाज गढ़ेंगी... वग़ैरह वग़ैरह। हमलोगों ने अपना सारा जीवन नारीवाद को दे दिया। अब ऐसा नारीवाद चल पड़ा है कि हम लोग मूर्ख साबित हो रहे हैं। वैसे आज का पुरुष भी अब बदल चुका है। उदाहरण के लिए, मेरठ ज़िले के बैंकों के सर्वे में 32% पुरुष ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी बच्चियों की पढ़ाई के लिए पैसे निकाले हैं। लेकिन यह सब करके भी कैसा समाज सामने आ रहा है। अपने वृद्ध दादा-दादी को देखने लड़कियाँ तो वृद्धाश्रम में फिर भी आती हैं मगर लड़के नहीं आते हैं। यह बेटियाँ ही हैं जो

अपना कर्तव्य निभा रही हैं। लेकिन वही लड़की जब बहू बनती है तब वह लड़के के माँ-बाप की तरफ़ देखना तक नहीं चाहती। ऐसा नारीवाद किस काम का ? नई पीढ़ी को, तुम्हारी पीढ़ी की सोचने की ज़रूरत है। अकादमिक शिक्षा में साहित्य की प्रधानता तो होनी चाहिए लेकिन संवेदना की कसौटी पर। हमने 'ठाकुर का कुआँ', 'आकाशदीप', 'हार की जीत', 'उसने कहा था'-जैसी कहानियाँ पढ़ी थीं। घोड़े वाले सुदर्शन जी की कहानी पढ़ी थी। वैसी रचनाएँ अब भी पाठ्यक्रम में होनी चाहिए। ऐसी कहानियाँ, जो उन्हें सामाजिक सद्भाव के प्रति जागरूक करें। उनमें मानवीय संवेदना का संचार करें। पैसे से क्या होता है? साहित्य को अलग-अलग कर दिया गया है।

यह बहुत अच्छी बात है कि जे.एन.यू. में भाषा और समाज विज्ञान के संकाय हैं। आप वहाँ रोबोट पैदा नहीं करते। इससे आपकी विचारशीलता बची रहती है। किसी भी जगह दो-चार दिन जाने से उसका अध्ययन नहीं किया जा सकता। स्मारक वग़ैरह देखे जा सकते हैं। मगर उसके साहित्य से उसकी संस्कृति का पता चलता है। साहित्य संस्कृति से संवाद करता है।

'इंटरनेट' ने तो भूमंडलीकरण आज किया है। लेकिन जब हम यहाँ बैठे आस्कर वाइल्ड या टॉलस्टॉय पढ़ा करते थे तो युरोप का विक्टोरियन या रूसी समाज हमारी आँखों के सामने आ जाता था।

साहित्य समाज में वैचारिक आंदोलन लाता है। अब तो प्रेम जताने के लिए भी दूसरों के लिखे शब्दों का कार्ड भेजा जाता है। हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि ऐसी शिक्षा एवं टैक्नोलॉजी आख़िर हमें कहाँ ढकेल रही है।

दिव्या : आप तो विदेशों में भी काफ़ी घूम चुकी हैं। वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों तथा भारतीय मूल्यों में आपको क्या अंतर लगा ?

चित्रा मुद्गल : मैं जब छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए केवल दो दिन के लिए लंदन गई थी। लेकिन उसके बाद भी आठ दिनों तक रुक गई थी। इन्दु शर्मा सम्मान प्राप्त करने के लिए तब मुझे वहाँ की संस्कृति जानने का मौक़ा मिला था। मैं वहाँ के कई गाँवों में जाकर किसानों से मिली। वहाँ के वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम गई। मैंने कथाकार तेजेन्द्र जी से कहा कि मुझे मैडम तुसाद के संग्रहालय में मोम के पुतले नहीं देखने। उसे तो मैं टी. वी. पर भी देख लेती हूँ। तेजेन्द्र जी सपत्नीक हमारे साथ चले। लंदन से लगभग 135 कि.मी. दूर जाकर हम किसी गाँव में पहुँचे। हमें वहाँ उनकी संस्कृति और जीवन शैली जानने का मौक़ा मिला। उनके गट्ठड़ चौकोर होते हैं। गाँव में स्पोर्ट्स क्लब और बार हैं। उनका किसान अपने काम से खुश रहता है। लेकिन हमारे यहाँ तो

सारे किसानों की ज़िन्दगी और नियति एक-सी वही रूखा... भूखा... और सूखा है।

मैं जब उनके वृद्धाश्रम गई तो वहाँ पर काफ़ी बूढ़ी स्त्रियाँ भी थीं। एक का नाम मिसेज थेम्स था। जो उस दिन बन-सँवर कर अपने पोते का इंतज़ार कर रही थीं। उस दिन उनका जन्मदिन था। उन्होंने अपने लिए कार्ड भी ख़रीद रखा था। हमारे वहाँ के लोग अब वैलेंटाइन डे को तो याद रखते हैं लेकिन वसंत पंचमी भूल चुके हैं। अब तो कार्ड की इबारत भी अपनी नहीं होती। भावनाएँ भी बाज़ार में बिकने लगी हैं। हर क़िस्म का कार्ड आज बाज़ार में उपलब्ध है। जो आदमी अपने बच्चों के लिए अपनी जवानी नहीं जीता, वह अपने पोते-पातियों में ही तो अपना बचपन खोजना है।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि संवेदनाएँ भी अब नक़ली हो गई है। यह हमारे देश में नहीं होना चाहिए। जिस तरह बूढ़ी मिसेज़ थेम्स की आँखें रास्ता निहार रही थीं, आज हमारे देश में भी वही हाल है। अमेरिका में भी यही देखा। वैसे विदेश में बूढ़े लोग स्टेट की ज़िम्मेदारी होते हैं। हमारे यहाँ के बूढ़े बच्चों की ज़िम्मेदारी है बल्कि उनकी मेहरबानी पर रहते हैं, उनकी पेंशन लेना तो वह पसंद करते हैं मगर ज़िम्मेदारी नहीं। वहाँ की संपन्न सरकार ने बूढ़ों को सब कुछ दिया है। दरअसल वहाँ के वृद्धों और यहाँ के वृद्धों में ज़्यादा अंतर नहीं। उनकी विवशता और उनके प्रति

हिकारत, यहाँ वैसी ही है। बूढ़ों को ऐसी परिस्थिति से निकालना आवश्यक है।

दिव्या : आपके उपन्यासों की भाषा आम बोलचाल की भाषा होने के साथ-साथ इसमें मुहावरों की बहुतायत रहती है। आप अपने उपन्यासों की भाषिक संरचना पर कुछ प्रकाश डालना चाहेंगी ?

चित्रा मुद्गल : मैं अवधा की रहनेवाली हूँ। इसलिए भाषा में अंतर होना स्वाभाविक है। अयोध्या की तरफ़ जाएँ तो अवधी का असर दिखता है। हम वैसे प्रतापगढ़ के हैं। वह भी अपने में बहुत बड़ी रियासत है। लेकिन मेरी कोशिश यही रहती है कि पात्र जहाँ का भी है, वहीं की भाषा बोले। जो भी पात्र संवाद करेगा, उसका अपना ढंग होगा। मराठी लोग मराठी हिंदी बोलेंगे। दक्षिण भारतीय लोग अपनी हिंदी बोलेंगे। क्षेत्रीय नेताओं की भाषा अलग होगी। सुनगुनिया की भाषा में भी कनौजिया बोली का असर दिखता है। मुहावरे मेरी भाषा में, मेरी अपनी अवधी की देन है। बैसवाड़ी (अवध) इलाक़ा क्षत्रियों का इलाक़ा है। वो संपन्न लोग रहे हैं। उनकी बोलचाल में मुहावरे सहज ही इस्तेमाल होते हैं। जैसे एक मुहावरा है -- 'पीतल की नथनी पर इतना गुमान, सोन की होती तो चलती उतान'। यह ठेठ बैसवाड़ी कहावत है। मैं बहुत सोची-समझी शब्दावली का उपयोग नहीं करती। जो भाषा की लय और अर्थ दोनों को सार्थक करे, उसी शब्दावली का प्रयोग करती

हूँ। मेरी कृति 'आवाँ' में मराठी भाषा की शब्दावली और संस्कृति की झलक मिलती है। मैनेजर पाण्डेय जी ने भी उसे सात स्तरों की भाषा कहा है। यह स्वाभाविक रूप से ही आती है।

दिव्या : लेकिन भारतीय समाज में जितनी जातियाँ और बोलियाँ हैं -- सामाजिक विषमता है, उतनी योरोपीय या अमरीकी समाज में नहीं। वहाँ की भाषाओं में उतना वैषम्य नहीं, जितना यहाँ के शोषक और शोषित समाज में... ?

चित्रा मुद्गल : पात्र जिस परिवेश का होता है, उस पर उस भाषा या बोली का प्रभाव या दबाव रहता है। दाता और पाता की भाषा में थोड़ा अंतर रहता है। जब दाता अपने वर्ग या जाति अहंकार से बाहर आता है तो वह पाता की स्थिति को बेहतर ढंग से समझने लगता है। तब दाता और पाता की भाषा के भावों का अंतर मिट जाता है। बाबू जसवंत सिंह ने स्त्रियाँ देखी है प्रेमिकाएँ देखी है। यह सब देख के जब वह सुनगुनिया से बात करते हैं तो उसके स्तर पर उतरकर उसकी समस्याओं से जुड़ते हैं। वो खुद को उससे जोड़कर कहते हैं कि तुम इस रिश्ते का नाम जो भी देना चाहती दे सकती हो। उपन्यास में एक जगह पाठ में आया है 'कुरकुरी कलफ'। एक पात्र की युवावस्था में उम्र का वही कुरकुरापन दिखता है। वह कुरकुरापन बाद में उसकी उम्र के साथ ढल जाता है। कर्नल स्वामी परिवार के लोगों को जीने का ढंग सिखाते है।

उनकी भाषा में भी भाषाई अंतर दिखेगा। अपने जीवन के ख़ालीपन को भरने के लिए वे सुखकारक भ्रम बुन लेते हैं। हर पात्र की भाषा उनकी स्थिति और परिवेश को धयान में रखकर रची जाए -- यही मेरी कोशिश रहती है।

दिव्या : आपने *गिलिगुडु* उपन्यास 'सागर सरहदी' जी को समर्पित किया है। इसका कोई विशेष कारण है ?

चित्रा मुद्गल : सागर भाई बहुत ही प्यारे बूढ़े हैं। हमलोगों ने मुंबई में इकट्ठे बहुत समय व्यतीत किया है। हमलोग शुरू से ही वामपंथी थे। उन्होंने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं। वह बहुत ही मस्त क़िस्म के इंसान हैं। उनकी फ़िल्में काफ़ी चलीं परंतु बाद में फ़िल्में न चलने पर उन पर बहुत क़र्ज़ चढ़ गया। लेकिन उनका व्यक्तित्व इतना मज़बूत है कि वह मुसीबतों से नहीं डरते। इसी तरह जिस उपन्यास में कर्नल स्वामी-जैसे पात्र हो वह उपन्यास किसी और को समर्पित हो ही नहीं सकता। सागर भाई मन के तो साफ़ हैं ही उनमें जीवन्तता भी कूट-कूट कर भरी है।

दिव्या : मैं आपसे अनुवाद विषय पर भी चर्चा करना चाहूँगी। आपने तो कई भाषाओं से हिंदी में अनुवाद किया है और आपकी कई कृतियों के अनुवाद अंग्रेज़ी समेत कई भारतीय भाषाओं में हुए हैं। आपके अनुसार साहित्य में अनुवाद कर्म की क्या महत्ता है?

चित्रा मुद्गल : मेरी मान्यता है कि अनुवाद मूल कृति का पुनर्सृजन है। वैसे तो हर कृति का अनुवाद पुनर्सृजन ही है। यहाँ मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद केवल शाब्दिक नहीं होता। अनुवादक को कृति का भावात्मक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष समझकर उसके भावों का सार्थक अनुवाद करना होता है। जैसे, कर्नल स्वामी की मानसिक स्थिति या ग्रंथि को समझे बिना उपन्यास का अनुवाद करना कठिन है। मैंने मुंबई में रहते हुए मराठी से कई अनुवाद किए।

हालाँकि मेरी तीसरी भाषा तो गुजराती ही है। लेकिन जब मैं अपनी अनूदित कहानियों को पढ़ती हूँ तो मुझे लगता है कि मैं इसे और बेहतर ढंग से कर सकती थी। कई बार लगता है कि उसे दोबारा करूँ लेकिन अब जीवन में उतना समय बचा ही कहाँ है। मैं मानती हूँ कि जितना एक लेखक एक कृति रचने में समय लगाता है, उससे ज़्यादा समय अनुवादक को लगता है। विषयवस्तु अलग होती है, भाषा अलग होती है तथा अभिव्यक्ति भी अलग होती है। लेखक ने जिस तरह अपनी बात रखी है, अनुवादक का यह प्रयास होता है कि चाहे वह चोला भले न पकड़े पर आत्मा तक ज़रूर पहुँच जाए। अनुवाद में शाब्दिकता से कहीं ज़्यादा मूल कृति के भावात्मक तत्त्व की रक्षा होनी चाहिए। पिछले चालीस वर्षों तक

अपनी ही गुजराती और मराठी से अनूदित कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि मैंने अपेक्षित न्याय नहीं किया।

मैं यह भी मानती हूँ कि जैसे अंग्रेज़ी रचनाओं में मुख्यपृष्ठ पर लेखक का नाम और नीचे अनुवादक का नाम होता है वैसे ही हिंदी कृतियों में भी होना चाहिए। उन्हें भी वही सम्मान मिलना चाहिए। उनके मानदेय में बढ़ोतरी होनी चाहिए। किसी लेखक द्वारा पात्रों की मन:स्थिति को जिस भाव और भाषा से अभिव्यक्त किया गया है, ठीक वही भाव दूसरी भाषा में उतारना कठिन है। शाब्दिक अनुवाद में प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती। अनुवाद केवल शब्दों का नहीं अपितु संवेदनाओं का भी होता है। तुम्हारे अनुवाद से भी पाठक यही अपेक्षा करेंगे।

दिव्या : साहित्य और संस्कृति को हाशिए तक पहुँचाने में, जिनका हाथ रहा है, उन्हें हम आप पहचानते तो हैं लेकिन साहित्य की सत्ता और सार्थकता पर बहस कम होती जा रही है। आपके अनुसार आज साहित्य की समाज में क्या भूमिका है ?

चित्रा मुद्गल : साहित्य की समाज में बहुत बड़ी भूमिका है। जैसा कि मैंने कहा संवेदनाओं के हनन का ज़िम्मेदार हमारा आज का पाठ्यक्रम है चाहे जितनी भी तकनीकी विज्ञान की पढ़ाई हो, उसमें साहित्य की पढ़ाई भी आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। जब हम यह मानने लगते हैं कि तकनीकी शिक्षा के छात्रों को साहित्य की

आवश्यकता नहीं, वहीं हम ग़लती करते हैं। हम इसका दुष्प्रभाव समझ नहीं पाते। हम विज्ञान पढ़कर एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक तो देश को दे सकते हैं पर समाज को अच्छा बेटा नहीं दे सकते। साहित्य हमें सिखाता है कि अपने कर्तव्यों का कैसे मानवीय संवेदना के साथ निभाना चाहिए। बड़े से बड़ा शोधकर्ता भी जब अपनी शोध की दुनिया से बाहर निकले तो वह अपने समाज एवं परिवेश से पूरी आत्मीयता से जुड़ पाए। भाषा तो हम रोबोट को भी सिखा सकते हैं परंतु भावनाओं से केवल इंसान ही जुड़ पाते हैं। तात्पर्य यह कि रोबोट न पैदा किए जाएँ। जैसी स्थिति अमेरिका-जैसे देशों में है वैसी यहाँ न हो। मेरी कहानी 'पेंटिंग अकेली है' में इसी तरह भावनाओं की कमी दिखाई गई है। उसमें भी बड़ी 'कैलकुलेटिव' माँ दिखाई गई है। ऐसी दुर्दशा हमारे देश की नहीं होनी चाहिए और इसे भावविहीन होने से साहित्य बचा सकता है। इसलिए समाज में साहित्य का होना और उसका बचा रहना बहुत आवश्यक है।

अफ़सोस की बात है कि यह भाषा की विपन्नता का दौर है। रवीन्द्रनाथ की कविता पढ़कर हम संवेदनाओं से ओत-प्रोत हो जाते हैं। केदारजी की वह कविता पंक्ति मुझे आज भी याद है -- 'धान उगेंगे, प्राण उगेंगे, उगेंगे हमारे खेत में'।

दिव्या : अगर आप अपने *गिलिगडु* उपन्यास को अगर दोबारा लिखें तो क्या ऐसा कोई महत्त्वपूर्ण अंश या प्रसंग रह गया है, जिसका आप उल्लेख करना चाहेंगी या उसे बदलना चाहेंगी ?

चित्रा मुद्गल : इस उपन्यास में मैं एक पंक्ति तक नहीं बदल सकती। पहले इस उपन्यास की 450 पृष्ठों की पांडुलिपि थी। इसका तीसरा ड्राफ़्ट तैयार कर मैंने प्रकाशन के लिए भेजा था। मैं इस उपन्यास में एक अंश में कोई भी फेर-बदल नहीं करना चाहूँगी। 'आवाँ' की बात और थी। हालाँकि उसके भी छः ड्राफ़्ट बने थे। मेरा अगला उपन्यास *नालासोपारापो.बॉक्सनं.203* चर्चा में है, पर उस पर कभी बाद में बात होगी। *गिलिगडु* भी ऐसा ही उपन्यास है, जिसका कोई पात्र-प्रसंग या कोई अंश मैं बदलना नहीं चाहूँगी। क़तई नहीं।

पाँचवाँ-अध्याय

उपसंहार

साहित्य जीवन का अभिन्न अंग है। किसी भी राष्ट्र या समाज की संस्कृति और सभ्यता की जानकारी, उसके साहित्य से प्राप्त होती है। संस्कृत के आचार्यों के अनुसार, साहित्य का अर्थ है - ''हितेन सह सहित तस्य भव:'' - अर्थात् कल्याणकारी भाव के साथ रचा हुआ। साहित्य केवल मनुष्य के मनोरंजन मात्र के लिए ही नहीं रचा जाता इसका मुख्य उद्देश्य समाज का समुचित मार्गदर्शन करना भी है। मानव के विचार उसकी समकालीन परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। वह उन्हीं विचारों को साहित्य के रूप में रचता है और फिर वही साहित्य उसकी विचारधारा को गतिशीलता प्रदान करता है। यह बात स्पष्ट है कि मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य, साहित्य से अच्छा और कोई नहीं कर सकता है।

हिंदी साहित्य का इतिहास अत्यंत विस्तृत एवं प्राचीन है। लेकिन प्राचीन साहित्य के विषय भी, फिर चाहे वह कविता हो या कोई पद्यबद्ध रचना, वह प्रमुख रूप से धर्म, नीति, उपदेश आदि पर ही केन्द्रित रही हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब हिंदी देश की राष्ट्रभाषा बनी, उस समय साहित्य की सभी विधाओं में रचनात्मक कृतियाँ सृजित हो रही थीं। साथ ही, भारतीय एवं कई विदेशी भाषाओं से हिंदी में अनुवाद कार्य हो रहे थे। हिंदी की भी कई कृतियाँ उन भाषाओं में अनूदित हो रही थीं। अनुवाद का इतिहास भी साहित्य जितना ही पुराना है। दो विभिन्न संस्कृतियों या सभ्यताओं को परस्पर जुड़ने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। आज विश्व-ग्राम 'ग्लोबल विलेज़'-जैसी अवधारणा अनुवाद के बिना संभव नहीं। कुछ विचारकों का तो यह निश्चित मत है कि साहित्य की किसी कलात्मक कृति का अनुवाद संभव नहीं है। कविता विधा का अनुवाद तो अपराध, यहाँ तक कि 'पाप' बताया गया। लेकिन अनुवादक यह 'अपराध' या 'पाप' करता रहा है।

सामान्य व्यवहार में जिसे अनुवाद माना जाता है, वह वास्तव में दूसरी कृति है। भाषा, समाज, संस्कृति और अनुवाद आपस में जुड़े हुए है। भारत-जैसे प्राचीन एवं परंपरागत देश और इससे संबद्ध बृहत्तर समाज में जहाँ भाषाओं का वैविध्य है, वहाँ संस्कृतियों का आदान-प्रदान, परस्पर समुदायों का मेलजोल एवं प्रभावात्मकता का होना स्वाभाविक है। ऐसे में अनुवाद कर्म एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति और जीवन शैली से परिचित करवाता है।

आज का समय भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण का समय है। सूचना क्रांति के युग में यह और भी अनिवार्य हो जाता है कि प्रस्तावित समाज

का उचित परिदृश्य लोगों के सामने आए। साहित्य को इतिहास और दर्शनशास्त्र से अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए माना जाता है क्योंकि साहित्य केवल प्राचीन गड़े हुए तथ्यों को ढूँढ़ने या दोहराने का नाम नहीं है। सार्थक साहित्य केवल आदर्शवादी एवं काल्पनिक स्वप्न नहीं गढ़ता, वह सही राह भी दिखाता है। सच्चे साहित्य में इन दोनों का समावेश होता है। जब ऐसी किसी साहित्यिक कृति अनूदित होती है तो वह एक संस्कृति को दूसरी संस्कृति से जोड़ने एवं जागृति लाने का कार्य करती है। इसलिए अनुवाद को सामाजिक एवं संस्कृति का सेतु मानना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सामाजिक संस्कृतियों यह अंतर जहाँ एक ओर अनुवाद यात्रा को मनोरंजक बनाता है, वहीं दूसरी ओर यह अंतर अनुवाद को चुनौतीपूर्ण भी बनाता है। विशेषकर तब, जब अनुवाद हिंदी भाषा से किसी विदेशी भाषा में हो रहा हो। आज विश्व में लगभग डेढ़ सौ से अधिक देशों में क़रीब दो-ढाई करोड़ भारतीय बसे हुए हैं। विदेशों में चालीस से अधिक देशों से अधिक विश्वविद्यालयों और सैंकड़ों स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। इस तरह भारतीय सभ्यता तथा यहाँ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष भी विदेशों तक पहुँच रहा है। इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका है और ज़िम्मेदारी भी।

अनुवाद एक भाषा के स्वर, स्वरूप और स्वभाव को दूसरी भाषा में ढालता है। एक भाषा के साहित्य का किसी दूसरी भाषा में अनुवाद

शब्दशः होना अनिवार्य नहीं है लेकिन उसमें पर्याय या प्रचलन के अभाव में कुछ शब्दों को मूल रूप में भी स्वीकार किया जाता है ताकि उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में कोई अंतर न आए। उदाहरण के लिए, रिपोर्ट का रपट होना, अलेक्ज़ेंडर का सिकंदर बनना, एरिस्टोटल का अरस्तु तथा रिक्रूट का रंगरूट में बदल जाना स्वाभाविक ही है और अब प्रचलित भी।

भारत में ऐसे कई प्रसिद्ध अनुवादक हुए हैं, जिन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को विदेशों तक पहुँचाया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, रामचन्द्र शुक्ल, प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, राजकमल चौधरी, विष्णु खरे आदि के महत्त्वपूर्ण अवदान को इस दिशा में प्रमुखता से रेखांकित किया जाता है। इन्होंने कई भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद किया है। इनके द्वारा रचित एवं विभिन्न भाषाओं से अनूदित रचनाओं ने सामाजिक चेतना लाने का कार्य किया। लेकिन यह अनुवाद प्रक्रिया तब और भी चुनौतीपूर्ण बन जाती है जब यह अनुवाद विदेशी भाषा में किया जाना हो। उसमें व्याकरणिक इकाइयों -- लोकोक्ति, मुहावरे आदि शब्द, वाक्य, पदबंध के साथ दो अलग-अलग संस्कृतियों के परस्पर अनुवाद की भी चुनौती सामने आती है। एक संस्कृति की मूल अवधारणाओं को दूसरी भाषा में प्रामाणिक तौर पर ढालना एक सृजनात्मक प्रक्रिया और महत्त्वपूर्ण उपक्रम है।

प्रस्तुत शोध में प्रस्तावनानुसार चित्रा मुद्गल द्वारा हिंदी में लिखित *गिलिगडु* उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद और भाषिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विश्लेषण किया गया है।

शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में चित्रा मुद्गल द्वारा उनके संपूर्ण हिंदी उपन्यास *गिलिगडु* का अंग्रेज़ी अनुवाद किया गया है। मूल उपन्यास की भाषा प्रवाहमयी है तथा इस भाषा में उत्तर प्रदेश की बोलियों – अवधी और बैसवाड़ी – तथा दक्षिण भारतीय संस्कृति का मिश्रण मिलता है। हालाँकि इस उपन्यास का मराठी, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो चुका है लेकिन अंग्रेज़ी अनुवाद अभी तक नहीं हुआ है। प्रयास यह किया गया है कि अंग्रेज़ी (लक्ष्य भाषा) में उक्त उपन्यास का पंक्तिशः अनुवाद प्रामाणिक एवं रोचक ढंग से किया जाए।

शोध का दूसरा अध्याय, उपन्यास *गिलिगडु* के अंग्रेज़ी अनुवाद में आनेवाली समस्याओं की चर्चा है। हिंदी के साथ इसमें अवधी और स्थानीय (बैसवाड़ी) बोली के मुहावरे और लोकोक्तियाँ सम्मिलित हैं। अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय सबसे बड़ी समस्या मूल भाषा (स्रोत भाषा – हिंदी) के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को दूसरी (लक्ष्य) भाषा में पूरी सटीकता के साथ प्रस्तुत करना था। उक्त उपन्यास में तेरह दिनों की कहानी कही गई है। इसमें यह दो बुज़ुर्गों और उनके अपने ही बच्चों द्वारा की गई

प्रताड़ना का मार्मिक विवरण है। इन संवेदनशील पात्रों के स्वभाव और संबद्ध प्रसंगों के साथ भारतीय परिवेश से जुड़ी मानसिकता का पर्याप्त ध्यान रखा गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के तीसरे अध्याय में उपन्यास का भाषिक विश्लेषण किया गया है। दो भाषाएँ (मूल एवं स्रोत भाषा), जिनका सांस्कृतिक परिवेश अलग-अलग है, उन्हें लक्ष्य भाषा में अनूदित करते हुए एक सीमा तक भाषिक सरलता बनाए रखी गई है लेकिन दो भिन्न या विषम समाजों एवं संस्कृतियों के पाठकों की भाषा को - यानी लक्ष्य भाषा अंग्रेज़ी में अनूदित करना अनुवादक के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती हो जाती है। उक्त हिंदी उपन्यास का अंग्रेज़ी में अनुवाद करते हुए इस बात का पर्याप्त ध्यान रखा गया है कि अनावश्यक शब्दजाल में फँसकर कृति संवेदना-शून्य न हो जाए। अनूदित रचना को अल्पानुवाद या अत्यानुवाद से सर्वथा सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रबंध का चौथा अध्याय उपन्यास का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण है। वर्तमान समय और समाज में लगातार बदलते मूल्यों और जीवन शैली के चलते किस प्रकार बच्चे बड़े होकर माँ-बाप को भूलते चले जाते हैं और अपना दिनचर्या में व्यस्त हो जाते हैं। यह उपन्यास उन सभी मानवीय त्रासदी का बयान है।

अंत में, सम्मानित लेखिका चित्रा मुद्गल जी से लिया गया साक्षात्कार भी संलग्न किया गया है, ताकि पाठक वर्ग उपन्यास में निहित मूल्यों एवं संवेदनाओं से परिचित हो सके। लेखिका ने स्पष्ट किया कि नई पीढ़ी संवेदन-शून्य होती जा रही है और इसी चिंता ने उन्हें यह उपन्यास लिखने के लिए विवश किया। चित्रा मुद्गल ने उक्त उपन्यास द्वारा समकालीन यथार्थ के संकट को व्यंजित किया है। इनके उपन्यासों में भूमंडलीकरण की काफ़ी चर्चा होती है। आज़ादी के बाद हमारी संस्कृति और हमारे मूल्यों में काफ़ी परिवर्तन आया है। *गिलिगडु* उपन्यास में जिन दो वृद्धों की कथा वर्णित है उनकी पत्नियाँ गुज़र चुकी है। उनसे उपजी जटिल सामाजिक परिस्थितियाँ एवं वृद्ध पीढ़ी से संबद्ध विषम समस्याएँ पाठकों के मन में गहरी वेदना एवं मानवीय संवेदना उत्पन्न करती है। धान और सुविधाएँ जुटाने के अतिमोह में आजकल की व्यस्त संतान माता-पिता को अनुपयोगी मान उनकी अवहेलना तो करते ही हैं, साथ ही उनकी हत्या तक करने से भी गुरेज़ नहीं करते।

गिलिगडु एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। यह वस्तुतः एक मलयाळम् शब्द 'किलकिल' से लिया गया है, जिसका वास्तविक अर्थ 'चिड़िया' है। यह उपन्यास एक फ़ैंटसी - कल्पना का जाल बुनता है, जिसमें एक सुख-सुविधा संपन्न संयुक्त परिवार दिखाया है। अंत में, वह फ़ैंटसी

चिड़िया के घोंसले की तरह तिनका-तिनका बिखर जाता है। आज की भूमंडली दौड़ और होड़ तथा मशीनी युग में, संयुक्त परिवार में स्वीकृत पुरानी मूल्य-मर्यादाएँ, मान्यताएँ, संवेदनाएँ एवं संस्कार आदि अवधारणाएँ अपनी महत्ता खो चुकी हैं। बढ़ती बाज़ार (बाज़ारू) संस्कृति ने मनुष्य को एक उत्पाद (प्रोडक्ट) में तब्दील कर दिया है। मनुष्य का महत्त्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसका कितना उपभोग हो सकता है।

किसी भी परिवार में, माता-पिता को अपनी संतान की सबसे ज़्यादा आवश्यकता तब होती है जब वह वृद्ध और अशक्त हो जाते हैं। लेकिन आज की संतान अपनी व्यस्त जीविका के चलते माता-पिता को बोझ समझने लगे हैं। भारतीय संस्कृति में बुढ़ापा पहले सम्मान का सूचक था। वह अभिशाप नहीं था। लेकिन बदलते समय ने उन मूल्यों को ढहा दिया है। उक्त उपन्यास की विषयवस्तु मूल्यों को हनन एवं क्षरण से जुड़ी है। चूँकि इसकी विषयवस्तु अत्यंत गंभीर है तो उसका अंग्रेज़ी अनुवाद करते हुए यह विशेष ध्यान रखा गया है कि विषय की गंभीरता शब्दजाल में फँस कर कम न हो। साथ ही, यह उपन्यास समाज का वह दोहरा चरित्र भी सामने रखता है, जिसकी व्यक्ति अपनी सुविधानुसार अनदेखी करता है। मानवीय मूल्यों की कमी को समय की कमी के स्वांग से ढकना चाहता है। अपनी आत्मकेन्द्रीयता को अपनी ज़िम्मेदारियों का नाम देता है।

चित्रा मुद्गल के पात्रें की निर्मिति भी पाठक वर्ग को आत्म विश्लेषण के लिए बाध्य कर देती है। उपन्यास के मुख्य रूप से दो पात्र हैं - बाबू जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी। बाबू जवसंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद कानपुर छोड़ दिल्ली आ जाते हैं। यहाँ वे अपने पुत्र और पुत्रवधू की अनदेखी ही नहीं झेलते, अवेहलना भी सहते हैं। उन्हें खाना तक वक़्त पर नहीं मिलता तथा बात-बात पर उनका अपमान किया जाता है। जब कि दूसरी ओर कर्नल स्वामी का परिवार आदर्श परिवार प्रतीत होता है। उनके तीनों बेटे-बहुएँ तथा पोतियाँ कात्यायनी और कुमुदनी (गिलिगडु) उनसे बहुत प्रेम आदर करते हैं। लेकिन बाद में पता चलता है कि यह आदर्श परिवार का स्वप्न कर्नल स्वामी ने अपने जीवनकाल में ही एक सुंदर भ्रम के रूप में रचा था। उनका पुत्र उन्हें मारता था। पुत्रवधू अपने संगीत गुरु के साथ भाग गई थी। उनकी पौत्रियाँ हॉस्टल में रहती थीं। इसलिए कर्नल स्वामी जीवन में पूरी तरह से अकेले रह गए थे। यहाँ तक कि उनके अंतिम दिनों में भी उनके साथ कोई नहीं होता। उनकी मृत्यु पर भी उनके बेटे नहीं आए थे। बस्ती के बच्चे, जिन्हें कर्नल स्वामी पढ़ाया करते थे, वही सब उनकी मृत्यु पर उनकी अपनी संतानों से ज़्यादा रोते-बिलखते रहे। यह दु:स्थिति हमारे आधुनिक समाज पर बहुत बड़ा प्रश्न खड़ा करती है। भारतीय सभ्यता पाश्चात्य संस्कृति की नंगी नक़ल करने में

इतनी व्यस्त हो गई है कि उसे अपनी कमज़ोर होती जड़ें भी दिखाई नहीं दे रहीं। यह जानते हुए कि मशीनी दौड़ में हम अपनी सारी मानवीय संवेदनाएँ खोते जा रहे हैं और अगर व्यक्ति ने इस ख़ालीपन से अंततः समझौता कर लिया तो कोई संबंध शेष नहीं रहेगा और न बचेगा। आज का व्यक्ति न अपने माता-पिता का है, न अपने बच्चों को अपनापन दे पा रहा है। वास्तव में स्वयं के लिए ही उसके पास समय नहीं बचा है।

बाबू जसवंत की भी ऐसी ही दयनीय स्थिति के शिकार होते हैं। न तो वह किसी से बात कर सकते हैं और न ही अपने अकेलेपन का दुःख किसी से साँझा कर सकते हैं। उक्त उपन्यास के काल्पनिक पात्रों को वास्तविक जीवन से जोड़ना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। लेखिका ने अपने साक्षात्कार में बताया है कि ये पात्र पूरी तरह काल्पनिक नहीं बल्कि वह वास्तविक जीवन में कर्नल स्वामी से मिल चुकी हैं। लेखिका स्वयं भी कई एन.जी.ओ. का हिस्सा रह चुकी हैं। उपन्यास में नोएडा, दिल्ली के सेक्टर 55 स्थित उस वृद्धाश्रम की चर्चा है, जिसमें बाबू जसवंत सिंह को उनका पुत्र नरेन्द्र भेजना चाहता है। उसी वृद्धाश्रम का ब्यौरा देते हुए लेखिका कहती है कि अगर आज आश्रम में पाँच स्थान ख़ाली होते हैं, तो पाँच हज़ार निवेदन-पत्र जमा होते हैं।

स्पष्ट है, इस उपन्यास में एक साथ कई समस्याएँ उठाई गई हैं। चाहे वह विघटित होते मूल्य हों, दलित एवं ग़रीबों से जुड़ी समस्याएँ हो, राजनीतिज्ञों द्वारा समाज को प्रलोभित कर लूटने की समस्या हो या मानवीय संबंधों का मशीनीकरण। इस उपन्यास में लेखिका ने समाज पर जो व्यंग्य और तंज कसे हैं, वे हमें विचलित कर देते हैं। व्यक्ति अब अपने सगे-संबंधियों से ज़्यादा घर के जानवरों को अहमियत देता है। टॉमी बाबू जसवंत सिंह के पुत्र नरेन्द्र के घर का पालतू जानवर है। उपन्यास में उसका भी एक महत्त्वपूर्ण किरदार है। घर में टॉमी की पसंद-नापसंद का पूरा ख़याल रखा जाता है। टी.वी. के कार्यक्रम तक उसकी मर्ज़ी के लगाए जाते हैं। बाबू जसवंत सिंह आरंभ में ही बताते हैं कि पुत्र ने दिल्ली आते ही उन्हें टॉमी को सुबह टहलाने की ज़िम्मेदारी दे दी। वे सोचते हैं कि उनके पुत्र ने उन्हें किसी काबिल तो समझा। बाबू जसवंत सिंह शुरू में टॉमी को ले जाने से परेशान होते हैं। लेकिन जब वह बीमार होते हैं और अस्पताल में दाख़िल हो जाते हैं तो उनके घर आने पर सबसे ज़्यादा ख़ुशी टॉमी को ही होती है।

मलय-निलय (बाबू जसवंत सिंह के पोते) मशीनी बच्चे से प्रतीत होते हैं। उन्हें न तो अपने घर से सरोकार है न घरवालों से। वे अपने मशीनी उपकरणों और अपने मित्रों में ख़ुश हैं। माता-पिता भी ख़ुश है कि

बच्चे अपना जन्मदिन घर मे न मना कर मित्रों के साथ मनाना चाहते हैं। वह अपने ऊपर किसी प्रकार की ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहते। बड़ों को उनकी पार्टी में आने की मनाही है।

उपन्यास के पात्रों को बड़ी ही गहनता से गढ़ा गया है। यह कहानी हमारी सामाजिक व्यवस्था पर सीधा कटाक्ष करती है। इसमें दर्शाया है कि किस प्रकार एक जानवर अपने मालिक के प्रति ईमानदार हो सकता है लेकिन वे बच्चे, जो जीवनभर अपने माता-पिता से केवल सुविधा प्राप्त करते रहे, उनके अशक्त होने पर उन्हें छोड़ देते हैं। वह केवल उसी से संबंध रखना चाहते हैं, जिनसे उनका कोई फ़ायदा हो।

उपन्यास में पारिवारिक संबंधों पर कटाक्ष तब भी दिखता है जब बाबू जसवंत सिंह कहते हैं कि नरेन्द्र ने विदेश में रह रहे मित्रें के साथ बेहतर पत्र-व्यवहार बनाया हुआ है। इससे नरेन्द्र की रिश्तों की खोखली समझ दिखाई देती है। वह नहीं जानता कि उसके अपने ही घर में रह रहे उसके पिता क्या महसूस कर रहे हैं। लेकिन कोसों दूर बैठे उसके मित्रें के साथ उसने अच्छा संबंध स्थापित किया हुआ है।

यहाँ विचारणीय विषय यह है कि यह स्वार्थी प्रवृत्ति, समाज को किस दिशा में लेकर जा रही है। आदर्शों का पालन आज की पीढ़ी को पिछड़ापन लगता है। वह भूल चुकी है कि आदर्श समाज की संरचना

मूल्यों के बिना संभव नहीं। व्यावहारिकता समाज में अनिवार्य है लेकिन मूल्यविहीन समाज कभी भी बहुत देर तक नहीं टिक सकता। यहाँ स्वामी विवेकानंद के कथन को उद्धृत किया जा सकता है : --

"That Society is greatest, where the highest truth become practical, That is my opinion and if society is that fit for the highest truth, make it so and the sooner the better".

-- Swami Vivekananda and social Change

उक्त हिंदी उपन्यास के अंग्रेज़ी अनुवाद के पीछे सबसे बड़ा उद्देश्य यही है कि इसमें अंतर्भुक्त समस्याएँ उस पाठक वर्ग या समाज के उस हिस्से तक भी पहुँचे, जो इन समस्याओं से पूरी तरह अनभिज्ञ है। ये कटु तथ्य समाज के बहुत ही संवेदनशील समस्याओं से संबंध रखते हैं। यही कारण है कि आज समाज का हर वर्ग इन समस्याओं से जूझ रहा है। लेखिका ने इस उपन्यास में केवल समस्याओं से जूझ रहे और उनसे हताश हुए कमज़ोर चरित्रों का वर्णन नहीं किया बल्कि उनके संघर्ष और प्रतिरोध की चर्चा भी की है। यह समस्याओं के समाधान भी प्रदान करता है।

यंत्रवत् बननेवाले मनुष्य में आदर एवं स्नेह की उष्मा नष्ट होने के कारण वर्तमान समय में सामूहिक चेतना का भी हनन हुआ है। उपन्यास में संकेतित समाधान समाज के पारंपरिक तरीक़ों से भिन्न है। उपन्यास के अंत में बाबू जसवंत सिंह अपनी सारी संपत्ति, अपने घर में काम कर रही

सुनगुनिया और उसके बच्चों के नाम कर देते हैं। वे अपनी मृत्यु के क्रिया-कर्म का अधिकार तक अपने पुत्र तक को नहीं देते। वे क़ानूनी तौर पर अपनी संपत्ति से नरेन्द्र को बेदख़ल कर देते हैं। समकालीन समय में आधुनिक समाज को ऐसे ही झटके की आवश्यकता है। आज का युवा वर्ग पिता की संपत्ति से को अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है लेकिन उनके प्रति ज़िम्मेवारियों से मुख मोड़ लेता है। जो भारतीय समाज बड़ों के प्रति आदर-सम्मान का परिचायक था, उसी समाज में आज वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम की संख्या लगभग बराबर होने को है। सवाल है कि बुज़ुर्गों का दायित्व किन पर है। बच्चों का, समाज का या सरकार का। हमारे समाज की परंपरागत संरचना जिस तरह की रही है उसमें माता-पिता स्वभावत: अपनी वृद्ध आयु में संतान पर निर्भर हो जाते हैं। सरकार या निजी प्रतिष्ठानों द्वारा वृद्धाश्रम तो खोल दिए गए हैं लेकिन उनमें मिलनेवाली सुविधाएँ नाम मात्र की ही होती हैं। वृद्धों के अपने अधिकारों के लिए उन्हें कचहरी के चक्कर भी काटने पड़ते हैं, जिसकी क्षमता उनके दुर्बल शरीर में नहीं होती।

निष्कर्षत: प्रस्तुत शोध-कार्य द्वारा चित्रा मुद्गल लिखित *गिलिगडु* उपन्यास के अनुवाद से अंग्रेज़ी पाठक वर्ग को उनके कथा-संसार से परिचित होने का अवसर मिलेगा। साथ ही, आज की विषम परिस्थितियों की जानकारी भी उन तक पहुँचेगी। इस उपन्यास का अंत समाज की

कड़वी सच्चाई सामने ले आता है। शोध के दूसरे भाग में उपन्यास के विश्लेषण में सामाजिक समस्याओं का मानवीय संवेदनाओं के साथ समन्वय बिठाया गया है। यह उपन्यास हमारे समाज में वृद्धों की दयनीय स्थिति को बड़ी गहराई से उजागर करता है। इस उपन्यास को अंग्रेज़ी पाठकों तक पहुँचाना इसलिए भी आवश्यक था क्योंकि गाँव के मुक़ाबले इस समस्या से आज का शहरी मनुष्य ज़्यादा ग्रस्त है। आधुनिकता की दौड़ में शहरी लोग अपनों से ही दूर हो रहे हैं। यह समस्या केवल हमारे देश तक ही सीमित नहीं है। लेखिका ने अपने साक्षात्कार में एक घटना भी सुनाई -- जब वह लंदन में एक वृद्धाश्रम में गई थी, तब वह वहाँ मिसिज़ थेम्स से मिली थी, जो वह काफ़ी वृद्ध थीं। वे अपने जन्मदिन पर सज-धज कर अपने पुत्र का इंतज़ार कर रही थीं। उस वृद्धाश्रम में सुख-सुविधाओं का कोई अभाव नहीं है। लेकिन उस वृद्धा के चेहरे पर भी वही उदासी थी जो यहाँ किसी अस्सी वर्ष की महिला, जिसको उसके बच्चों ने त्याग दिया हो, के चेहरे पर दिखती है। आज के अधिकतर माता-पिता आर्थिक रूप से तो सक्षम होते हुए भी अपनी संतान से केवल आदर सम्मान पाने की अपेक्षा रखते हैं। आज की संतान के पास पारिवारिक संवेदनाओं के लिए न तो स्थान है और न समय। इस सबका सबसे बड़ा कारण हमारी शिक्षा प्रणाली और जीवन शैली का है। हम स्वयं

अपने बच्चों को इस तरह खेल खिला रहे हैं। इस प्रकार की शिक्षा दे रहे हैं, जिसमें मानवीय संवेदनाओं और आत्मीय संबंधों तक के लिए तनिक भी जगह नहीं।

इसी तरह समकालीन समय में अन्य विषयों के मुक़ाबले मातृभाषा को ज़्यादा महत्ता नहीं दी जाती। विज्ञान के छात्रों को साहित्य की भाषा छोड़ने की छूट है। जब आधुनिक पीढ़ी से उनकी अभिव्यक्ति की भाषा ही छीन ली जाए तो उनसे संवेदनाओं की अपेक्षा करना मूर्खता होगी।

आजकल की शिक्षा पद्धति मनुष्य को विचारशील नहीं बना रही है। यह केवल मानव को परस्पर प्रतिस्पर्धी बनाकर अधिकाधिक अंक लाने की होड़ पैदा कर रही है। लेखिका ने अपने साक्षात्कार में भी पीढ़ियों के इस टकराव तथा संवेदनाओं के हनन का मुख्य कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली को ही माना है। उनके अनुसार सबसे पहले हमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रतिरूप बदलने की आवश्यकता है क्योंकि केवल शिक्षा प्रणाली ही किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है, उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा

प्रणाली को भारतीय पृष्ठभूमि, इसके नैतिक मूल्यबोध के साथ वर्तमान की चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें।

वास्तव में, समाज को जिस प्रकार की शिक्षा मिलेगी, वैसी ही उसके मूल्यों की संरचना होगी और वह मूल्य समाज के आधारभूत ढाँचे पर प्रभाव डालेंगी फिर चाहे वह पुलिस हो, प्रशासन के साधन हों या फिर राजनीति हो।

उक्त उपन्यास सब इन सभी मानवीय एवं सामाजिक पहलुओं को छूता है तथा नई पीढ़ी पर पड़ रहे प्रतिकूल प्रभाव को दर्शाता है। इसमें दो नहीं, बल्कि तीन-तीन पीढ़ियों के परस्पर टकराव को दिखाया है। मलय और निलय अपने दादा के पास कहानियाँ सुनने या उनके अनुभवों से कुछ भी सीखने में कोई दिलचस्पी नहीं लेते। उन्हें इंटरनेट से ज़्यादा जल्दी और आसानी से जवाब मिल जाते हैं। वह अपने माता-पिता से भी ज़्यादा बात नहीं करते। वहाँ नरेन्द्र को अपने पिता के लिए समय नहीं है। वस्तुतः इस होड़ा-होड़ी में हर कोई दौड़ में अकेला है। उसके पास ठहर कर इन संवेदनाओं को महसूस करने का भी समय नहीं है। उपन्यास के पात्र कर्नल स्वामी का एक विधवा महिला अणिमा दास से पत्र-व्यवहार चल रहा होता है तथा वह उससे दोबारा विवाह करने की भी सोचते हैं। भारतीय समाज का मनुष्य अपनी जड़ों से तो अलग हो ही गया है लेकिन सामाजिक

रूढ़ियों के बोझ तले अब भी दबा हुआ है। इस अकेलेपन के घेरे से निकलने के लिए परंपराओं का तोड़ना अनैतिक नहीं है। उपन्यास द्वारा इसी संदेश को लेखिका ने भी अंत में दिया है। बाबू जसवंत सिंह अपनी सारी संपत्ति उनके घर में काम कर रही महिला सुनगुनिया तथा उसके बच्चों के नाम कर देते हैं। हालाँकि यह सब सामाजिक परंपराओं के विरुद्ध है लेकिन लेखिका यह सवाल उठाती है कि क्या ख़ुशहाली के साथ रहने के बजाए अकेली मौत मरना सही है।

गिलिगडु उपन्यास हमारी सामाजिक व्यवस्था पर कई सारे प्रश्न खड़ा करता है, जो पाठकों को विचलित करने के लिए पर्याप्त है। उक्त उपन्यास की भाषा शैली प्रश्नात्मक होने के साथ-साथ व्यंग्यात्मक भी है। लेखिका समाज की व्यावहारिकता पर गहरे कटाक्ष करती है। उन्होंने प्रसंगानुसार पात्रों के संवाद से यह जताया है कि जो कुछ आज की पीढ़ी कर रही है, वह चाहे आदर्शों के अनुरूप न हो लेकिन व्यावहारिकता की दृष्टि से कहीं भी कमज़ोर नहीं है। आज समाज भावात्मकता के स्तर पर नहीं, उपयोगिता के आधार पर अपनी ज़रूरतें तय कर रहा है। जिसकी जितनी उपयोगिता है समाज में उसकी उतनी ही महत्ता है। इसलिए इस तेज़ी से बदलते और विकृत होते समय की यह आवश्यकता है कि हम अपनी पीढ़ी को पुस्तकों के ज्ञान से पहले मानवीय सरोकार और नैतिक

मूल्यों का ज्ञान दें ताकि हम देश में सफल वैज्ञानिकों के साथ-साथ अच्छे नागरिक भी पैदा करें। नहीं तो वह दिन दूर नहीं कि इस मशीनी युग में मनुष्य भी मशीन मात्र बनकर रह जाएगा।

उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए और अनुवादपरक समस्याओं को समझते और उनसे जूझते हुए, जो समाधान मिले, उन पर संबंधित अध्यायों में विचार किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

(क) प्राथमिक स्रोत (Primary Source)

आधार ग्रंथ

चित्रा मुद्गल, *'गिलिगडु'*

(ख) सहायक ग्रंथ

1. अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, *व्यावहारिक अनुवाद*, प्रतिष्ठा प्रकाशन, दिल्ली
2. अय्यर, एन. ई. विश्वनाथ, *अनुवाद कला*, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
3. कुमार, सुरेश, *अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा*, 1986, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. खरे विष्णु (सं.), *स्वप्न और यथार्थ का सृजन शिखर*, 2006 उद्भावना, दिल्ली
5. गुप्त, गार्गी, कुसुम अग्रवाल (सं.), *अनुवाद सूक्तियाँ*, भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली
6. गुप्त, आर. एस., *1400 से अधिक लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे*, 2014
7. गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, 2008, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. जैन, वृषभ प्रसाद, *अनुवाद और मशीनी अनुवाद*, 1995, सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली

9. टंडन, पूरनचंद, *हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी और अनुवाद*, 2012, किताब घर, नई दिल्ली

10. टंडन, पूरनचंद, *अनुवाद साधना*, 2007, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली

11. तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान*, 1972, शब्दकार, दिल्ली

12. तिवारी, भोलानाथ, *अनुवाद विज्ञान : सिद्धान्त एवं प्रविधि*, 2011, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली

13. तिवारी, भोलानाथ, महेन्द्र चतुर्वेदी (सं.), *काव्यानुवाद की समस्याएँ : साहित्य का अनुवाद*, 1983, शब्दकार, दिल्ली

14. तिवारी, भोलानाथ, जितेन्द्र गुप्त, *पत्रकारिता में अनुवाद की समस्याएँ*, 2010, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली

15. दूबे, महेन्द्रनाथ, *अनुवाद कार्यदक्षता, भारतीय भाषाओं की समस्याएँ*, 2006, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

16. द्विवेदी, देवीशंकर, *भाषा और भाषिकी*, 1993, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

17. द्विवेदी, राजेन्द्र, *भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश*, 1963, आत्मा राम एंड संस, दिल्ली

18. नगेन्द्र, *अनुवाद विज्ञान, सिद्धान्त एवं अनुप्रयोग*, 1993, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली

19. नगेन्द्र एवं जय नारायण कौशिक (सं.), *भारत के प्रसिद्ध अनुवादक*, 2004, कला मन्दिर, दिल्ली

20. पाण्डेय, हेमचन्द्र, *भाषा स्वरूप और संरचना*, 2015, ग्रंथलोक, नई दिल्ली

21. पालीवाल, रीता रानी, *अनुवाद प्रक्रिया*, 1982, साहित्य निधि, दिल्ली

22. भारद्वाज, मैथिली प्रसाद, *शोध प्रविधि*, 2005, आधार प्रकाशन, हरियाणा

23. रावत, चन्द्रभान (सं.), *अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग*, 1988, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

24. लियोन्स, जोन, *सैद्धान्तिक भाषा विज्ञान*, 1972, मुंशीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली
25. वनजा, के., *चित्रा मुद्गल : एक मूल्यांकन*, 2011, सामयिक बुक्स, दिल्ली
26. वाशिष्ठ, सरिता, *भाषा विज्ञान*, 2014, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली
27. शर्मा, राजमणि, *आधुनिक भाषा विज्ञान*, 1996, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
28. शर्मा, रामविलास, *भाषा और समाज*, 2002, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
29. शास्त्री, चक्रधर नौटियाल 'हंस', *अनुवाद चन्द्रिका*, 1992, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
30. शास्त्री, चक्रधर नौटियाल 'हंस', *बृहद् अनुवाद चन्द्रिका*, 1961, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
31. शास्त्री, सूर्यदेव, *मनोभाषिकी*, 1973, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
32. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, *भाषा शिक्षण*, 1992, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
33. सिंह, सूरजभान, *अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद व्याकरण*, 2006, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
34. सिंहल, सुरेश, पूरनचन्द टण्डन, अशोक भाटिया (सं.), *अनुवाद अनुभूति और अनुभव*, 2006, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली

अंग्रेजी पुस्तकें

1. Angelelli, Claudia V, Brian James Baer, *Researching Translation And Interpreting*, 2015, Routledge, Newyork, USA.
2. Aneta Pavlenko (Ed.), *Multilingualism, second Language Learning And Gender*, 2001, De Gruyter. Newyork.
3. Baker, Mona, *In Other Words, A Coursebook On Translation*, 2002, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
4. Bassnet, Susan, Andre' Lefevere, *Constructing Cultures, Essays On Literary Translation*,1998, Cromwell press,UK
5. Bassnet, Sussan, *Reflections On Translation*, 2011, Multilingual Matters, Toronto.

6. Bassnett, Sussan, Andre Lafevere (Ed.), *Translation, History And Culture*, 1996, Cassell Willington House, London
7. Bassnet, Susan, *Translation Studies*, Fourth Edition, 2004, Routledge, Taylor And Francis Group, London, And Newyork.
8. Bellos, David, *Is That A Fish In Your Ear, Translation And Meaning Of Everything*, 2011, Farrar, Straus and Giroux, US.
9. Barnstone, Willis, *The Poetics Of Translation-History, Theory, Practice,* 1993, Yale University Press, New Haven, USA.
10. Bermann, Sandra And Michael Wood, *Nation, Language And Ethics Of Translation*, 2005, Princeton University Press, UK.
11. Boase, Jean, Beier, *Stylistic Approaches To Translation,* 2006, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
12. Boase, Jeane, Beier, *A Critical Introduction Of Translation Studies*, 2011, Continuum International Publishing Group, London.
13. Catford, J C, *A Linguistic Theory of Translation,* London, OUP, 1965
14. Catford, J.C, *A Linguistic Theory Of Translation*, Oxford University Press, UK
15. Chesterman, Andrew, Emma Wagner, *Can Theory Help Translators? - A Dialogue between Ivory Tower And Wordface*, 2002, St Jerome Publ, UK.
16. Chomsky, Naom, *Aspects Of The Theory Of Syntax*, 2014, MIT Press, Cambridge, London.
17. Chomsky, Naom, *Language And The Mind*, 2006, Cambridge University Press, London.
18. Cook, Vivian, David Singleton, *Key Topics In Second Language Acquisition*, 2014, MM Textbooks, Toronto.
19. Das, Bijay Kumar, *A Handbook Of Translation Studies*, 2013, Atlantic Publishers(p), Delhi
20. Delabastita, Dirk (Ed.), *A Topical Bibliography of Translation And Interpreation*, Benjamin Publishing House, Amsterdam.

21. Deutscher, Guy, *The Unfolding Of Language*, 2005, Arrow Books, UK.
22. Edwards, John, *Multilingualism, Understanding Lingual Diversity*, 2012, Bloomsbury Publishing, London.
23. Erikson, H Erik, *Identity : Youth And Crisis*, 1994, WW Norton, USA.
24. Esch, Edith Harding, Philip Riley, *The Bilingual Family*, 2003, Cambridge University, London.
25. Frosh, S, *Identity Crisis*,1991, Macmillan, USA
26. Gargesh, Ravinder & K. K. Goswami (eds), *Translation & Interpreting* (Reader & workbook) New Delhi, orint Lonhman, 2007
27. Gambier Yuves, Luc Van Doorslaer (Ed.), *Handbook Of Translation Studies*, John Benjamins publishing Company, Amsterdam
28. Gentzler, Edwin, *Contemporary Translation Theories*, 2003, Cromwell Press, UK.
29. Gillies, Andrew, *Note Taking For Consecutive Interpreting-A Short Course*, 2014, Rotledge, Newyork, USA.
30. Grossman, Edith, *Why Translation Matters*, 2010, Yale University press, New Haven, USA.
31. Guest Editor : Delabastita, Dirk, *The Translator, Studies in Intercultural Communication*, 1996, Routledge, Newyork.
32. Hatim, Basil, Ian Mason, *The Translator Or Communicator*, 2005, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
33. Hornberger, Nancy H, Sandra Lee Mckay (Ed.), *Sociolinguistics And Language Education*, 2010, Multilingual Matters, Toronto.
34. House, Juliane, *Translation Quality Assessment, Past and Present*, 2015, Rotledge, New york
35. Jones, Rodrick, *Conference Interpreting Explained*, 2014, Routlodge, USA

36. Kenney, Françoise Massardier, Brian James Baer, Maria Tymoczko (Ed.), *Translators Writing, Writing Translators*, 2016, Kent State University Press.
37. Lakoff, George, Mark Johnson, *Metaphors We Live By*, 2008, University Of Chicago Press, Chicago.
38. Lawrence, Venuti, *The Translator's Invisibility, A History Of Translation*, Second Edition, 2008, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
39. Lefevere, Andre, *Translation, Rewriting And The Manipulation Of Literary Fame*, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
40. Maher, John C, *Multilingualism : A Very Short Introduction,* Oxford University Press, London.
41. Malmkjer, Kristen, Kevin Windle, *The Oxford Handbook Of Translation Studies, Oxford Handbook In Linguistics*, 2011, OUP, Oxford.
42. Marais, Kobus, *Translation theory And Development Studies : A Complexity Theory Approach*, 2014, Routledge, Newyork.
43. Munday, Jeremy, *Introducing Translation Studies, Theories And Applications*, 2013, Routledge, Newyork, USA
44. Munday, Jeremy, *Introducing Translation Studies, Theories And Application,* Third Edition, 2012, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
45. Myers, Caro-Scotten, *Multiple Voices, An Introduction To Bilingualism*, 2005, Blackwell Publishing, USA
46. M Lakshmi, *Problems of Translations,* Bookhind Corporation, Hyderabad, 1993
47. Naida, E. A. & C. Taper, *The theory & practice of translation Leiden*, EJ Brell, 1979
48. Newmark, Peter, *Approaches To Translation, Language Teaching Methodology Series*,1st Edition,1980, Pergamon, UK.
49. Newmark, Peter, *A Textbook Of Translation*, 1998, Prentice Hall International, UK.

50. Palumbo, Giuseppe, *Key Terms In Translation Studies*, 2009, Continuum International publishing group, London.
51. Pradhan, Raam Prakash, *Glimpses Of Comparative Literature,* 2011, Atlantic Publishers And Distributors Ltd.
52. Pym, Anthony, *Exploring Translation Theories*, 2014, Routledge, Newyork
53. Quah, C.K, *Translation And Technology*, 2006, Palgrave Macmillan, USA.
54. Quest for Identity, *Grappling for the Literary self in the diaspara, 'Hindi, discourse & writing,* Vol. Issue 2
55. Rosman, Abraham, Paula G. Rubel, *Translating Cultures*, 2003, Bloomsbury publishing, London.
56. R Raghunath Rao, *The Art of translation,* Bookhind Corporation, Hyderabad, 1990
57. Salama, Myriam-Carr (Ed.), *Translation And Interpreting Conflict*, 2007, Rodopi, USA
58. Saldanha, Sharon O' Brien, *Research Methodology In Translation Studies,* 2014, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
59. Shastri, Prastima Dave, *Fundamental Aspects Of Translation*, 2012, PHI Learning Private Limited. Delhi
60. Snell, Mary, Hornby, *Translation Studies, An Integrated Approach,*1995, John Benjamin Publishing, Amsterdam.
61. Swvory, Theodre, *The Art of Translation,* London, Cape, 1957
62. Tokuhama, Tracy, Espinosa, *Living Languages, Multilingualism Across The Lifespan*, Greenwood Publishing Group, Westport, USA.
63. Toury, Gideon, *Descriptive Translation Studies And Beyond*, 2012, John Benjamin's Publishing, AmsterDam.
64. Toury, Gideon, *Descriptive Translation And Beyond*, 2012, John Benjamin Publishing, Amsterdam.
65. Trevidi, H. C., *Problems in Linguistic & Cultural Translation,* Ahmedabad, New Order Book Depot, 1971

66. Tyelenev, Sergey, *Translation And Society*, 2014, Routledge, Newyork, USA.
67. Taylor, Valerie, Bouladon, *Conference Interpreting, Principles And Practice*, 2007, Book Surge, South Carolina, US.
68. Venuti, Lawrence, *The Scandals Of Translation, Towards An Ethics Of Difference*, 2002, Routledge, London And Newyork.
69. Venuti, Lawrence, *Translation Changes Everything, Theory And Practice,* 2013, Routledge Taylor And Francis Group, London And Newyork.
70. Williams, Jenny, *Theories Of Translation*, 2013, The Palgrave Macmillan, UK.

सहायक शब्दकोश

1. *अंग्रेजी हिन्दी कोश,* फादर कामिल बुल्के, एस. जे. एस., चान्द एण्ड कंपनी लिमिटेड, 2011
2. *Oxford Hindi English Dictionary*, Edited by R.S.M.C. Ciegor, Oxford University Press, March, 1983
3. *हिन्दी शब्दकोश,* डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, 2009
4. *Oxford Hindi English Dictionary,* Edited by S. K. Verma & R. N. Sahai, Oxford University Press, March, 2003, Nov. 2009
5. *Concise Oxford English Dictionary,* Edited by Cathesini Soanes & Angus Stevenson, Eleventh editions (Revised in 2006)
6. *Oxford Hindi English Dictionary,* Edited by Dr. Suresh Kumar & Dr. Ramnath Sahai, 20th empression, July 2011

Websites

1. https://scotbuzz.blogspot.in/2017/05/blog-post_21.html
2. https://www.youtube.com/watch?v=oAURl0UYdvY
3. https://www.youtube.com/watch?v=ndztW0RYBgA
4. https://www.youtube.com/watch?v=RfDzFkwNYXE
5. https://www.youtube.com/watch?v=JzIuL3tX0xY
6. https://www.youtube.com/watch?v=oAURl0UYdvY

7. https://www.youtube.com/watch?v=F--2PFnvkig
8. https://www.youtube.com/watch?v=_SDYqdx5s4M
9. https://www.youtube.com/watch?v=_ah65Y7FbZA
10. https://www.youtube.com/watch?v=hCUMVN2r4OE
11. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
12. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
13. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
14. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
15. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
16. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
17. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
18. https://www.youtube.com/watch?v=WisPFiWgBLE
19. https://www.youtube.com/watch?v=erRbzFuOiQs
20. https://www.youtube.com/watch?v=tNAo7Ocbzu0
21. https://www.youtube.com/watch?v=stlpQeYxguM
22. https://www.youtube.com/watch?v=cBZ1m1cAd6I
23. https://www.youtube.com/watch?v=qFJeWlkkF64
24. http://www.guide2india.org/basic-rules-of-translation-in-hindi-tips/
25. https://www.youtube.com/watch?v=hMhcgmr136Q
26. https://www.youtube.com/watch?v=1VNwPM8whSc
27. http://nirvachan.blogspot.in/2017/03/blog-post_6.html
28. http://prayaslt.blogspot.in/2009/11/blog-post_8550.html
29. http://www.swargvibha.in/aalekh/all_aalekh/anuwaad_vidya.html
30. https://translate.google.com
31. http://en.bab.la/dictionary/hindi-english/
32. https://en.wikipedia.org/wiki/Chitra_Mudgal
33. http://dict.hinkhoj.com/
34. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/29852
35. http://pustak.org/books/bookdetails/5656